मासिक

# शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 07 | जनवरी, 2023 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

**डॉ. बी.डी. कल्ला**
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

# मेरा भारत महान्

नयी आशा और विश्वास के साथ हम वर्ष 2023 में प्रवेश कर चुके हैं। यकीनन इस वर्ष नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। यदि आप मेहनत, उत्साह के साथ आगे बढ़ेंगे तो अपने जीवन में निखार ला सकते हैं। वर्तमान को सुधार कर ही भविष्य को संवारा जा सकता है। इसका आगाज़ आज से ही नहीं अभी से करना होगा। जो परिवर्तन आप समाज में देखना चाहते हैं उस बदलाव की शुरूआत स्वयं से करें। जीवन के अनुभव हमें सीख भी देते हैं। हम आगे क्यों नहीं बढ़ पा रहे हैं इसका कारण हमें ढूंढना होगा। विद्यार्थियों को मेरी सलाह है कि आप कर्मशील बने। आप जो सहायता बाहर से चाहते हो यह सब आप के भीतर ही विद्यमान है। अनुशासित दिनचर्या और उद्यम से एक नया मुकाम हासिल कर सकते है। नये साल में छोटे-छोटे संकल्प लेवें।

उपनिषदों में कहा गया है कि व्यक्ति के भीतर ज्ञान का अथाह भण्डार है। शिक्षा के माध्यम से उसको जाग्रत किया जाना है ताकि विद्यार्थी अपने मनोभावों को प्रकट कर सके। शिक्षक साथियों से आशा है कि वे अपनी बुद्धि का समुचित उपयोग करना सीखें। उनमें यह विश्वास भरें कि वे कामयाब होंगे व आपके सानिध्य में आने वाले बच्चों को पारिवारिक माहौल देवें। प्रतिभा को दिशा चाहिए मुकाम तो वह स्वयं ही हासिल कर लेगी।

भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। इसकी प्रस्तावना में कहा गया है कि हम भारत के लोग भारत को प्रभुत्व सम्पन्न, धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक राज्य बनाने एवं समस्त नागरिकों को सामाजिक न्याय, विश्वास, धर्म की स्वतंत्रता, राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता बनाये रखने के लिए प्रतिबद्ध है। ये मात्र शब्द नहीं अपितु संविधान की अंतरात्मा की आवाज है। भारत का मान सम्मान और हिफाजत ही हमारा कर्तव्य है। हमें केवल इतना करना होगा कि एक शिक्षक के रूप में हमारा जो भी कर्तव्य है उसका निर्वहन ईमानदारी से करे। कर्म करने का अधिकार हमारा है। आज हम समस्त भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की छाया में सलामत है। हमें निश्चय करना है कि हमारी प्रत्येक सोच एवं कार्य राष्ट्र के लिए समर्पित होगा। गणतंत्र दिवस के मंगल पर्व पर समस्त शिक्षा परिवार को बहुत-बहुत बधाई, भारत माँ के स्वतंत्रता सेनानियों एवं जाबाज शहीदों को कोटि-कोटि नमन।

स्वामी विवेकानन्द का साहित्य मैंने पढ़ा है उनकी बातों में दैवीय शक्ति का तेज महसूस होता है। एक पुस्तक में उन्होंने लिखा है, अनेक बार हम किसी की बात सुनते है, सुनने के बाद हम इस पर विचार करते है तो महसूस होता है कि ये बाते तो मेरे मन में एवं ध्यान में भी थी, लेकिन शायद हम उसको प्रकट नहीं कर पाये। इसी प्रकार बालक भी स्वयं को ही शिक्षा देता है शिक्षक तो उसके विचार प्रकट करने में सहायता करता है, मुझे यह बात बहुत उपयोगी और सटीक लगी। वास्तव में बालक के भीतर असीमित ज्ञान एवं जिज्ञासाएं है। उसकी एकाग्रता बढ़ाने के प्रयास किये जाएं यही शिक्षा की सार्थकता है।

बुलाकी दास कल्ला

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

**"भारत का मान सम्मान और हिफाजत ही हमारा कर्तव्य है। हमें केवल इतना करना होगा कि एक शिक्षक के रूप में हमारा जो भी कर्तव्य है उसका निर्वहन ईमानदारी से करे। कर्म करने का अधिकार मात्र हमारा है। आज हम समस्त भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की छाया में सलामत है। हमें निश्चय करना है कि हमारी प्रत्येक सोच एवं कार्य राष्ट्र के लिए समर्पित होगा।"**

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

**जाहिदा खान**
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

# सारे जहा से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा...

भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को स्वीकृत हुआ था। स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल चक्रवती राजगोपालाचारी ने भारत को संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में शपथ दिलवायी। भारत के गणतंत्र रूप में स्थापित होने के साथ ही अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों की साधना फलीभूत हो गयी।

लोकतांत्रिक देश के नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी है कि संविधान में दिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने अधिकारों की भी रक्षा करें। स्वाधीनता सेनानियों के देश के प्रति जज्बे की स्मृतियों को जीवंत रखने, स्वतंत्रता संग्राम में उनके बेमिसाल योगदान एवं देश की संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने का यह उत्सव विभिन्न स्तरों पर मनाया जाता है। इकबाल का शेर है- 'युनान, मिस्र, रोमा सब मिट गए जहाँ से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।' अतः राष्ट्र का मान सम्मान ही प्रत्येक नागरिक का मान सम्मान है।

नववर्ष हमें यह अवसर देता है कि हम बीते साल पर नजर डालकर देखें कि हमने क्या खोया और क्या पाया। हमने क्या गलतियाँ की। नये साल में नये लक्ष्यों को इसी सोच के साथ तय करने का मौका भी है। यदि हम अपने या समाज के लिए कुछ नया करना चाहते हैं तो हमारे पास एक विचार, एक नया नजरिया भी होना चाहिए। हम सब अपने-अपने कार्यक्षेत्र में बेहतरीन करना चाहते हैं और हमने विज्ञान एवं तकनीकी, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध भी की है, लेकिन हमारी प्राथमिकता रहनी चाहिए कि हमारे विद्यार्थी स्वानुशासन एवं नैतिकता को अपना साध्य बनाकर बेहतरीन इंसान बने। हमें नये साल में ऐसा लक्ष्य निर्धारित करना होगा जिससे समाज में समरसता बनी रहे। मुझे विश्वास है कि इस प्रयास से जीवन और समाज खूबसूरत बन जाएगा।

शहीद दिवस हमें याद दिलाता है बापू के साथ-साथ स्वतंत्रता सेनानियों की शहादत की और साथ ही उन जांबाजों की, जो आजादी के बाद देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए शहीद हुए। इन शहीदों को अंतरात्मा की गहराइयों से कोटि-कोटि नमन।

**'दिल से न निकलेगी मर कर भी वतन की उलफत**
**मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वफा आएगी'**

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि हमें हृदय और मन को उन्नत करने वाले कार्य करने होंगे। हमें सदैव स्वयं से पूछना होगा कि क्या हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन भलीभांति कर रहे हैं। स्वविवेक से, निर्मल भावना से किए गए कर्त्तव्य ही हमें संस्कारित कर जीवन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आओ संकल्प लें कि राष्ट्र को ज्ञान और विकास के पथ पर ले जाने के लिए नवीन प्रयास कर उज्ज्वल मार्ग का सृजन करेंगे।

शुभकामनाओं सहित.....

Zahida
(जाहिदा खान)

**"नये साल में नये लक्ष्यों को इसी सोच के साथ तय करने का मौका भी है। यदि हम अपने या समाज के लिए कुछ नया करना चाहते हैं तो हमारे पास एक विचार, एक नया नजरिया भी होना चाहिए। हम सब अपने-अपने कार्यक्षेत्र में बेहतरीन करना चाहते हैं और हमने विज्ञान एवं तकनीकी, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध भी की है, लेकिन हमारी प्राथमिकता रहनी चाहिए कि हमारे विद्यार्थी स्वानुशासन एवं नैतिकता को अपना साध्य बनाकर बेहतरीन इंसान बने।"**

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

**गौरव अग्रवाल**
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

# नूतन वर्ष में नूतन संकल्प

तीन सौ पैंसठ दिनों की मखमली पंखुड़ियों से खिले सुन्दर पुष्प गुच्छरूपी नववर्ष (ईस्वी सन् 2023) एवं साथ ही राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन की समस्त शैक्षिक समुदाय को हार्दिक बधाई! RKSMBK के अन्तर्गत मैने कुछ विद्यालयों का अवलोकन किया उनके अनुभव आपसे साझा करना चाहूँगा। RKSMBK एक ब्रिज प्रोग्राम है। यह पाठ्यक्रम पूर्ण करने का प्रोग्राम नहीं। हमारा उद्देश्य होना चाहिए कोई बच्चा पीछे नहीं छूटे, अब रटना नहीं समझना होगा। हमें एप द्वारा जानकारी प्राप्त कर वे कान्सेप्ट छात्रों को तब तक वापस पढ़ाने चाहिए जब तक बच्चों को समझ नहीं आ जाए। सभी अध्यापक एप को अपडेट करें। इसको ट्रैक करने का सबसे आसान माध्यम है, जो टीचर्स एप का उपयोग कर रहे हैं, उनको एप पर सिक्के मिलेंगे। यह जिला रैंकिग का पार्ट भी है। RKSMBK आकलन-2 के 1.40 करोड़ ओ.सी.आर. के परिणाम पर 06 जनवरी को प्रत्येक पीईईओ एवं विद्यालय स्तर पर स्टाफ मींटिग कर अभिभावकों के साथ प्रगति रिपोर्ट की चर्चा करेंगे।

शिक्षक ज्ञानरूपी मकरंद को और अधिक सुरभित करते हुए आधुनिक तकनीक के सामंजस्य से शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण एवं उन्नयनकारी बनाने का लक्ष्य निर्धारित करें। नूतन चिंतन, नूतन स्वप्न, नूतन संकल्पों को साकार करने का प्रकृति द्वारा दिया गया वर्ष 2023 सुन्दर उपहार है, जिसके माध्यम से अनन्त सृष्टि की व्यापकता में फैले ज्ञान, चेतना और विकास के पुंजों का उपयोग सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय हेतु करते हुए शिक्षा को किताबी ज्ञान के जामे से बाहर निकाल कर अत्याधुनिक तकनीक से जोड़ा जाए ऐसी मेरी आकांक्षा है....

इसी माह 12 जनवरी को आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न के युग दृष्टा स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती को विद्यालयों में युवा दिवस और करियर डे के रूप में मनाया जायेगा। आवश्यकता है, विद्यार्थियों में छुपे नरेन्द्र को विवेकानन्द के रूप में तलाशने व तराशने वाले शिक्षकों की, जो स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु की भूमिका में सामने आए। युवाओं के इस देश का कालान्तर में चिर यौवन आपके कुशल मार्गदर्शन से ही बना रह सकता है।

आध्यात्मिक शक्ति से सराबोर मकर सक्रांति का पर्व हमारे जीवन में प्यार, पुण्य, उपासना और संगठन के संस्कार प्रदान करता है। तिल रूपी अनेक विचार धाराओं से सम्पृक्त राष्ट्र को गुड़ रूपी एकता के भाव के साथ बांधना राष्ट्र-प्रेम की भावना को जाग्रत करता है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के अप्रतिम योद्धा, संघर्ष के सिपाही, कुशल संगठक और भारतीय आजादी के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती 23 जनवरी को इस प्रकार मनायें कि प्रत्येक विद्यार्थी के मन मस्तिष्क में इस वीर की गाथा हो। उनके प्रति यही हमारे सच्चे श्रद्धा सुमन होंगे।

वाक्देवी वीणापाणि का जन्मोत्सव बसन्त पंचमी के रूप में 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस के साथ सम्पूर्ण राष्ट्र समस्त विद्या मन्दिरों में मनायेगा। इस अवसर पर ज्ञानवान एवं विवेकवान नागरिक बनाने में अहर्निशरत रहने का हम सभी संकल्प लें।

वैश्विक मंच पर सर्वोच्च गणों का तन्त्र भारत... अपना देश, अपना संविधान, अपने अधिकार के गौरवमयी मयी दर्प से युक्त होने पर हमारा दायित्व और अधिक बढ़ जाता है, ऐसे में आवश्यकता है कि हम आत्मावलोकन करें और गण के समुन्नत जीवन के लिए सार्थक प्रयास करते हुए भारतीय गणतन्त्र के पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाएँ।

गौरवमयी जयन्ती एवं पुण्यतिथि को मनाना अपनी प्रेरणादायी विरासत को स्मृतियों में संजोये रखने का आधार है। इसी क्रम में कृतज्ञ राष्ट्र 28 जनवरी को पंजाब केसरी लालालाजपत राय की जयन्ती पर उन्हें स्मरण करता है। 11 जनवरी लाल बहादुर शास्त्री और 30 जनवरी महात्मा गांधी की पुण्यतिथि है। सत्य, अहिंसा के पथ पर चलते हुए हम राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को श्रेष्ठतम रूप से सम्पादित करने का संकल्प लें। महापुरुषों का जीवन हमारा पाथेय बने। हम उनके विचारों और कार्यों को अपने आचरण में अपनाकर सही अर्थों में प्रेरणा पाएँ। इसी विश्वास के साथ.....

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

**"RKSMBK एक ब्रिज प्रोग्राम है। यह पाठ्यक्रम पूर्ण करने का प्रोग्राम नहीं। हमारा उद्देश्य होना चाहिए कोई बच्चा पीछे नहीं छूटे, अब रटना नहीं समझना होगा। हमें एप के द्वारा जानकारी प्राप्त कर वे कान्सेप्ट छात्रों को तब तक वापस पढ़ाने चाहिए जब तक बच्चों को समझना आ जाए। सभी अध्यापक एप को अपडेट करें। इसको ट्रैक करने का सबसे आसान माध्यम है, जो टीचर्स एप का उपयोग कर रहे हैं, उनको एप पर सिक्के मिलेंगे। यह जिला रैंकिग का पार्ट भी है। RKSMBK आकलन-2 के 1.40 करोड़ ओ.सी.आर. के परिणाम पर 06 जनवरी को प्रत्येक पीईईओ एवं विद्यालय स्तर पर स्टाफ मींटिग कर अभिभावकों के साथ प्रगति रिपोर्ट की चर्चा करेगें।"**

Rajasthan Education Department

मासिक
# शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 07 | पौष–माघ २०७९ | जनवरी, 2023

प्रधान सम्पादक
**गौरव अग्रवाल**

वरिष्ठ सम्पादक
**सुनीता चावला**

सम्पादक
**डॉ. संगीता पुरोहित**

सह सम्पादक
**सीताराम गोदारा**

प्रकाशन सहायक
**सुचित्रा चौधरी**
**रमेश व्यास**

मूल्य : ₹ 20

**वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें**

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

**पत्र व्यवहार हेतु पता**
**वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका**
**माध्यमिक शिक्षा राजस्थान**
**बीकानेर–334 011**
दूरभाष : 0151–2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

## इस अंक में

**अपनों से अपनी बात**
- मेरा भारत महान् 2

**मेरा संदेश**
- सारे जहा से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा 3

**दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ**
- नूतन वर्ष नूतन संकल्प 4

**आलेख**
- स्वामी विवेकानन्द 7
  **राजीव अरोड़ा**
- कॅरियर-डे की उपयोगिता 10
  **डॉ. कृष्णा आचार्य**
- राज्यस्तरीय कला उत्सव समारोह–2022 13
  **अनिल कुमार सांखला**
- राजकीय विद्यालयों में अभिनव प्रयोग है श्री गाँधी बाल निकेतन की इंटरेक्टिव बोर्ड परियोजना 14
  **कुलदीप व्यास**
- अभिवादन का मनोविज्ञान 15
  **शंकर लाल माहेश्वरी**
- शिक्षा में मूल्यपरकता की आवश्यकता 16
  **सुधा रानी तैलंग**
- हारिये न हिम्मत बिसारिये ना राम 19
  **ओमप्रकाश सारस्वत**
- ज़ाजम कहाँ गई? 20
  **इन्द्रा**
- परीक्षा परिणाम उन्नयन 21
  **गोविन्द नारायण शर्मा**
- स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल करौली 33
  **राजेश कुमार मीना**
- विद्यार्थियों का मित्र बना रीडिंग लर्निंग कॉर्नर 34
  **दिनकर विजयवर्गीय**
- राज्य में गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा उन्नयन हेतु संचालित शैक्षणिक कार्यक्रम 35
  **डॉ. डी.डी. गौतम**
- सफलता की कहानी : शिक्षक की जुबानी 39
  **इमरान खान**
- Learn Ganganagar-A Programme of Enhance English Communication Skills 41
  **Arvinder Singh**
- Teaching English in Rajasthan 42
  Kana Ram Sharma

**रपट**
- 55वीं राज्यस्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2022–23 12
  **शक्ति प्रसन्न बीठू**

**स्तम्भ**
- पाठकों की बात 6
- आदेश–परिपत्र : जनवरी, 2023 23–31
- शिविरा पञ्चाङ्ग : जनवरी, 2023 32
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 31
- Telecast Schedule of pm e-vidya 32
- बाल शिविरा 44–45
- शाला प्रांगण से 47–48
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 49–50
  **राकेश कस्वां**
- हमारे भामाशाह 50
- ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट 51

**पुस्तक समीक्षा** 46
- अदीठ डोर
  कहानीकार : श्री राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर'
  समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

**विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary**

## ▼ चिन्तन

**आज की अमृत वाणी न्यायार्जितस्य द्रव्यस्य बोद्धव्यौ द्वावतिक्रमौ।**
**अपात्रे प्रतिपत्तिश्च पात्रे चाप्रतिपादनम् ।।**

नैतिक तरीके से न्याय से और मेहनत से कमाए धन के दो दुरूपयोग कहे गए हैं- पहला कुपात्र को दान देना और दूसरा- सुपात्र को जरूरत पड़ने पर भी दान न देना।कहने का तात्पर्य यह है कि कुपात्र को कभी दान नहीं देना चाहिए क्योंकि वह उस धन का दुरुपयोग करेगा और सुपात्र को दान नहीं देने से उसकी जरूरतें अपूर्ण रह जाती हैं। अतः सुपात्र को दान अवश्य देना चाहिए।

## पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका दिसम्बर 2022 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। इस अंक का मुखावरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक व सुंदर लगा। गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के चित्र जिनका 29 दिसम्बर को जन्म दिवस था तथा 'वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' का प्रमाण पत्र तथा प्रमाण पत्र प्राप्त करते माननीय शिक्षा मंत्री जी एवं शिक्षा सचिव का चित्र इस अंक की गरिमा में वृद्धि करता है। राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम वास्तव में शिक्षा विभाग राजस्थान का अभिनव प्रयोग है। बधाई। 'अपनों से अपनी बात' में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने गीता का संदेश देकर शिक्षा विभाग व पाठकों में नवीन ऊर्जा संचरित की है। शिक्षक को अपना शिक्षण कर्म के साथ जोड़ना उचित ही है। कक्षा में समूह बनाकर विद्यार्थियों में शिक्षण के प्रति रुचि जाग्रत करने व विद्यार्थी को प्रतिदिन 2-3 पृष्ठ सुंदर लिखने की प्रेरणा नवाचार से कम नहीं है। 'दिशा कल्प : मेरा पृष्ठ' में निदेशक महोदय ने राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम (RKSMBK) अंतर्गत महान उपलब्धि प्राप्त करना राजस्थान शिक्षा विभाग को गौरवान्वित करता है। शिक्षक की निष्ठा से ही यह हो पाया है। आभार व साधुवाद। सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी महाराज पर सुनीता चावला का आलेख गुरु गोविंद सिंह जी के त्याग, समर्पण, देशभक्ति, राष्ट्रसेवा का बखूबी सटीक वर्णन उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। राष्ट्र व धर्म की रक्षा हेतु अपने चारों पुत्रों का बलिदान हमें देश के लिए न्योछावर होने की प्रेरणा प्रदान करता है। 'राष्ट्रीय सेवा योजना-2022' रिपोर्ट में डॉ. संगीता पुरोहित ने राष्ट्रीय सेवा योजना के बढ़ते कदम व राष्ट्र व समाज सेवा में स्वयंसेवकों के योगदान का वर्णन कर राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य का सार्थक वर्णन किया है। राष्ट्रीय सेवा योजना का इतिहास बहुत ही ज्ञानवर्धक है। नवम्बर 2022 माह में डॉ. संगीता पुरोहित ने 'शतरंज की ओर बढ़ते कदमों' में इसके इतिहास व इस खेल की सार्थकता व रुचि का बहुत उपयोगी वर्णन कर पाठकों में इस खेल के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया है। 'मानवाधिकार दिवस' पर प्रकाशित विशेष आलेख मानव को प्राप्त विशेषाधिकारों तथा विशेषकर 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार निःसंदेह मानवाधिकारों में एक मील का पत्थर साबित होगा। आज आवश्यकता है हर व्यक्ति को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने की। शैक्षिक नवाचारों की एक विद्यालयी पत्रिका 'उड़ान' का विद्यालय विकास में योगदान व सम्पूर्ण जानकारी से भरपूर उड़ान जैसी पत्रिका प्रत्येक विद्यालय में छपनी ही चाहिए। 'प्राथमिक स्तर पर हिन्दी सीखने के प्रतिफल' निबंध में बच्चों को हिन्दी की उपयोगिता तथा शिक्षा के माध्यम से ज्ञानवृद्धि तथा इसे समझने व कौशल वृद्धि में हिन्दी का योगदान अतुलनीय हो सकता है। इसके अलावा एड्स-एक विस्फोटक रहस्य, उजियारा देश को आगे बढ़ाएं, समावेशी शिक्षा, समन्वित शाला दर्पण आदि आलेख स्तरीय व ज्ञानवर्धक हैं। इसके अतिरिक्त सभी स्थाई स्तंभ यथा पाठकों की बात, आदेश परिपत्र, बाल शिविरा, शाला प्रांगण से, हमारे भामाशाह, पुस्तक समीक्षा जानकारीपूर्ण लगे। शिविरा को नया रूप देने पर पूरी टीम को बधाई व साधुवाद।

**रामजीलाल घोड़ेला, बीकानेर**

- प्रति माह के प्रथम सप्ताह में शिविरा पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है। आद्यान्त अध्ययन आनंददायी होता है। दिसंबर मास की पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर विश्व मानवाधिकार दिवस संकेतांक व गुरु गोविंद सिंह का दिव्य छायाचित्र बहुत ही आकर्षक लगा। राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन द्वारा प्रमाण-पत्र एक बड़ी उपलब्धि हैं। माननीय शिक्षा मंत्री, माननीया शिक्षा राज्य मंत्री व निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा का बहुत बहुत आभार एवं अभिनंदन कि राजस्थान विद्यालयी शिक्षा में नवाचार व शैक्षिक गुणवत्ता हेतु निरंतर अभिनव प्रयास जारी हैं। इस माह से अंक में वरिष्ठ संपादक सुनीता चावला का आलेख गुरु गोविंद सिंह बहुत ज्ञानवर्धक था। प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल भी प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करवाने वाले शिक्षक साथियों हेतु बहुत उपयोगी एवं जानकारियों से भरा था। डॉ.तमन्ना तालरेजा का दक्षता आधारित आकलन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग एवम समावेशी शिक्षा (मुकेश पालीवाल) भी ज्ञानवर्धक थे। शेष सभी रचनाकार जिन्होंने ने विविध विषयों पर कलम चलाई उनको भी हार्दिक साधुवाद। स्थायी स्तंभों यथा; आदेश-परिपत्र, शिविरा पचांग, विद्यालय प्रसारण, बाल शिविरा, शाला प्रांगण से व भामाशाह प्रेरित करने वाले थे। सम्पूर्ण संपादक मंडल का बहुत-बहुत साधुवाद। शिविरा पत्रिका यूँ ही प्रगति करती रहे। नए वर्ष की शुभकामनाएँ!

**कमल जांगिड़, जालोर**

Rajasthan Education Department

## राष्ट्रीय युवा दिवस

# स्वामी विवेकानन्द

❒ राजीव अरोड़ा

प्रतिवर्ष 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद का जन्मदिवस 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। स्वामी विवेकानंद के जन्मदिवस पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाया जाने वाला 'राष्ट्रीय युवा दिवस' हमें उनके प्रेरणादायी जीवन एवं शिक्षाओं के साथ-साथ विश्व बंधुत्व एवं सर्व धर्म समन्वय पर गरिमामय योगदान का भी स्मरण कराता है। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 ई. सोमवार को कलकत्ता में हुआ था। स्वामी विवेकानंद के पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था। उनके पिता कलकत्ता हाईकोर्ट के सुप्रसिद्ध वकील थे। वे अंग्रेजी तथा फारसी भाषा के विद्वान, बुद्धिमान और संगीत प्रेमी थे। वे धीर-गंभीर स्वभाव, विद्यानुराग, तेजस्विता, उदारता एवं स्वाधीन विचारों के धनी थे। इसके साथ ही वे गरीबों के प्रति सदा सहानुभूतिशील, दान में मुक्तहस्त एवं अनेक सगे-सम्बन्धियों के प्रतिपालक थे। स्वामी विवेकानंद की माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। वे विशेष बुद्धिमती, कार्यकुशल एवं भक्तिपरायण थी। वे देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धापरायण थी और भक्तिपूर्वक पूजा-अर्चना किया करती थी। वे सभी दृष्टियों से एक आदर्श हिन्दू नारी थी। माता-पिता ने पुत्र का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त रखा। आगे चलकर किसी समय स्वामी विवेकानंद जी ने अपनी माता के प्रति श्रद्धापूर्वक विचार व्यक्त करते हुए कहा था- ''यदि मेरे जीवन और कार्य के पीछे चिरन्तन रूप से प्रेरणा देने वाली कोई शक्ति रही है तो वह है मेरी माँ, उसके लिए मैं अपनी माता का चिरऋणी हूँ।''

बालक नरेन्द्र की स्मृति बहुत ही तेज थी। जब बालक नरेन्द्र मैट्रोपोलियन स्कूल में अध्ययनरत थे, तब कक्षा में पढ़ा रहे अध्यापक ने देखा कि उनके पढ़ाते समय कुछ छात्रों का ध्यान अध्ययन की तरफ न होकर व्यर्थ की बातों में था। यह देखकर अध्यापक ने सब छात्रों को खड़े होने को कहा। सभी छात्र खड़े हो गए। अध्यापक ने उन सबसे पूछा- ''क्या तुम में से कोई भी छात्र बता सकता है, मैं क्या पढ़ा रहा था?'' नरेन्द्र ने अध्यापक द्वारा पढ़ाया गया पाठ ज्यों-का-त्यों सुना दिया। इस पर अध्यापक ने नरेन्द्र को तो बैठा दिया और दूसरे छात्रों को न बता सकने के कारण उन्हें खड़ा रहने की सजा दी। यह देखकर नरेन्द्र भी उठकर अपने साथी छात्रों के साथ खड़ा हो गया। यह देखकर अध्यापक ने नरेन्द्र से कहा- ''मैंने तुम्हें खड़ा होने को नहीं कहा नरेन्द्र, तुम बैठ सकते हो।'' नरेन्द्र ने कहा- ''नहीं श्रीमान्, मुझे खड़ा ही रहना चाहिए क्योंकि गलती इनकी नहीं बल्कि मेरी है। बातें तो मैं कर रहा था। ये सब तो सिर्फ सुन रहे थे।'' नरेन्द्र की अपूर्व स्मरण-शक्ति और सत्य-निष्ठा को देखकर अध्यापक महोदय अवाक् रह गए और उन्होंने सभी छात्रों को बैठा दिया। बालक नरेन्द्र अत्यंत विलक्षण शक्तियों से युक्त था, जो उसकी आयु के अन्य बालकों में नहीं पाई जाती थी। उनकी गणना विद्यालय के असाधारण विद्यार्थी के रूप में होती थी। उनका पठन-अध्ययन विलक्षण था, ग्रहण क्षमता अपूर्व थी तथा आयु की तुलना में विवेक शक्ति भी अद्भुत थी। इसके अतिरिक्त बाल्यकाल से ही उनमें अध्यात्म और ध्यान के प्रति विशेष लगाव दिखाई देता था।

एक बार विद्यालय में किसी शिक्षक की सेवानिवृति के अवसर पर सभा का आयोजन किया गया। उस कार्यक्रम की अध्यक्षता तत्कालीन ख्याति प्राप्त वक्ता और शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी करने वाले थे। अवकाश ग्रहण करने वाले शिक्षक के अभिनन्दन स्वरूप जब कोई छात्र नहीं बोला तो आखिर नरेन्द्र ने निश्चय किया कि वही मंच पर जाकर बोलेगा। इस पर नरेन्द्र ने शुद्ध अंग्रेजी में आधे घंटे तक बड़ा ही मनोरम और हृदयस्पर्शी भाषण दिया। नरेन्द्र ने जब अपना भाषण समाप्त किया तो चारों ओर उसकी प्रशंसा ध्वनि गूँजने लगी। स्वयं सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने नरेन्द्र की पीठ ठोककर उसे शाबासी दी और उसके भाषण की प्रशंसा की।

बालक नरेन्द्र की व्यायाम, खेलकूद और संगीत में विशेष रुचि थी। बचपन से ही व्यायाम और तैराकी के प्रति लगाव ने नरेन्द्र के शरीर को अत्यन्त सुडौल और मजबूत बना दिया था। नरेन्द्र का सुगठित देवदार वृक्ष की भाँति सीधा शरीर, गंभीर और मधुर स्वर सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। उनका सुन्दर, तेज और दीप्त मुखमंडल, चौड़ा और विशाल ललाट, बड़ी चमकदार आँखें, किसी को भी अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त थे।

नरेन्द्र ने हाई स्कूल प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की और जीवन के अठ्ठारहवें वर्ष में जनरल एसेम्बली इंस्टीट्यूट जिसे अब स्काटिस चर्च कॉलेज के नाम से जाना जाता है, में एफ.ए. के लिए प्रवेश लिया जहाँ उन्होंने पूर्वी तथा पश्चिमी दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन किया था। दर्शन के अध्ययन में रुचि होने से जब भी कोई साधु-संन्यासी उन्हें मिलता तो वे उनसे पूछते- ''क्या आपने कभी ईश्वर को देखा है? उनसे साक्षात्कार किया है? ''कोई भी साधु-संन्यासी उनके इस प्रश्न का उत्तर सीधे 'हाँ' या 'नहीं' में न दे पाता था और शास्त्रों के उद्धरण और तर्कों द्वारा इस प्रश्न के उत्तर की सार्थकता सिद्ध करना चाहता था, परन्तु नरेन्द्र को उनके उत्तर से संतोष नहीं होता था। नरेन्द्र विचारशील और चिंतनशील युवक थे। उनकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण होने के कारण वे केवल विश्वास के बल पर किसी भी बात को स्वीकार नहीं करते थे। वे किसी भी बात पर विश्वास करने से पूर्व उसका प्रमाण चाहते थे। ईश्वर विषयक समस्या उन्हें सता रही थी। ईश्वर की खोज में वे जगह-जगह भटकते रहे, परन्तु उन्हें कहीं भी समाधान नहीं मिला। नरेन्द्र 18 वर्ष की आयु तक विश्व के अनेक वेदों एवं दर्शनों का भारतीय दर्शन के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर चुके थे, किन्तु उन्हें अपनी शंका के समाधान करने वाले गुरु की प्राप्ति नहीं हुई थी। एक बार नरेन्द्र के पड़ोस में रहने वाले सुरेन्द्रनाथ मित्र ने अपने घर पर एक छोटे से भक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें श्रीरामकृष्ण एवं उनके भक्तों को सादर आमंत्रित किया गया। उस कार्यक्रम में भजन गाने के लिए अच्छे गायक की आवश्यकता थी। सुरेन्द्रनाथ अपने पड़ोस में रहने वाले विश्वनाथ दत्त के पुत्र नरेन्द्रनाथ को बुला लाए। नरेन्द्र ने इस कार्यक्रम में गायन किया। नरेन्द्र का गायन सुनकर श्रीरामकृष्ण भावसमाधि में मग्न हो गए। गायन समाप्त होने के पश्चात् श्रीरामकृष्ण ने नरेन्द्र को एक अलग कक्ष में ले जाकर कहा- ''मैं तुम्हें पहचान गया हूँ। तुम्हारे लिए मेरी आत्मा कितनी

Rajasthan Education Department

तरसती रही। तुम बड़े निर्दयी हो। अब तो तुम्हें मेरे साथ दक्षिणेश्वर चलना ही होगा।'' शिष्टाचारवश नरेन्द्र ने भी दक्षिणेश्वर आने का वचन दिया। यह नरेन्द्र की श्री रामकृष्ण से प्रथम भेंट थी, जो उनके लिए वरदान साबित हुई।

एक दिन नरेन्द्र अपने तीन-चार मित्रों के साथ दक्षिणेश्वर पहुँचे और उन्होंने वहाँ श्री रामकृष्ण से बात की। नरेन्द्र ने उनसे पूछा- 'क्या आपने ईश्वर को देखा है?' श्री रामकृष्ण ने आशा भरे शब्दों में कहा- ''हाँ जी, उन्हें देखा जा सकता है। मैं जैसे तुम्हें देख रहा हूँ, तुमसे बातचीत कर रहा हूँ ठीक वैसे ही- बल्कि उससे भी अधिक स्पष्ट रूप से ईश्वर देखा जा सकता है, उससे वार्तालाप किया जा सकता है किन्तु भला उन्हें चाहता कौन है? लोग स्त्री, पुत्रों के शोक में घड़ों आँसू बहाते हैं, सम्पत्ति, धन-दौलत के लिए कितना रोते हैं, पर भला बताओ तो, भगवान्-लाभ नहीं हुआ इसलिए कौन रोता है ? उनकी प्राप्ति नहीं हुई इस दु:ख से यदि कोई रो-रोकर उन्हें पुकारे, तो उसे वे निश्चित रूप से दर्शन देते हैं। ''श्री रामकृष्ण के शब्दों ने नरेन्द्र के अंत:करण को छू लिया। इतना निर्भीक उत्तर देने की क्षमता श्री रामकृष्ण में ही थी। इस प्रकार महाविद्यालय के बुद्धिवादी छात्र नरेन्द्र को श्री रामकृष्ण के रूप में उद्धारकर्ता सद्गुरु की प्राप्ति हुई।

एक दिन नरेन्द्र अपने मित्र के साथ अद्वैत का मजाक उड़ा रहे थे। उनके साथ के कक्ष में श्री रामकृष्ण ने नरेन्द्र की सारी बातें सुनी और बच्चों की सी हँसी भी। वे अपने कक्ष से निकलकर वहाँ आ गए जहाँ नरेन्द्र अपने मित्र के साथ बैठे हुए थे। वहाँ आते ही उन्होंने नरेन्द्र की पीठ पर अपना दाहिना पाँव रख दिया। इसके बाद जो हुआ उसका वर्णन नरेन्द्रनाथ ने इस प्रकार किया है- ''अकस्मात् मेरे निकट आकर उन्होंने अपने दाहिने पाँव से मुझे छू दिया। उस स्पर्श से क्षणभर में ही मुझे एक अपूर्व अनुभूति हुई। आँखें खुली ही थी-देखा, दीवार समेत कमरे की सारी चीजें बड़े वेग से घूमती हुई न जाने कहाँ विलीन होती जा रही हैं और समग्र विश्व के साथ मेरा मैं-पन भी मानो एक सर्वग्रासी महाशून्य में विलीन हो जाने के लिए वेग से बढ़ता जा रहा है। मैं अत्यन्त भय से विह्वल हो गया। मन में आया-मैं-पन का नाश ही तो मृत्यु है! वही मृत्यु सामने, अति निकट आ पहुँची है! अपने को संभाल न सकने के कारण मैं चिल्ला उठा-अजी, आपने मेरा यह क्या कर डाला? मेरे माता-पिता जो है। ''वे अद्भुत 'पागल' मेरी यह बात सुन ठहाके मारकर हँस उठे। फिर अपने हाथ से मेरी छाती का स्पर्श कर कहने लगे- ''तो अब रहने दे। एक ही बार में आवश्यक नहीं, समय पर होगा।'' और आश्चर्य की बात यह कि उनके इस प्रकार स्पर्श कर वह बात कहते ही मेरी वह अपूर्व अनुभूति एकदम चली गयी। मैं होश में आया और कमरे के भीतर-बाहर की सभी वस्तुएँ मुझे फिर पहले ही जैसी स्थित दिखाई देने लगी।'' एक पल के भीतर ही यह सारी घटना घट गयी। वास्तव में नरेन्द्रनाथ जिस ब्रह्म ज्ञान में प्रतिष्ठित होना चाहते थे, वही ब्रह्म ज्ञान श्री रामकृष्ण ने उस दिन उन्हें देना चाहा था, परन्तु उनके ध्यान में आया कि अभी उसका समय नहीं आया है। इस घटना के बाद नरेन्द्रनाथ दक्षिणेश्वर में श्री रामकृष्ण के पास कई बार गए।

वर्ष 1884 में बी.ए. की परीक्षा के बाद एक दिन अचानक उनके पिता का हृदयगति रुकने से देहान्त हो गया। वैसे तो नरेन्द्रनाथ के पिता श्री विश्वनाथ दत्त नगर के गणमान्य वकीलों में से एक थे, परन्तु उदार खर्च से भावी आवश्यकताओं के लिए कुछ भी जमा नहीं कर पाए थे बल्कि कुछ ऋण ही छोड़ कर गए थे। उनकी आकस्मिक मृत्यु ने नरेन्द्रनाथ को बड़ी विपद्जनक स्थिति में ला खड़ा किया। ऐसे समय में मित्र, सगे-सम्बन्धी सभी कन्नी काटने लगे। अत्यन्त लाड़-प्यार से पले भाई-बहनों को दोनों वक्त की रोटी भी मयस्सर न होते देख नरेन्द्रनाथ का हृदय हाहाकार कर उठा। कहते हैं कि विपत्ति कभी भी अकेली नहीं आती। नरेन्द्रनाथ के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उन्हीं के वंश के एक दूर के रिश्तेदार ने उनका पैतृक मकान हड़पने के लिए कानूनी दावा दायर कर दिया। मुकदमा चला और उच्च न्यायालय का निर्णय नरेन्द्रनाथ के पक्ष में हुआ और उनका पैतृक मकान जाते-जाते रह गया। नरेन्द्रनाथ के अनेक प्रयत्न करने पर भी जब सांसारिक दु:ख-कष्टों से छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं हुआ तो उन्होंने अत्यंत कातर स्वर में अपनी मनोव्यथा श्री रामकृष्ण जी के सामने रखी और याचनायुक्त स्वर में बोले- 'गुरुदेव, मेरी माता और मेरे भाई-बहनों के भरण-पोषण की उचित व्यवस्था के लिए आप माँ काली से प्रार्थना कर दीजिए।' श्री रामकृष्ण ने हँसते हुए कहा- 'तू स्वयं क्यों नहीं मांग लेता। सच्ची निष्ठा से किए गए अनुरोध को माँ कभी नहीं ठुकराएगी। 'साहस कर नरेन्द्रनाथ माँ काली की मूर्ति के सामने खड़ा हुआ लेकिन माँगने के नाम पर उसने माँ से केवल ज्ञान माँगा, वैराग्य माँगा और भक्ति मांगी। श्री रामकृष्ण ने तीन बार उन्हें अन्दर भेजा और तीनों बार वे वही ज्ञान, वैराग्य और भक्ति माँग कर लौट आए। वे वहाँ सारा दु:ख भूल गए। नरेन्द्र को माँ काली की महिमा समझ में आ गई। नरेन्द्रनाथ का सांसारिक अभाव कुछ अंश में दूर हुआ और उन्हें श्री ईश्वरचंद विद्यासागर के स्कूल में अध्यापन का कार्य मिल गया, जिससे परिवार की दशा सुधरने लगी।

इसके बाद नरेन्द्र लगभग पाँच वर्षों तक श्री रामकृष्ण के सान्निध्य में रहे। इन पाँच वर्षों में श्री रामकृष्ण ने नरेन्द्र को योग्य शिक्षा देते हुए अपने कार्य के लिए गठित किया। तीव्र साधना के बल पर नरेन्द्र नाथ ने अल्प समय में ही श्री रामकृष्ण से दिव्य ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वे उनके संदेशवाहक बन गए थे। सम्पूर्ण मानव-जाति की सेवा को अपना लक्ष्य बनाकर नरेन्द्रनाथ ने संन्यास की दीक्षा ली और वे स्वामी विवेकानंद कहलाने लगे।

श्री रामकृष्ण नरेन्द्रनाथ को अपना योग्य उत्तराधिकारी मानते थे, यह बात उन्होंने कभी नहीं छिपाई। मृत्यु से तीन-चार दिन पूर्व श्री रामकृष्ण ने नरेन्द्रनाथ को अपने करीब बुलाया और कहा- ''आज मैंने अपना सब कुछ तुझे दे दिया है। अब मैं निरा कंगाल हूँ। मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। इस शक्ति से तू संसार का बहुत-सा हित कर सकेगा और तेरी इस शक्ति का कभी भी ह्रास न होगा।'' 15 अगस्त 1886 को तीन बार उच्च स्वर में अपनी इष्ट देवी माँ काली का नाम उच्चारण करते हुए श्री रामकृष्ण समाधि में मग्न हो गए। यह उनकी अंतिम समाधि थी-महासमाधि।

श्री रामकृष्ण द्वारा प्रदत्त कार्य को निभाने का बड़ा भारी उत्तरदायित्व उन पर आ गया था। यह कार्य आसान नहीं था, तथापि विवेकानंद में उसे निभाने की पूर्ण क्षमता थी। वे बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक बल से परिपूर्ण थे।

श्री रामकृष्ण की मृत्युपरान्त विवेकानंद ने कलकत्ता के उत्तर में बाराह नगर में आश्रम में

Rajsthan Education Department

रहते हुए दो वर्षों तक धार्मिक ग्रन्थों और दर्शन-शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। 25 वर्ष की आयु में वे देशभ्रमण करने लगे। श्री रामकृष्ण का संदेश दूर-दूर तक पहुँचाने के उद्देश्य से उन्होंने भारत के उत्तर छोर से दक्षिण छोर तक-हिमालय से कन्याकुमारी तक-पैदल यात्रा की। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अपने देश की समस्याओं का प्रत्यक्ष अनुभव किया और उसके उद्धारार्थ योजना बनाई।

सितम्बर, 1893 में अमेरिका के शिकागो नगर में एक सर्वधर्म सम्मेलन होने वाला था। उस सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य विश्व के विभिन्न धर्मों के विविध मतों का समन्वय करना था। विवेकानंद ने विदेशों में भारतीय संस्कृति का बिगुल बजाने की इच्छा से अमेरिका के शिकागो शहर में होने वाले सर्वधर्म सम्मेलन में जाने का निश्चय किया। स्वामी विवेकानंद 31 मई, 1893 के दिन मातृभूमि को छोड़कर शिकागो के लिए रवाना हो गए। हालांकि स्वामी विवेकानंद को सम्मेलन समिति की ओर से प्रतिनिधि के रूप में औपचारिक निमंत्रण नहीं मिला था। वहाँ हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे.ए.राइट, जो स्वामी विवेकानंद के प्रभावशाली व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित थे, उन्होंने अपने प्रयत्नों से 'सर्वधर्म परिषद्' में उन्हें 'हिन्दू धर्म' का प्रतिनिधित्व करने की अनुमति दिलवा दी।

11 सितम्बर, 1893 का दिन इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया, जब स्वामी विवेकानंद ने 30 वर्ष की आयु में भारत के वेदान्त धर्म को विजयी बनवा कर सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया था। स्वामी विवेकानंद का ऐसे विशाल जनसमूह के समक्ष भाषण देने का प्रथम अवसर था। उन्होंने अपने भाषण के प्रारम्भ में 'अमेरिकावासी बहनों और भाईयों' -इन शब्दों से उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित किया। उनके इस सम्बोधन ने सभी श्रोताओं के साथ-साथ समस्त पाश्चात्य जगत् को भी मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने भाषण में सर्वधर्म समन्वय और विश्वबंधुत्व की भावना पर जोर दिया। इसके बाद तो अमेरिका में स्वामी विवेकानंद जी के व्याख्यानों ने तहलका मचा दिया। स्वामी विवेकानंद ने दो वर्षों तक अमेरिका में रहकर व्याख्यानादि के माध्यम से पाश्चात्य जनता को भारतीय धर्म और दर्शनशास्त्र की शिक्षा दी। इसके पश्चात् वे इंग्लैण्ड गए, जहाँ उन्होंने अंग्रेज जाति को भारतीय संस्कृति का बोध कराया। यहाँ स्वामी विवेकानंद का परिचय मार्गरेट नोबल से हुआ, जिसने स्वामी विवेकानंद जी से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म की दीक्षा प्राप्त की तथा शेष जीवन भारत में व्यतीत किया। मार्गरेट नोबल 'भगिनी निवेदिता' के नाम से प्रसिद्ध हुई। स्वामी विवेकानंद वहाँ से स्विट्जरलैण्ड, इटली, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों में भी गए।

15 जनवरी, 1897 को गोधूलि के समय स्वामी विवेकानंद अपने शिष्यों सहित श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो बन्दरगाह के तट पर पहुँचे। उनका स्वागत -सत्कार करने के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र उठ खड़ा हुआ। स्वामी जी की चरण-धूलि लेने के लिए लोग आतुर हो उठे। इसके पश्चात् स्वामी विवेकानंद जी जहाँ-जहाँ गए, वहाँ-वहाँ उनके स्वागत के लिए जनसमुदाय उमड़ पड़ा। उन्होंने देश की युवा शक्ति को 'उत्तिष्ठत, जागृत, प्राप्य वरान्निबोधत' अर्थात् उठो! जागो और जब तक ध्येय की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक रूको मत! का संदेश दिया। उन्होंने देशवासियों के हृदय में यह बात प्रविष्ट करा दी कि भारत की पवित्र धरा में जन्म लेना परम सौभाग्य की बात है।

स्वामी विवेकानंद जी ने धर्म-प्रचार और मानव-सेवा के लिए रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य एवं आदर्श था- 'आत्मनो मोक्षार्थ जगद्विताय च' अर्थात् अपनी मुक्ति एवं संसार का कल्याण। आत्मज्ञान तथा मानव-सेवा के लिए समर्पित यह संस्था सम्पूर्ण जाति को स्वामी विवेकानंद जी की महान देन है। इस संस्था का मुख्यालय कलकत्ता के गंगा के पश्चिम में बैलूर में स्थित है। 'सम्पूर्ण मानव-जाति की सेवा' का उद्देश्य लेकर, स्वामी विवेकानंद जी द्वारा स्थापित हुई यह संस्था, बैलूर मठ के संन्यासियों द्वारा संचालित होकर आज 'रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन' के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी है।

4 जुलाई, 1902 को स्वामी जी की मन: स्थिति सामान्य नहीं थी। वे अत्यन्त तड़के उठकर लगभग 5 बजे श्री ठाकुर जी के मन्दिर में गए और अंदर से समस्त दरवाजे-खिड़कियाँ बंद कर ध्यान से बैठे। लगभग 3 घंटे गंभीर ध्यान पश्चात् उन्होंने दरवाजे खोले और माँ काली का एक भजन गाते हुए बरामदे में टहलने लगे। दोपहर में भोजन करने तथा कुछ विश्राम पश्चात् लगभग 1 बजे से उन्होंने ब्रह्मचारियों को अनवरत् 3 घंटे तक संस्कृत व्याकरण पढ़ाया। इसके बाद वे स्वामी प्रेमानंद के साथ घूमने बाहर निकले।

संध्या आरती के समय स्वामी जी अपने दो मंजिले स्थित कमरे में थे। अपनी सेवा के लिए नियुक्त ब्रह्मचारी से अपने कक्ष की समस्त खिड़कियाँ खुलवाने के पश्चात् वे एक खिड़की के पास खड़े होकर दक्षिणेश्वर की ओर अनवरत् देखते रहे। उन्हें सामने गंगा के उस पार दिखाई दे रहा था काशीपुर का वही श्मशान -घाट , जहाँ पर श्रीरामकृष्ण देव के शरीर का दहन किया गया था। तत्पश्चात् वे पद्मासनस्थ होकर ध्यान करने लगे। यह उनके जीवन की अंतिम पूजा थी।

रात्रि के 9 बजे उन्हें थकावट महसूस हुई। उनके हाथ-पैरों में हल्का-सा कंपन हुआ। इसके बाद एक-दो लम्बी गहरी साँसें लेने के पश्चात् वे चिर निद्रा में लीन हो गए। इस समाचार से मठ में हाहाकार मच गया। मठ में उपस्थित समस्त शिष्य रोने लगे, मानों वे सब अनाथ हो गए हों।

आयु के चालीस वर्ष पूर्ण होने से पूर्व ही स्वामी विवेकानंद जी महासमाधि में लीन हो गये। अल्पकाल में वे जो अनमोल विचार दे गए, वे देश की आत्मा को जाग्रत करने में समर्थ थे।

दूसरे दिन शोभायात्रा के साथ उनका पार्थिव शरीर बैलूर मठ के ही दक्षिण-पूर्वी किनारे पर अवस्थित बिल्व-वृक्ष के पास लाया गया। गंगा तट पर उन्हीं के द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर चंदन आदि काष्ठ से चिता सजायी गयी और वेद-पाठ एवं मंत्रोच्चार आदि के बीच उनकी अंत्येष्टि-क्रिया समाप्त हुई।

स्वामी विवेकानंद जी आज हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन उनके विचार हम सभी के लिए निरंतर प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के उपलक्ष्य में स्वामी विवेकानंद जी जैसे महान् और विराट् व्यक्तित्व को स्मरण करना तभी सार्थक होगा, जब हम उनके प्रेरणादायी जीवन से शिक्षा ग्रहण कर सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याणार्थ कार्य करें।

निवासः 31, शिव वाटिका , मॉडल टाउन-सी के पास, मालवीय नगर, जयपुर (राज.) - 302017

**मो: 7742131000**

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

# कॅरियर-डे की उपयोगिता

❒ डॉ. कृष्णा आचार्य

विद्यालयों, कॉलेजों में स्वामी विवेकानंद जयंती को कॅरियर डे के रूप में मनाया जाता है। विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद के जीवन का परिचय, उनके संदेश, उनका आध्यात्मिक, दार्शनिक, शैक्षिक विचारों से अवगत कराते हुए उनके मार्ग पर चलने का आह्वान किया। राष्ट्रीय युवा दिवस अर्थात् स्वामी विवेकानन्द जयंती अर्थात् कॅरियर डे। प्रेरणा पुरुष स्वामी विवेकानन्द की जयंती सभी जगह पूर्ण उल्लास-उमंग के साथ मनाई जाती है। ज्योतिर्मय महामानव का जन्म 12 जनवरी 1863 ई. को कोलकत्ता के प्रसिद्ध बेरिस्टर विश्वनाथदत्त माता भुवनेश्वरी देवी के घर हुआ। स्कूल-कॉलेज का मेधावी बालक नरेन्द्र युवावस्था में प्रवेश करता श्रीरामकृष्ण परमहंस का परम शिष्य नरेन, जगत के सामने स्वामी विवेकानन्द के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने युवा शक्ति को जागृत करने का स्तुत्य कार्य किया। उन्होंने कहा ''हमारा भारत, हमारा राष्ट्र, केवल यही एक देवता है, उस विराट की पूजा करो जिसे हम चारों ओर देख रहे हैं।'' युवाशक्ति में उनका पूर्ण विश्वास था। युवाओं को आह्वान करते हुए स्वामी जी ने कहा, ''आवश्यकता है वीर्यवान्, तेजस्वी, श्रद्धा सम्पन्न और दृढ़विश्वासी, निष्कपट नवयुवकों की, ऐसे सौ युवकों से संसार का कायाकल्प हो सकता है। हमारे देश के लिए आवश्यकता है लोहे की तरह ठोस मांसपेशियों और फौलाद की तरह मजबूत स्नायु वाले शरीरों की, और जरूरत है इच्छाशक्ति सम्पन्न होने की।''

युवकों से वे सदा कहते थे, ''विश्वास, अपने आप में विश्वास।''

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि- ''हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है, जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण, चरित्र निर्माण में सहायक हो और ये तभी संभव है जब मनुष्य के जीवन मूल्यों, आदर्शों, मान्यताओं का समावेश उसकी शिक्षा के साथ हो क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली विद्यार्थी को एक सफल उद्यमी, अधिकारी, श्रमिक, डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर आदि तो बना सकती है परन्तु उनके व्यक्तित्व की पूर्णता तभी संभव है जब व्यक्ति के जीवन लक्ष्यों की तरफ ध्यान देते हुए शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण किया जाए।

हमारे देश की लगभग आधी आबादी 'युवा' है, इसलिए भारत को युवाओं का देश कहा जाता है और यही युवा शक्ति देश एवं प्रदेश की उन्नति में सहायक है क्योंकि 'युवा' शब्द एक ऐसा ऊर्जावान शब्द है जो चेतनता, सक्रियता, सक्षमता, संभावनाओं से भरा, सकारात्मक कार्य करने में अग्रणी होने के साथ-साथ कर्मठता, शक्तिमान व गतिवान बन आगे बढ़ने का दूसरा नाम है।

प्रतिवर्ष बारह जनवरी को स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस को 'अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस' एवं 'कॅरियर गाइडेंस डे' के रूप में मनाया जाता है। स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे महान प्रेरणा पुंज मानवतावादी वैचारिक मार्गदर्शक एवं आध्यात्मिक चिन्तक थे जिनके विषय में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है कि अगर भारत को जानना चाहते हैं तो सबसे पहले विवेकानन्द का अध्ययन करना होगा।

स्वामी विवेकानन्द ऐसी शिक्षा प्रणाली को इस देश के लिए उपयोगी मानते थे, जो विद्यार्थी को जीवन में आने वाले संघर्ष के लिए तैयार कर सके उसको इतना सक्षम व योग्य बनाये कि वह हर चुनौती का डटकर सामना कर सके। सच्ची शिक्षा वही जो विद्यार्थी के चरित्र को उच्च बनाती एवं राष्ट्रीय एकता और समाज सेवा की भावना का विकास करे। शिक्षा जो विद्यार्थी को स्वावलंबी बनाए, उसमें आत्मविश्वास की भावना का विकास करे। स्वामी जी के अनुसार मात्र पुस्तकें पढ़कर परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाना शिक्षा नहीं है। उनका कहना था कि दूसरे देशों से भी यदि विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में ज्ञान मिलता हो तो उसे अवश्य ग्रहण करना चाहिए। देश के औद्योगिक विकास हेतु शिक्षा की व्यवस्था अवश्य की जानी चाहिए। विद्यार्थी के लिए सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक प्रशिक्षण भी जरूरी है जिससे वह राष्ट्रीय विकास एवं सामाजिक उत्थान में उपयोगी सिद्ध हो सके।

उनके अनुसार शिक्षा ऐसी जो विद्यार्थी को पूर्णता की ओर ले जा सके, उसके भीतर की शक्तियाँ जाग्रत हो, वह पहचान सके। शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं आर्थिक विकास में सहयोगी हो तथा विद्यार्थी को अपने संतुलित विकास के अनुकूल वातावरण प्रदान करे।

स्वामीजी का मानना था कि यदि व्यक्ति एकाग्र होकर अध्ययन, मनन एवं चिन्तन करें, तो उसे इसी अर्थ में ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। जो व्यक्ति किसी भी विषय में ज्ञान-विज्ञान की किसी भी धारा में यदि अधिकारपूर्ण एवं ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, तो उसे एकाग्रता को अपनाना होगा। व्यक्ति का मन बड़ा चंचल है, पता नहीं कब मन का मौसम बदल जाये? मन वश में रखने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण एवं वासनाओं का त्याग कर सकें, इसके लिए ब्रह्मचर्य व्रत अपनाना आवश्यक है। ब्रह्मचर्य व्यक्ति में क्षमताएँ विकसित करता है। इससे उसकी दृढ़ इच्छा शक्ति विकसित एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। कार्य करने की शक्ति प्रबल होती हैं। स्वामीजी का मत था कि छात्र को ऐसा वातावरण देना चाहिए कि वह स्वयं सीख सके, क्योंकि सीखता तो वह स्वयं ही है। कोई उसे ज्ञान देकर सिखा नहीं सकता। ऐसा कोई माली नहीं होता जो पौधे का पेड़ बना दे। हाँ, वह इतना अवश्य कर सकता है कि इस बात का ध्यान रखे कि पौधे को कोई क्षति नहीं पहुँचे। इसी प्रकार शिक्षक को चाहिए कि छात्र के सीखने की स्वतंत्रता का सम्मान करे तथा छात्र को स्वत: शिक्षित होने दे।

स्वामीजी के अनुसार किसी भी विद्यार्थी के जीवन में कॅरियर का बड़ा महत्त्वपूर्ण योग होता है। बिना कॅरियर के विद्यार्थी का जीवन-उद्देश्य संभव नहीं, इसके लिए उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। कॅरियर में तीन बातों पर ध्यान देना जरूरी है- प्रथम तो वह अपने जीवन में जो 'क्षेत्र' चुनता है उसके विषय की पूर्ण जानकारी व भरपूर मार्गदर्शन मिलना आवश्यक है उसे किसी भी प्रकार का भ्रमित ज्ञान नहीं मिलना चाहिए, जो भी शंकाएं उसके मन में हो उसका समाधान होना जरूरी है। दूसरा, वह सही मार्ग अपनाए, जैसे पटरी पर चलने वाली ट्रेन भले ही थोड़ी देरी से चले मगर वह अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच जाती है। लेकिन अगर वह पटरी से नीचे लुढ़क जाए तो... इसी प्रकार विद्यार्थी को उसके क्षेत्र में प्रशिक्षण उचित व सही मिलना चाहिए ताकि वह अपने अभ्यास, मेहनत, पूर्ण निष्ठा से उस मार्ग तक पहुँचे जहाँ उसे पहुँचना हो। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि वह विचारों से, चरित्र से, शुद्ध हो, उसका आचरण ऐसा आदर्श होना चाहिए कि दूसरे विद्यार्थी भी उसका अनुकरण कर सके। तभी वह अपने जीवन को उत्कृष्टता की ओर ले जा पाएगा। उसका मार्गदर्शक भी उच्च आदर्शों वाला होना चाहिए। उसकी कथनी व करनी में भेद नहीं होना चाहिए। तीसरा प्रत्येक विद्यार्थी को समय-समय पर शाला में वार्ताओं, संवादों जैसे कार्यक्रमों द्वारा जोड़ा जाना चाहिए, उसे

Rajasthan Education Department

अपनी अभिव्यक्ति का अवसर मिलना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द संसार के महान शिक्षकों में से एक हैं। उन्होंने सफलताओं को जीवन का सौन्दर्य माना और उसे जीवन की पूर्णता का पथ कहा। उनके अनुसार– ''असफलताओं की चिन्ता न करो, वे बिल्कुल स्वाभाविक है। असफलताएँ जीवन का सौन्दर्य है, जीवन में यदि संघर्ष न रहे, तो जीवित रहना व्यर्थ है। आदर्श को सामने रखकर हजार बार आगे बढ़ने का प्रयत्न करो, यदि तुम हजार बार असफल रहते हो, तो एक बार फिर प्रयत्न करो।''

स्वामीजी के कथनानुसार सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण होना चाहिए। सारे प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना है। जिस अभ्यास से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम शिक्षा है। आज हमारे देश को जिस वस्तु की आवश्यकता है, वह है, लोहे की माँसपेशियों और फौलाद के स्नायु, दुर्दमनीय प्रचण्ड इच्छा–शक्ति, जो सृष्टि के गुप्त तथ्यों और रहस्यों को भेद सके और जिस उपाय से भी हो अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में समर्थ हो। फिर चाहे उसके लिए समुद्र तल में ही क्यों न जाना पड़े– साक्षात् मृत्यु का ही सामना क्यों न करना पड़े। हम 'मनुष्य' बनाने वाला धर्म चाहते हैं, हम मनुष्य बनाने वाले सिद्धान्त चाहते हैं, हम सर्वत्र, सभी क्षेत्रों में 'मनुष्य' बनाने वाली शिक्षा चाहते हैं।

**कॅरियर और विद्यार्थी:–** आज दुनिया बड़ी तेजी से बदल रही है और हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा है ऐसे में अपने कॅरियर की सही तरीके से योजना बनाने वाला ही निश्चित रूप से सफलता की बुलंदिया छू पाएगा। ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में अच्छे कॅरियर के लिए प्रतियोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ऐसे में विद्यार्थियों में 'अर्ली प्लानिंग' का बीजारोपण कर उनके सुखद भविष्य निर्माण हेतु उन्हें लक्ष्य निर्धारण कराने से सफलता हासिल हो सकती है। क्योंकि जब लक्ष्य स्पष्ट होगा तो विद्यार्थी अपने जोश–मेहनत से उसे पाने की भरसक कोशिश कर पाएगा। इसके लिए उचित समय है– 10वीं पास करने के बाद, दसवीं की परीक्षा समाप्त होने के बाद 11वीं में किस विषय का चयन किया जाए इस प्रश्न में विद्यार्थी और अभिभावक अक्सर भ्रमित हो जाते हैं चूंकि यही वह समय होता है जब चुना गया विषय कॅरियर की उस पुख्ता नींव का निर्माण करता है जिस पर आगे चलकर सफलता की इमारत खड़ी होती है। विषय का चयन करना मुश्किल नहीं है बस जरूरत है उचित मार्गदर्शन की जो अध्यापक, अभिभावक, मार्गदर्शक आदि से मार्गदर्शन लेकर किया जाता है। यह भी जरूरी है कि विद्यार्थी अपनी अभिरुचि, योग्यता और क्षमता का मूल्यांकन कर दसवीं के बाद उपयुक्त विषय का चयन कर अपनी सफलता के मार्ग पर पूरी मेहनत और साहस के साथ आगे बढ़े। किसी भी विषय को कमतर नहीं समझें–

'बिना विचारे जो करें सो पाछे पछताय' लक्ष्य ऐसा कि बाद में पछताना नहीं पड़े। कई बार यह भी देखा गया है कि विषय कोई लेता है बनना कुछ और होता है और बहुतों की यह अवधारणा होती है कि साइंस विषय लेने से कामयाबी जल्दी मिलती है लेकिन यह सोच औचित्यपूर्ण नहीं है क्योंकि आज ये सिद्ध हो गया है कि आप रुचि के अनुसार जिस क्षेत्र में जाना चाहते हैं उसी पर ध्यान केन्द्रित कर विषय कला हो, विज्ञान हो, आपकी सफलता तय है। विद्यार्थी कभी यह न सोचें कि डॉक्टर, इंजीनियर या मैनेजमेंट की पढ़ाई ही महत्त्वपूर्ण है। कॅरियर के लिहाज से आज कॉमर्स और आर्टस् भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

**कॅरियर प्लानिंग के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य–**

कॅरियर प्लान करते समय अपने क्षेत्र से जुड़ी सभी छोटी–बड़ी बातों का पूरा ध्यान रखें। विषय चयन से पहले स्टूडैंट्स खुद की क्षमता और रुचि को सामने रख संबंधित क्षेत्रों में संभावनाओं के बारे में पता करने के बाद ही पूरी तैयारी के साथ विषय ले। कॅरियर की प्लानिंग पर आप का पूरा भविष्य निर्भर करता है इसलिए ऐसे में निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

**स्टूडैंट्स के लिए–**

- कॅरियर का चयन करते समय सब से पहले अपनी रुचि, इच्छा, ताकत और प्रतिभा का मंथन करें।
- परीक्षा में हासिल किए गए अंकों को विषय चयन करने का आधार न बनाएँ। अपने मन की आवाज सुनें और उसी विषय को चुनें जिस में आप की पकड़ मजबूत हो।
- आमतौर पर स्टूडैंट्स अपने फ्रैंड्स की देखादेखी कॅरियर का चयन कर लेते हैं। यह आप के कॅरियर के लिए बहुत घातक हैं क्योंकि सभी स्टूडैंट्स की रुचि, क्षमता और महत्वकांक्षाऐं अलग–अलग होती है।
- कुछ स्टूडैंट्स अपनी क्षमता को दरकिनार कर बहुत बड़ा लक्ष्य रख लेते हैं। जिस का परिणाम अच्छा नहीं होता। बड़ा लक्ष्य रखना गलत नहीं है। लेकिन उस के लिए अपनी क्षमताओं और सीमाओं का सही मूल्यांकन करना भी तो जरूरी है।
- इस भ्रम में बिलकुल न पड़े कि साइंस लेने से सफलता मिल ही जाएगी। वर्तमान समय में कोई भी विषय कमतर नहीं है, सभी में अपार संभावनाएँ हैं और किसी भी क्षेत्र में कामयाबी पाने का मंत्र है कड़ी मेहनत।

**अभिभावकों के लिए–**

अभिभावकों से बेहतर किशोरों का और कोई मार्गदर्शन नहीं कर सकता। किशोरों के सब से पहले रोल मॉडल और काउंसलर अभिभावक ही होते हैं। इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे किशोरों के विषय और कॅरियर चयन में निम्न बातों का ध्यान रखें।

- किशोरों की रुचि और भावनाओं का सम्मान करें। उन की रुचि और क्षमता को ध्यान में रखकर ही कॅरियर या विषय का चयन करने की सलाह दें।
- कई बार किशोरों पर पेरैंट्स अपनी मर्जी का कॅरियर थोपने की कोशिश करते हैं। ऐसा करना उचित नहीं है। अभिभावकों को चाहिए कि वे किशोरों को उस दिशा में आगे बढ़ाएँ जहाँ सही माने में वे अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।
- किशोरों के साथ सख्ती से पेश न आएं। उन के साथ मित्रवत व्यवहार करें। इससे वे आप के सामने खुल कर अपनी समस्याओं और इच्छाओं को शेयर करेंगें।
- जनरल नौलेज पर किशोरों के साथ ग्रुप डिस्कशन करते रहें। साथ ही उन को गलत संगत के कुपरिणामों के बारे में भी बताएँ।

अस्तु! स्वामीजी ने भी युवा पीढ़ी को यही संदेश दिया कि ''तुम जीवन का एक ध्येय बना लो, उस पर मनन करो, उसके स्वप्न देखो, शरीर का प्रत्येक अंग उस लक्ष्य से ओत–प्रोत हो, अन्य विचारों को छोड़कर केवल और केवल कठिन परिश्रम करो। बिना परिणाम सोचे अपने ध्येय की पूर्ति में लगे रहोगे तो निश्चित रूप से अपने लक्ष्य को प्राप्त करोगे।'' तो 'उठो, जागो! और तब तक मत रूको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाऐ।'

इस प्रकार 'कॅरियर डे' की भी सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की सुदृढ़ नागरिकता की और अच्छे भविष्य निर्माण की, उनके सुनहरे रोजगार की सुदृढ़ नींव थापित होगी।

साहित्यकार, कवयित्री
उस्तों की बारी के अन्दर
झूंझार जी की चौकी वाली गली
बीकानेर (राज) 334005
**मो: 8619402147**

Rajshri Education Department

रपट

# 55वीं राज्यस्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2022-23

❒ शक्ति प्रसन्न बीठू

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और लोगों के जीवन के बेहतर बनाने के लिए नवीनतम ज्ञान, प्रौद्योगिकी, विज्ञान और इंजीनियरिंग आवश्यक मौलिक वस्तुएँ हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अभाव में कोई देश पिछड़ जाता है और उसके विकसित होने की संभावनाएँ कम से कम हो सकती हैं। इन्हीं विचारों को साकार और विद्यार्थी जीवन में प्रेरित करने हेतु करणी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देशनोक, बीकानेर में चार दिवसीय विज्ञान मेले का आयोजन 22 नवंबर 2022 से 25 नवंबर 2022 तक किया गया।

**राज्य स्तरीय विज्ञान मेले का उद्घाटनः** राज्य स्तरीय विज्ञान मेले का उद्घाटन दिनांक 22 नवंबर 2022 को करणी राउमावि. देशनोक में किया गया। उद्घाटन-समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बीकानेर के संभागीय आयुक्त श्री नीरज के. पवन, विशिष्ट अतिथि श्री शिवजी गौड़, अतिरिक्त निदेशक आरएससीईआरटी उदयपुर, परामर्शद श्रीमान राजकुमार शर्मा संयुक्त निदेशक बीकानेर एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, बीकानेर, देशनोक नगर पालिका अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश मूंदड़ा, राज्य स्तरीय प्रभारी अधिकारी, विज्ञान मेला श्रीमती अनामिका चौधरी, मेला संयोजक शक्ति प्रसन्न बीठू प्रधानाचार्य करणी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देशनोक, बीकानेर इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। उद्घाटन सत्र का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री नीरज के पवन एवं अन्य गणमान्य अतिथियों की मौजूदगी में माँ सरस्वती के चरणों में दीप प्रज्वलन से हुआ।

मुख्य अतिथि श्री नीरज के. पवन ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन से सभी संभागी विद्यार्थियों को प्रेरित किया। इस अवसर पर भारत के प्रमुख वैज्ञानिक श्री देव अरस्तु पंचारिया ने भी अपने उद्बोधन से विद्यार्थियों को विज्ञान मेले के आयोजन की महत्ता बताते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु प्रेरित किया। उद्घाटन सत्र में देशनोक के विभिन्न भामाशाह शांतिलाल सांड परिवार, नरसिंह दास मेहता जी, मेघराज जी कातिला, नथमल जी सुराणा, श्री राजेन्द्र नाहटा भी उपस्थित रहे। मेला संयोजक एवं प्रधानाचार्य शक्ति प्रसन्न बीठू द्वारा सभी आगंतुकों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

सेमिनार प्रतियोगिता में राजसमंद की द क्रियेटिव ब्रेन्स एकेडमी की छात्रा श्रेया संध्या ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर सिरोही की गीता आनंद शैक्षिक एवं ग्रामीण विकास संस्थान शिवगंज की छात्रा डिम्पल कँवर रही।

मेले के द्वितीय तथा तृतीय दिवस प्रातः 10 बजे से 5 बजे तक विभिन्न विषयों पर आधारित 361 मॉडलों का प्रदर्शन एवं मूल्यांकन किया गया। जिसमें हनुमानगढ़-संगरिया की छात्रा मिताली का बादलों से विद्युत उत्पादन प्रादर्श ने सभी को प्रभावित किया। इस प्रोजेक्ट से कोयला रहित कम लागत में विद्युत उत्पादन किया जा सकता है। दिवंगत राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा भी इस प्रोजेक्ट की सराहना की गई थी। पाली के दिव्यांशु का हाइड्रोलिक ब्रिज निर्माण से कम एवं ईंधन की बचत से प्रदूषण मुक्त सड़क परिवहन एव जल परिवहन प्रोजेक्ट भी आकर्षण का केन्द्र रहा। वहीं उदयपुर के हरीश गौड़ की सौर ऊर्जा से संचालित प्रदूषण मुक्त इलेक्ट्रिक कार ने भी सभी का ध्यान आकर्षित किया। जालोर के बलवंत सिंह के रॉकेट लाँचिंग प्रोजेक्ट ने सभी को प्रभावित किया, जिसमें ईंधन के बदले जल व वायु प्रेशर का इस्तेमाल किया गया। तृतीय दिवस को निर्णायकों द्वारा प्रति उप विषय में जूनियर तथा सीनियर वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय विद्यार्थियों का चयन किया गया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में उन्नति जूनियर वर्ग में बाँसवाड़ा के लय जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

पर्यावरण अनुकूल सामग्री में जयपुर की हेम शिखा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता में विराज भाटी, चूरू, परिवहन और नवाचार में लक्ष्मण, जालोर, पर्यावरण संबंधी चिंताओं में अंबिका शर्मा, सीकर, वर्तमान नवाचार के साथ ऐतिहासिक विकास में डूँगरपुर के भावेश पाटीदार, गणित में यशोवर्धन सिंह चौहान, दिव्यांगों के लिए उपयोगी प्रादर्श में आबिद खान ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सीनियर वर्ग प्रादर्श में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में उन्नति में पाली के प्रफुल्ल कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पर्यावरण अनुकूल सामग्री में बाँसवाड़ा की खुशी उपाध्याय, स्वास्थ्य और स्वच्छता में भाविका बामणिया, बाँसवाड़ा, परिवहन और नवाचार में बाँसवाड़ा की साँची जैन एवं पर्यावरण संबंधी चिंताएँ में झालावाड़ के रामधन लोढ़ा, वर्तमान नवाचार के साथ ऐतिहासिक विकास में सीकर के मिहिर रावत, हमारे लिए गणित में गीतिका, दिव्यांगों के लिए उपयोगी प्रदर्शनी अलवर के दिविजा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

क्विज प्रतियोगिता में भरतपुर की नित्या सिंह ने प्रथम तथा करौली के यश आर्य ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के तृतीय दिवस डॉ. रविन्द्र मंगल वी.सी. आरएनबी ग्लोबल प्राइवेट यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर तथा वैज्ञानिक श्री देव अरस्तु पंचारिया ने 2 घण्टे की वार्ता प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के समापन सत्र में **शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला** मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज का युग विज्ञान का युग है। इसने पूरी दुनिया को ग्लोबल विलेज बना दिया है। उन्होंने विज्ञान का उपयोग विकास में करने का आह्वान किया साथ ही चिंता जताई कि इसके विनाशकारी उपयोग मानव सभ्यता के लिए अभिशाप हैं। उन्होंने कहा कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गाँधी ने 21 वीं सदी के तकनीकी क्षमता संपन्न भारत की कल्पना की, वह सपना आज साकार हुआ है। उन्होंने कहा कि वर्षों बाद बीकानेर में देशनोक में पहली बार विज्ञान मेले का आयोजन हो रहा है तथा करणी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में राजस्थानी अतिरिक्त विषय खोलने की घोषणा की तथा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कॉसट को अंग्रेजी माध्यम से परिवर्तित करने की भी घोषणा की। विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक श्री माधोदान देपावत को भामाशाहों को प्रेरित करने पर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। श्रीमती अनामिका चौधरी ने कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के उपरांत प्रदर्शनी समापन की घोषणा की।

प्रधानाचार्य
करणी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देशनोक,
बीकानेर (राज.)

Rajsha Education Department

# राज्यस्तरीय कला उत्सव समारोह-2022

❒ अनिल कुमार सांखला

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कलात्मक प्रतिभा को पहचानने, उसे पोषित करने, प्रस्तुत करने, कला को बढ़ावा देने एवं कला शिक्षा के संदर्भ में की जा रही पहल राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की अनुशंसाओं पर आधारित राज्य स्तरीय कला उत्सव समारोह राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय किसान कन्या जोधपुर को आयोजन की जिम्मेदारी दी गई। इनके व्यवस्थार्थ विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों व विभिन्न विद्यालय के शिक्षकों सहित कला उत्सव की दस विधाओं के विशेषज्ञों को निर्णायक की जिम्मेदारी दी गई। राज्य समस्त 33 जिलों के 660 प्रतिभागियों व 66 एस्कॉर्ट शिक्षक संभागियों के लिए विभाग व आयोजक विद्यालय ने संयुक्त रूप से सामंजस्य स्थापित कर समारोह स्थल के नजदीक ही आवास व भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की।

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर, संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा जोधपुर संभाग एवं जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा जोधपुर व प्रधानाचार्य राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय किसान कन्या के संयुक्त तत्वावधान में राज्य स्तरीय कला उत्सव समारोह का उद्घाटन राजस्थान सरकार के शिक्षा मंत्री आदरणीय श्री बी.डी. कल्ला के मुख्य आतिथ्य, जोधपुर नगर निगम उत्तर महापौर श्रीमती कुंती देवड़ा की अध्यक्षता, भारत सेवा संस्थान सचिव व समाजसेवी श्री जसवंत सिंह कच्छवाहा, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर से एएसपीडी श्री अनिल कुमार पालीवाल, संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा जोधपुर संभाग श्री प्रेमचंद सांखला, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री भल्लूराम खीचड़, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री इंसाफ खान ज़ई, स्थानीय विद्यालय के प्रधानाचार्य व संयोजक श्री अनिल कुमार सांखला कि उपस्थिति में विद्यालय प्रांगण के सभागार में माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन से हुआ।

**मुख्य अतिथि व शिक्षा मंत्री श्री बी.डी. कल्ला जी** ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि किसान कन्या विद्यालय की ओर से अर्थशास्त्र व कृषि विषय संकाय की मांग आई हुई है, उसे जल्द ही पूरी की जाएगी। शिक्षा मंत्री जी ने विद्यालय की बालिकाओं से कहा कि शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है, उन्होंने कला उत्सव समारोह में बालिकाओं से प्रश्न किए कि पानी से पतला कौन. कक्षा दसवीं की बालिका रानी कंवर पंवार ने सटीक उत्तर देकर मंत्री जी और सभागार में उपस्थित राज्य से भाग ले रहे सैकड़ों प्रतिभागियों व जनसमूह का दिल जीत लिया। इस संदर्भ में शिक्षा मंत्री जी ने मंच से बालिका की प्रशंसा करते हुए कहा कि ये सभी प्रश्न मैंने विधानसभा सत्र के दौरान किए। उस समय मुझे कुछ ही प्रश्नों के उत्तर मिले। आज समारोह में विद्यालय की बालिका ने प्रत्येक प्रश्न के उत्तर देकर यह साबित कर दिया कि राजकीय विद्यालय किसी भी स्तर में निजी विद्यालयों से पीछे नहीं है। **जोधपुर नगर निगम उत्तर महापौर श्रीमती कुंती देवड़ा** ने अध्यक्षता करते हुए अभिभावकों से आह्वान किया कि राज्य के मुख्यमंत्री आदरणीय श्री अशोक गहलोत ने बच्चों को शिक्षण के साथ पोषण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बाल गोपाल योजना की पहल के साथ विद्यालयों में एकरूपता को बढ़ावा देने के लिए नि:शुल्क यूनिफॉर्म योजना से बच्चों को लाभान्वित कर एक नई पहल की शुरुआत की है।

समारोह में स्वागत उद्‌बोधन भारत सेवा संस्थान के सचिव व समाजसेवी एवं स्थानीय विद्यालय के संरक्षक के रूप में श्री जसवंत सिंह कच्छवाहा द्वारा विद्यालय के सौ साल पूर्ण होने की ओर अग्रसर होने पर विद्यालय की शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के बारे में विस्तार से अवगत करवाया।

**प्रतिवेदन में प्रधानाचार्य व संयोजक श्री अनिल कुमार सांखला** ने कहा कि वर्तमान सत्र में बारह बालिकाओं ने शैक्षिक गतिविधियों व खेलकूद में राज्य स्तर पर विद्यालय का परचम लहराया है।

**संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा जोधपुर संभाग श्री प्रेमचंद सांखला** ने कहा कि कला उत्सव स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय की माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कलात्मक प्रतिभा को पहचानने, उसे पोषित करने, प्रस्तुत करने, कला को बढ़ावा देने की एक पहल है, यह पहल राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की अनुशंसाओं पर आधारित है।

प्रधानाचार्य
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
किसान कन्या, जोधपुर (राजस्थान)

**राज्य स्तरीय कला उत्सव समारोह 2022 में प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थियों की सूची**

| क्र.सं. | कला | नाम छात्र/छात्रा | विद्यालय का नाम | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 01 | संगीत (गायन) शास्त्रीय संगीत | राघव शर्मा | राउमावि छबड़ा, बारां | प्रथम |
| | | नीलाशी शर्मा | रा. महाराजा बामावि छोटी चौपड़, जयपुर | प्रथम |
| 02 | संगीत (गायन) पारम्परिक लोकगीत | श्यामलाल | राउमावि मण्डी, जोधपुर | प्रथम |
| | | अंजलि शर्मा | राबाउमावि रेजिडेन्सी, उदयपुर | प्रथम |
| 03 | संगीत (वादन) अवनद्ध वाद्य | सुनील दास | राउमावि अणवाणा, जोधपुर | प्रथम |
| | | हर्ष भाटी | श्रीमती जा.दे.पेडीवाल राबाउमावि नोहर, हनुमानगढ़ | प्रथम |
| 04 | संगीत (वादन) स्वर वाद्य | गगन पंचोली | राउमावि, झालावाड | प्रथम |
| | | बेबी इल्मा | राबाउमावि रेजिडेन्सी, उदयपुर | प्रथम |
| 05 | नृत्य शास्त्रीय | अभिषेक भाटी | राउमावि डोली, जोधपुर | प्रथम |
| | | हर्षिता पुरोहित | से.मु.मा.राबाउमावि, भीलवाडा | प्रथम |
| 06 | नृत्य–लोक नृत्य पारम्परिक | नूर मोहम्मद | राउमावि मण्डी, जोधपुर | प्रथम |
| | | अंशिका परिहार | राबाउमावि किसान कन्या, जोधपुर | प्रथम |
| 07 | दृश्य कला (द्विआयामी) | सिद्धार्थ | म.गा.रा.वि. वैशाली नगर, अजमेर | प्रथम |
| | | प्रियंजना बेनीवाल | स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल निवाई, टोंक | प्रथम |
| 08 | दृश्य कला (त्रिआयामी) | दिपेश | राउमावि सोजत रोड, पाली | प्रथम |
| | | रितु बाला | राउमावि रामसरा जाखडान, गंगानगर | प्रथम |
| 09 | स्थानीय खिलोने एवं खेल | अशोक भादू | रा.सादुलउमावि बीकानेर | प्रथम |
| | | भव्याष्टी | म.गा.रा.वि. सादुलपुर, चुरू | प्रथम |
| 10 | नाटक एकल | अनुज शर्मा | राउमावि राजेन्द्र मार्ग, भीलवाडा | प्रथम |
| | | सुमित्रा | राउमावि लूणकरणसर, बीकानेर | प्रथम |

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

# राजकीय विद्यालयों में अभिनव प्रयोग है श्री गाँधी बाल निकेतन की इंटरेक्टिव बोर्ड परियोजना

❒ कुलदीप व्यास

शिक्षा क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा एवं निरन्तर हो रहे नवाचारों ने सीखने-सिखाने की विधाओं में व्यापक परिवर्तन किए हैं। निजी विद्यालयों में जहाँ अत्याधुनिक संसाधनों की भरमार है वहीं राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भी विभिन्न स्तर पर विविध प्रयास होते रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा हिन्दी माध्यम विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम में रूपान्तरण की योजना हो अथवा कम्प्यूटर शिक्षा के साथ ऑनलाइन शिक्षण जैसे अभिनव प्रयोग। सबका उद्देश्य एक ही है कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की शिक्षा व्यवस्था में भी व्यापक सुधार हो, इन विद्यालयों में पढ़ने वाली प्रतिभाओं को भी आगे बढ़ने के समान अवसर प्राप्त हों।

राजकीय विद्यालयों में शैक्षिक, सह शैक्षिक और भौतिक विकास में दानदाता भामाशाहों का सहयोग भी निरन्तर मिलता रहता है। ऐसे भामाशाहों की भावना का सम्मान करते हुए रतनगढ़ की एक निजी शिक्षण संस्था श्री गाँधी बाल निकेतन के संचालक युवा सचिव श्री राजीव उपाध्याय द्वारा राजकीय विद्यालयों में इंटरेक्टिव बोर्ड स्थापित किए जाने की अभिनव परियोजना का विचार उत्पन्न हुआ। इनका मानना था कि भवन एवं कक्षा-कक्ष जैसी आधारभूत सुविधाएँ सभी स्कूलों में पूर्व में उपलब्ध हैं एवं अधिक राशि में भी लाभान्वितों की संख्या सीमित रहती है जबकि तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ने से कम खर्च में लाभान्वितों की संख्या कई गुणा बढ़ जाती है।

काफी सोच-विचार के बाद दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में स्थित स्कूलों एवं सभी मौसम में समान रूप से कार्य करने वाले इंटरेक्टिव बोर्ड को खोजा गया। इस हेतु अमेरिका की कम्पनी व्यूसोनिक का चयन किया गया जो इंटरेक्टिव बोर्ड मार्केट की सबसे बड़ी एवं सर्वश्रेष्ठ उत्पाद बनाने वाली कम्पनी है। कम्पनी के प्रतिनिधियों से वार्ता कर नवीनतम इंटरेक्टिव बोर्ड व्यूसोनिक व्यूबोर्ड आईएफपी 7552 का चयन किया गया जिसकी लागत लगभग दो लाख रुपये प्रति यूनिट है। किन्तु श्री गाँधी बाल निकेतन द्वारा किए गए अनुबन्ध के तहत यह बोर्ड केवल मात्र 1,57,000 रुपये में उपलब्ध होगा जिसमें इलेक्ट्रिकल बोर्ड, इंस्टॉलेशन, ट्रेनिंग एवं तीन साल की ऑनसाइट सर्विस भी शामिल है। 75 इंच के इस विशाल बोर्ड से शिक्षण कार्य अधिक रुचिकर एवं प्रभावी होगा जिससे विद्यार्थियों की लर्निंग स्किल बढ़ेगी और वे कम समय में अधिक ज्ञान सहजता से प्राप्त कर सकेंगे।

दानदाताओं को प्रेरित कर शिक्षण संस्थानों में करोड़ों रुपये के विकास करवा कर राज्य सरकार द्वारा कई बार भामाशाह प्रेरक का सम्मान प्राप्त करने वाले शिक्षाविद् स्व. श्री चम्पालाल उपाध्याय के सुपुत्र राजीव उपाध्याय अपने पिता द्वारा बनाए गए पथ पर चलते हुए उनके द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों की निरन्तरता प्रदान करने के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ जुटे हुए हैं। इनकी मेहनत रंग लाई और कुछ भामाशाहों को इनकी योजना बहुत पसंद आई।

सर्वप्रथम रतनगढ़ ब्लॉक के 199 से अधिक विद्यार्थी संख्या वाले सरकारी स्कूलों की सूची बनाई गई जिसके अन्तर्गत कुल 74 स्कूल चयनित हुए जिनके लिए लगभग सवा करोड़ रुपये की परियोजना बनाई गई है। सबसे पहले सूरत प्रवासी रतनगढ़ के भामाशाह श्री शुभकरण बैद ने 10 इंटरेक्टिव बोर्ड लगाने हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई जिसके बाद दस-दस बोर्ड हेतु डॉ. अशोक सराफ एवं श्री अरूण अजीतसरिया द्वारा राशि उपलब्ध करवाई गई। श्री बुधमल बैद, श्री मुकेश बैद एवं श्री विकास बाफना द्वारा एक-एक बोर्ड सहित परियोजना के शुरूआती एक महीने में ही ब्लॉक की 34 स्कूलों में तिरेपन लाख अड़तीस हजार रुपये की लागत से इंटरेक्टिव बोर्ड स्थापित करवा दिए गए।

14 दिसम्बर, 2022 को इस परियोजना के विधिवत् उद्घाटन हेतु रतनगढ़ के टाउन हॉल में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री गौरव अग्रवाल मुख्य अतिथि थे। समारोह को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय ने कहा कि निजी स्कूल द्वारा सरकारी स्कूलों के विकास में सहयोग करने का यह अनूठा उदाहरण है। सरकारी स्कूलों के लिए निजी विद्यालय का यह कदम डिजिटल क्रान्ति का उद्घोषक है। विद्यार्थियों को दुनिया की बेस्ट लर्निंग इस बोर्ड के माध्यम से सहज उपलब्ध होगी। इस प्रोजेक्ट को ज्ञान संकल्प पोर्टल पर भी शीघ्र उपलब्ध करवाया जाएगा जिससे इस हेतु ऑनलाइन सहायता राशि प्राप्त की जा सके।

बोर्ड की गुणवत्ता एवं कार्य प्रणाली से प्रभावित होकर जिला कलक्टर श्री सिद्धार्थ सिहाग ने इस परियोजना को जिले में स्थित 200 से अधिक विद्यार्थी संख्या वाले सभी 463 सरकारी स्कूलों में भामाशाहों के सहयोग से लगभग सवा सात करोड़ की इस योजना पर काम करने का प्रयास करने का कहा है। निदेशक एवं जिला कलक्टर महोदय की प्रेरणा से शीघ्र ही सकारात्मक परिणाम आने की अपेक्षा है।

उद्घाटन समारोह में जिले के सातों ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को राज्य स्तरीय रैंकिग 2021 में चूरू जिले के द्वितीय स्थान पर आने के उपलक्ष्य में श्री गाँधी बाल निकेतन द्वारा कलक्टर एवं निदेशक महोदय के माध्यम से शिक्षा गौरव सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम में उपखण्ड अधिकारी रतनगढ़ डॉ. अभिलाषा चौधरी, सीडीईओ श्री संतोष कुमार महर्षि, डीईओ श्री निसार अहमद खान, संस्थाध्यक्ष श्री घनश्यामचन्द्र सोनी एवं सचिव श्री राजीव उपाध्याय मंचस्थ थे। समारोह को अन्य प्रान्तों से ऑनलाइन जुड़े भामाशाहों में से गुवाहाटी से डॉ. अशोक सराफ ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के संस्थाप्रधान, नगर के गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

धन्य है इस प्रकार की सकारात्मक सोच रखकर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए संसाधन जुटाने में सहयोग करने वाले ऐसी प्रेरणादायी योजना के सूत्रधार।

(राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त शिक्षक)
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
सुजानगढ़, चूरू (राज.)

Rajasthan Education Department

# अभिवादन का मनोविज्ञान

❒ शंकर लाल माहेश्वरी

भारतीय परम्पराओं में अभिवादन का विशेष महत्त्व रहा है। भारतीय जन जीवन में इस परम्परा का प्रादुर्भाव सदियों पूर्व ऋषि आश्रमों द्वारा प्रारंभ हुआ। हमारे ऋषियों, संतों और साधुओं ने अपने आश्रमों में शिष्य परम्परा के अन्तर्गत अभिवादन की संस्कार वृत्ति को महत्ता प्रदान की। गुरु चरणों में बैठकर शिष्य विद्या ग्रहण करता था तभी उसे अभिवादन परम्परा की अनुपालना हेतु प्रेरित किया जाता रहा। यह परम्परा भारत भूमि पर सदियों पूर्व से पल्लवित हुई और आज भी इस परम्परा का निर्वहन भारतीय जन जीवन में दृष्टिगत होता है। अभिवादन की यह संस्कृति हमारे देश की अनुपम धरोहर है। एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की परम्परा के रूप में अभिवादन का प्रयोग होता रहा है।

वर्तमान में अभिवादन की जितनी भी रीतियाँ प्रचलित हैं, उनमें सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं मनोविज्ञान पर आधारित भारतीय पद्धतियों को मान्य किया गया है। साष्टांग प्रणाम, चरण स्पर्श, नमस्कार, हाथ जोड़ना, गले मिलना अभिवादन के प्रमुख स्वरूप हैं। अभिवादन की शारीरिक प्रतिक्रियाओं के साथ ही अपने इष्ट देव का स्मरण करते हुए संबोधन करना विशेष रूप से आत्मीयता का परिचायक है। मनोविश्लेषण के आधार पर अभिवादन से एक-दूसरे के मनोभावों से सौहार्द्र, स्नेह तथा आत्मीय भावों का उद्‌गम होता है तो सामाजिक जीवन को भी समरस बनाने में प्रभावपूर्ण होता है। हमारे पौराणिक ग्रंथों तथा वेदों में भी अभिवादन परम्परा का विशेष उल्लेख मिलता है। जिसके अनुसार परस्पर आत्मीयता के साथ कल्याणकारी मनोभावों का उद्‌घाटन होता है। हार्दिक स्नेह तथा निकटता के भावों का आविर्भाव होता है।

अभिवादन के संबंध में मनुस्मृति में लिखा गया है- 'अभिवादन करने का जिसका स्वभाव है और विद्या तथा अवस्था से जुड़े लोगों का जो नित्य अभिवादन करते हैं, उनकी आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है, जो मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुकूल है। अभिवादनकर्ताओं की आंतरिक व आत्मिक भाव तरंगे एक-दूसरे के प्रति मंगलकामना के साथ कल्याणकारी भावनाओं को प्रतिष्ठापित करती हैं। अभिवादन प्रक्रिया में चरण स्पर्श को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। हमारी वैदिक परम्पराओं के अनुसार इस अवस्था को विशेष मान्यता प्रदान की गई है। मनुस्मृति में उल्लेख है कि ''वेद के स्वाध्याय के प्रारंभ और अंत में सदैव गुरु के दोनों चरणों का स्पर्श करना चाहिए। बाएं हाथ से बायां पैर और दाएं हाथ से दायां पैर का स्पर्श चमत्कारिक होता है।''

चरण स्पर्श का मनोविज्ञान विशेष कोटि का है। परस्पर अहम् को गलित कर विनीत भाव से शुभ कामनाओं के साथ एक-दूसरे के प्रति कल्याणकारी भाव तरंगे प्रसारित होती हैं तो उसका सीधा प्रभाव उनकी जीवनचर्या पर पड़ता है। मनुस्मृति में प्रस्तुत किया गया है कि ''जब हम अपने से अधिक श्रेष्ठ और योग्य व्यक्ति के चरणों का स्पर्श करते हैं तो उस सामने वाले व्यक्ति में प्रतिष्ठित ज्ञान और गुणों की तरंगों को अपने शरीर में प्रविष्ट होते देख सकते हैं। वे तरंगे हमारे शरीर में प्रविष्ट होने लगती हैं।'' वैज्ञानिक सिद्धांत है कि व्यक्ति के चारों ओर प्रस्तुत ऊर्जा का क्षेत्र (आभा मण्डल) जितना प्रबल होगा उतना ही अधिक वह सामने वाले को प्रभावित करने में अधिक सक्षम और सफल होगा।

अभिवादन की चरण स्पर्श की क्रिया का वैज्ञानिक आधार है ''मानव शरीर का बायां भाग ऋणात्मक एवं दाहिना भाग धनात्मक होता है। जब दो व्यक्ति आमने-सामने खड़े होते हैं तो सहज रूप से शरीर की धनात्मक ऊर्जा वाला भाग ऋणात्मक भाग के सामने और ऋणात्मक ऊर्जा वाला भाग धनात्मक ऊर्जा वाले भाग के सामने आ जाता है। जब सामने वाला व्यक्ति स्वयं से श्रेष्ठ व्यक्ति का चरण स्पर्श करता है तो दूसरा व्यक्ति चरण स्पर्श करने वाले के सिर पर आशीर्वाद स्वरूप हाथ रखता है तो दोनों की समान ऊर्जाएँ परस्पर टकराती हैं और तब उन दोनों की ऊर्जाओं का मिलन होता है तब श्रेष्ठ ऊर्जा वाले की ऊर्जा अपने से कम श्रेष्ठ वाले व्यक्ति में प्रवाहित होने लगती है। इस दृष्टि से चरण स्पर्श की परम्परा सर्वाधिक प्रभावशाली मानी गई है।

अभिवादन की प्रस्तुति से एक अपरिचित व्यक्ति भी आत्मीय भाव के साथ स्नेहासिक्त होकर उसका अभिन्न बन जाता है। अभिवादन हमारी सांस्कृतिक परम्परा का अनूठा कृत्य है जिससे व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़कर स्नेह बंधन में बंध कर आत्मीयता के भावों से परिपूरित होकर आनन्दानुभूति करने लगता है। जब प्रणामकर्ता विनीत भाव से नतमस्तक होकर नमस्कार करता है तो मन में कृतज्ञता के भावों का अंकुरण होता है, जो हमारी भावात्मक एकता को भी पोषण प्रदान करता है। जब कहीं पर भी परस्पर राम-राम सा, जय श्री कृष्ण, सत श्री अकाल, अदाबअर्जे, वाहे गुरु दा खालसा की अमृत वाणी से अभिवादन होता है तो मन मंदिर में विशेष आध्यात्मिक विचारों को प्रश्रय मिलता है और एकात्म भावों में प्रगाढ़ता उत्पन्न होती है। जय हिन्द, वंदेमातरम् आदि शब्दों द्वारा परस्पर अभिवादन होता है तो राष्ट्रीय एकता के भावों को बल मिलता है। भाईचारे की भावना में वृद्धि होती है तथा जन जीवन में समरसता का प्रादुर्भाव होता है।

अभिवादन प्रक्रिया में विनीत भाव प्रमुख है। एक दूसरे के प्रति विनम्रता का भाव अनिवार्य होता है। महाकवि कालिदास ने रघुवंश 11/8 में विनय को राजा से लेकर रंक तक का सबसे बड़ा भूषण बताया है, जो नमस्कार से ही सुलभ होता है। नमस्कार मूल धातु 'नमः' से नमस्कार बना। 'नमः' का अर्थ है नमस्कार करना, वंदन करना। नमस्कार का मुख्य उद्देश्य है, जिन्हें हम नमन करते हैं, उनसे हमें आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक लाभ उपलब्ध हो। अभिवादन द्वारा नम्रता में वृद्धि होती है तथा अहंकार समाप्त होता है। कृतज्ञ भाव के साथ सात्विकता प्राप्त होती है। मंदिर में चढ़ते समय सीढ़ियों को भी नमन करते हैं। मन व बुद्धि इन आठ अंगों से ईश्वर की शरण जाना साष्टांग नमस्कार होता है। बड़े-बूढ़ों को नमन करने से उनमें विद्यमान देवत्व की शरण में प्रणामकर्त्ता प्रस्तुत होता है।

अभिवादन या प्रणाम तथा प्रत्याभिवादन हमारे देश के लौकिक सांस्कृतिक शिष्टाचार का ऐसा अनुष्ठान है, जिसमें आत्मीयता के द्वारा आत्मा के माधुर्य का निर्झर स्वतः ही बहता रहता है। जो रीति-रिवाज एवं समस्त कृत्रिम बंधनों को तोड़कर व्यक्ति को व्यक्ति से अदृश्य भाव डोरी से बाँधता है। पश्चिमी सभ्यता का अभिवादन समय सूचक है तथा इस्लाम संस्कृति

Rajasthan Education Department

का अभिवादन एकता का प्रेरक है परन्तु हमारे देश का अभिवादन शिष्टाचार, आत्मा के सौंदर्य को परस्पर बाँटने का अनुपम साधन है।

नारद पुराण में उल्लेख है कि अपने आराध्य या देवताओं की पूजा में अष्टांग या पंचांग प्रणाम करना चाहिए। आज भी हमारे जन जीवन में साष्टांग प्रणाम पूर्ण रूप से रचा-बसा है। पद्म पुराण के संस्कार प्रकाश में प्रयुक्त उल्लेख के अनुसार प्राचीन काल में ब्राह्मण अपनी दाहिनी भुजा कान की सीध में फैलाकर भद्र पुरुषों को त्वरित उच्चारण का अभिवादन किया करते थे। दोनों हाथ जोड़कर क्षत्रिय को छाती तक, वैश्य को कमर तक तथा शूद्र को पैर फैलाकर अभिवादन किया जाता था। विष्णु धर्म सूत्र के अनुसार (32-18) प्राचीन काल में तुलनात्मक श्रेष्ठताओं की दृष्टि से ब्राह्मण की श्रेष्ठता ज्ञान से, क्षत्रिय की श्रेष्ठता शक्ति से, वैश्य की श्रेष्ठता संपत्ति से तथा शूद्र की श्रेष्ठता आयु से मानी जाती थी।

पुराकाल में पद्म पुराण के अनुसार प्राचीन भारतवासियों का स्वभाव था कि ब्राह्मण से भेंट होने पर कुशलता, क्षत्रिय से अनामय, वैश्य से कुशल क्षेम तथा शूद्र से उसके स्वभाव के संबंध में संभाषण के पूर्व पूछा जाता था। मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से देखा जाए तो ऐसा तत्कालीन परम्पराओं तथा वर्ग विशेष की विशिष्टताओं का परिचायक था।

इसी प्रकार भारत भूमि पर संत परम्पराओं से लेकर वर्तमान भौतिकवादी युग तक भी अभिवादन प्रक्रिया निरंतर अस्तित्व में है। यद्यपि जाति, धर्म, संप्रदाय वर्ग विशेष की अभिवादन शैली में न्यूनाधिक भिन्नता हो सकती है किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि जन जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण के निर्माण, आत्मीयता के आविर्भाव, समरसता के संचरण तथा विश्व बंधुत्व की भावना को प्रश्रय देने के लिए अचूक औषध है, जो न केवल व्यक्ति की व्यक्ति से दूरियाँ ही तय करती है अपितु वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है, जो ऊर्जा तरंगों के आदान-प्रदान के साथ ही शक्ति संवर्धन तथा संवेदनशीलता के प्रसारण में महत्ती भूमिका का निर्वहन करती है। व्यक्ति स्नेह और निरभिमानता देने में अभिवादन प्रक्रिया सक्षम है। यह भारत देश की अतिविशिष्ट परम्परा है।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
पोस्ट आगूचा, भीलवाड़ा (राज.)-311022
**मो: 9413781610**

# शिक्षा में मूल्यपरकता की आवश्यकता

❐ **सुधा रानी तैलंग**

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। शिक्षा ही प्रजातंत्र का मूलाधार है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है व्यक्ति में नैतिक व मानसिक व्यवहारों की स्थापना कर कुशल नागरिकों का निर्माण करना। बालक का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का लक्ष्य है। शिक्षा के उद्देश्य व मापदण्ड हमेशा परिवर्तित होते रहते हैं। काल एवं परिस्थिति के अनुसार बदल जाते हैं। शिक्षा का उद्देश्य जीवन के लिए होना चाहिए क्योंकि शिक्षा द्वारा यदि हमारे भीतर नम्रता,त्याग, ईमानदारी, परिश्रम व आत्म विकास जैसे गुण जाग्रत न हो तो ऐसी शिक्षा अधूरी है। शिक्षा हमें शिक्षित कर ज्ञान रूपी प्रकाश से मन के विकारों को दूर कर आत्म निर्भर बनाती है। जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा वह है जो शरीर के लिए सुख एवं आत्मा के लिए शांति प्रदान करती है। सही अर्थों में शिक्षा किसी एक देश की नहीं अपितु समूचे विश्व का कल्याण करने का माध्यम है। जिस शिक्षा के द्वारा पूरे विश्व में होने वाले ज्ञान को अनुभूति रूप में प्राप्त किया जा सके। वही शिक्षा उद्देश्य पूर्ण व सार्थक शिक्षा कहलाती है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य **'शिक्षते उपादीयते विद्यामया सा शिक्षा'** अर्थात जिसके द्वारा ज्ञान उपादान किया जाए वह शिक्षा है।

**रवीन्द्रनाथ टैगोर** के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य आत्मा की स्वतंत्रता है।

**स्वामी विवेकानन्द** ने कहा कि शिक्षा को ज्ञान का पर्याय मानते हुए जीवन निर्माण, मानव के विकास व चरित्र निर्माण का साधन माना है।

**प्राचीन कालीन शिक्षा व्यवस्था-** प्राचीन काल में हमारे देश को विश्व गुरु कहलाने का गौरव प्राप्त था। हमारे देश की शिक्षा पद्धति, शिक्षा व्यवस्था ऐसी थी कि समूचे विश्व के कोने कोने से विद्वान शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालन्दा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में पूरे एशिया से विदेशी विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने आते थे। गुरु वशिष्ठ,सान्दीपनी, चाणक्य, गौतमबुद्ध, महावीर स्वामी, विवेकानंद व महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषों ने अपने ज्ञान के प्रकाश से समूचे विश्व को प्रकाशित कर दिया।

भारत ने ही विश्व को पतंजलि जैसे योग गुरु, आर्यभट्ट, रामानुज, भास्कर जैसे गणितज्ञ, चरक, सुश्रुत जैसे आयुर्वेदज्ञ, पाणिनी जैसे वैयाकरणाचार्य, भरतमुनि जैसे नाट्यविद्, वाल्मीकि, वेदव्यास, भवभूति, बाणभट्ट, कालिदास जैसे संस्कृत विद्वान दिए। सदियों तक पूरा विश्व ऋणी रहेगा। हमारे ज्ञान के भण्डार वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथो से ही प्रभावित होकर मैक्डॉनल, कीथ, मैक्समूलर, विलियम जोंस व गेटे आदि विदेशी विद्वानों ने न केवल संस्कृत भाषा का अध्ययन किया बल्कि भारतीय सभ्यता संस्कृत साहित्य भाषा से प्रभावित होकर वेदों का मनन व शोध किया व हमारे देश के ज्ञान विज्ञान का उजियारा पूरे विश्व तक पहुँचाया।

प्राचीन युग में गुरुकुल आश्रमों में शिक्षा समभाव, समरसता व एकरूपता से दी जाती थी। जहाँ सुदामा जैसे निर्धन छात्र थे तो वहीं राम कृष्ण जैसे युगपुरुष, राजपुत्रों ने भी गुरुकुल में एक साथ रह कर विद्या ग्रहण की। गुरुकुल में विद्यार्थियों को वेद शास्त्र के ज्ञान के साथ धनुर्विद्या, अस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या, मल्ल विद्या सभी तरह की तरह की शिक्षा दी जाती थी। छात्र गुरुकुल में पूरा काम स्वयं ही करते थे। ऐसे में बालकों का सर्वांगीण विकास हो जाता था। उनमें सदाचार, समानता, एकता, अनुशासन, त्याग, धर्म, तप, उदारता व परिश्रम के गुणों का स्वत: ही प्रादुर्भाव हो जाता था। गुरुकुल प्रणाली जीवन जीने की कला सिखाती है। ज्ञानवान व विवेकशील बनाती है। प्राचीन युग में हमारी शिक्षा सामाजिक दायित्वों, संस्कारों से जुड़ी हुई थी। तैतेरीय उपनिषद में आचार्य शिष्यों को गुरुकुल से विदा करते समय व्यावहारिक व सार्थक उपदेश देते थे।

सत्यम् वद। धर्मम् चर। स्वाध्यायान मा प्रमाद:।
यही शिक्षा का सार है।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

**वर्तमान शिक्षा पद्धति**–हमारे देश में अंग्रेजों ने ऐसी शिक्षा व्यवस्था को लागू किया जिससे कि शासकीय काम के लिए क्लर्को की टीम तैयार की जा सके। शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल डिग्री हासिल कर नौकरी प्राप्त करना था लेकिन आजादी के बाद हमारी शिक्षा प्रणाली शिक्षा नीति में कुछ परिवर्तन आए, सुधार हुए। हमारे देश की शिक्षा के स्तर में सुधार आया, साक्षरता दर के आंकड़े बढ़े। बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिला। लेकिन सरकारी स्कूलों के साथ हजारों तरह के प्राइवेट स्कूल भी खुल गए जिससे पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली के साथ शिक्षा नीति में भी अन्तर आया।

हमारी शिक्षा प्रणाली परिर्वतन होने के बाद भी आज की आवश्यकताओं के अनुरूप मानव का निर्माण नहीं कर पाई है। कई आयोग बैठाए गए। कई पंचवर्षीय योजनाएँ लागू की गई लेकिन उन पर अमल नहीं किया गया। क्योंकि आज की शिक्षा व्यावहारिक न होकर केवल रोजगार मूलक है। ज्ञान प्राप्ति के लिए शिक्षा का उद्देश्य खत्म हो गया है। छात्र भी गैस पेपर व गाइड कोचिंग व ट्यूशन के सहारे उत्तीर्ण होना चाहते हैं। बोझिल पाठ्यक्रम की इकाईयों में बंधा शिक्षक स्वंय भी आज पढ़ाने के लिए स्वतंत्र नहीं है।

**मूल्यों की गिरावट का कारण**–आज की हमारी बाल पीढ़ी मोबाइल, इन्टरनेट व टी.वी.के मायाजाल में फंसती जा रही है। आधुनिकता के मोह जाल ने आज के बच्चों को दिशाहीन कर दिया है। संयुक्त परिवारों के टूटने से एवं कामकाजी माता-पिता और बच्चों के बीच बढ़ती संवादहीनता के कारण नैतिकता, जीवन मूल्यों में तेजी से गिरावट आ रही है। आज के बच्चों का बौद्धिक ज्ञान तो बढ़ा है, शिक्षा के आँकड़ों में भी बढ़ोतरी हुई लेकिन बच्चों में अनुशासन, ईमानदारी, उदारता, सहनशीलता व बड़ों के प्रति सम्मान की भावना तेजी से विलुप्त होती जा रही है। इसका मूल कारण वैश्वीकरण के दौर में बढ़ता मीडिया का प्रभाव व शिक्षण में विलुप्त होती नैतिकता व मूल्य परक शिक्षा को कहा जा सकता है।

आज के दौर में आए दिन भ्रष्टाचार, चोरी, हिंसा, लूटपाट, आंतकवाद जैसी घटनाएँ आए दिन घटित हो रही है। उसमें भी ज्यादातर शिक्षित पढ़े-लिखे लोग भी शामिल रहते हैं। डिग्री प्राप्त कर भी युवा पीढ़ी को रोजगार नहीं मिलने पर या पढ़ते समय ही कुसंगति के कारण वो कई बार गलत राह पकड़ लेते हैं तो उनसे शिक्षित होने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि शिक्षा के द्वारा उनके भीतर सुसंस्कार नहीं है। ये आज की शिक्षा प्रणाली व सामाजिक परिवर्तन का ही दोष है कि सब एक दूजे से आगे बढ़ना चाहते हैं। अंकों की गणित में आगे निकलने की होड़ में नकल कर अच्छे अंकों से पास होने की कोशिश करते हैं। बढ़ती महत्वाकांक्षा के कारण आए दिन बच्चे मनचाहा परिणाम न आने पर नकारात्मक कदम उठा लेते हैं। ऐसे में मूल्यपरक शिक्षा ही आज की बाल पीढ़ी, युवा वर्ग को संस्कारवान बना सकती है।

**मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता क्यों?** आज की पीढ़ी अपने अन्तर्मन की आवाज नहीं सुनती। यदि सुनती तो वे कभी भी गलत काम नहीं करते क्योंकि शिक्षा व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाती है उसका चरित्र निर्माण करती है। ऐसी शिक्षा क्या जो उसे मानव से दानव बना दे। उसको नीचा गिरा दे। ऐसे में मूल्यपरक शिक्षा नैतिक मूल्यों को आरोपित कर शिक्षा का उजियारा फैलाए तो निश्चित ही भावी पीढ़ी संस्कारवान बन सकती है।

निस्संदेह यह चिन्तन व मनन का विषय है। भारत की विकासशील स्थिति में जनसाधारण की शिक्षा में प्रति धारणा बदली है। ऐसे में शिक्षा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आध्यात्मिक आधार पर गंभीरतापूर्वक चिन्तन करना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति शुरू से ही अध्यात्म प्रधान रहने से मूल्यों के प्रति हमारा गहरा विश्वास रहा है लेकिन वैश्वीकरण के युग में पाश्चात्य संस्कृति के कारण ही हम भौतिकता के पीछे भाग रहे हैं। हमारे मूल्यों में गिरावट आई है।

आज हमारे समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। आदर्श जीवन मूल्यों पर प्रहार होने से युवा पीढ़ी, बाल पीढ़ी दिशा हीन हो रही है। सामाजिक व सांस्कृतिक व मूल्यों के भी तीव्र गति से ह्रास हो रहा है। आज की शिक्षा कोरा किताबी ज्ञान दे रही है। व्यावहारिक ज्ञान आज की शिक्षा से कोसों दूर है। ऐसे में आज की पीढ़ी संस्कारहीन अनुशासनहीन होती जा रही है। बालक के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक है कि उसे नैतिक शिक्षा दी जाए।

ऐसे में मूल्यों से जुड़ी हुई आधुनिक ज्ञान विज्ञान पर आधारित शिक्षा की आज देश को आवश्यकता है। किशोरावस्था विद्यार्थियों के जीवन की महत्त्वपूर्ण अवस्था है। ऐसे समय अच्छी आदतों का विकास कर उनका चरित्र निर्माण किया जा सकता है। आज के बदलते परिवेश में बच्चों को जीवन मूल्यों की महती आवश्यकता है। वर्तमान परिस्थितियों में समाज में फैल रहे सांस्कृतिक प्रदूषण व संस्कारों की रुढ़ियाँ समझने की प्रवृत्ति आज की पीढ़ी को निरन्तर अपने जीवन मूल्यों से दूर करती जा रही है ।

परिवार, समाज व विद्यालय के द्वारा जीवन मूल्यों की विकसित किया जा सकता है। मूल्यों को पढ़ाया नहीं जा सकता बल्कि यदि उन्हें समुचित वातावरण, परिवेश मिलेगा तो विद्यार्थी के द्वारा स्वयंमेव ग्रहण किए जाते है। हमें भी अपने व्यवहार व आचरण को उनके सामने आदर्श रूप में प्रस्तुत करना होगा। आज कोई विद्यालय हरिश्चन्द्र नाटक का मंचन नहीं करवाता। जिसके प्रभाव से कोई बालक महात्मा गाँधी बन पाए।

आज शिक्षा का लक्ष्य केवल पढ़-लिख कर रोजगार प्राप्त करना ही रह गया है। मुंशी प्रेमचन्द ने भी कहा है कि जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है। डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है हमारा सेवाभाव, नम्रता व सरलता। अगर ये डिग्री नहीं मिली और हमारी आत्मा जाग्रत नहीं हुई तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।

महात्मा गाँधी भी मूल्यपरक शिक्षा के पक्षधर रहे हैं। वे स्वावलम्बन की मूल्यपरक शिक्षा जिसमें गणित, भूगोल, विज्ञान के साथ दस्तकारी की शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के साथ दी जाए।

बालक के बौद्धिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक है कि उसे नैतिक शिक्षा दी जाए। ताकि वे कुशल, श्रेष्ठ नागरिक बनें। उनमें अनुशासन, आत्म सम्मान,

Rajshala Education Department

कर्त्तव्य निष्ठा व प्रेमभाव जागे। नैतिक शिक्षा से बालकों के व्यावहारिक जीवन में उदारता, परोपकार व नम्रता के गुण आए। संस्कार जाग्रत हों। आज के बालक कल के नागरिक देश के भविष्य निर्माता है। ऐसे में मूल्य परक शिक्षा से जोड़ कर ही उन्हें बेहतर नागरिक बनाया जा सकता है। राष्ट्र की उन्नति के लिए शिक्षा व संस्कृति के बीच अटूट संबंध हैं।

विगत वर्षों से लगातार वर्तमान शिक्षा में मूल्यपरक शिक्षा को सम्मिलित करने की बात कही जा रही हैं क्योंकि मानव जीवन में मूल्यों का अत्यंत महत्त्व है वो फिर चाहे नैतिक मूल्य हो, सामाजिक मूल्य हो या सांस्कृतिक मूल्य।

मूल्यों के बिना शिक्षा अधूरी है। हमारे जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से जुड़ा है, मूल्यों पर आधारित है। बालक अपने बाल्यकाल में ही मूल्यों को अपने घर-परिवार, पास पड़ोस, विद्यालय, मित्रों व समाज से सीखना शुरू करता है। यदि उसे उत्तम वातावरण व स्वस्थ परिवेश मिल जाए तो उसे मूल्य ग्रहण करने में कोई कठिनाई नहीं होती। धीरे-धीरे वह इन मूल्यों को आत्मसात कर अपने जीवन क्षेत्र का आधार बना लेता है।

मूल्यों का आत्मसात करने व मूल्यों की श्रेष्ठता का निर्धारण करने में शिक्षा की महती भूमिका है। उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा, गुण-अवगुण, उच्च-निम्न का ज्ञान व्यक्तियों को शिक्षा के द्वारा ही ज्ञात होता है। महान दार्शनिक अरस्तु ने भी कहा है कि शिक्षित मनुष्य अशिक्षित मनुष्य से उतना ही श्रेष्ठ है जितना कि मृतक से जीवित। शिक्षा के द्वारा यदि हमारे नम्रता, सादगी, आत्मविकास, अनुशासन, ईमानदारी व सेवा के गुण नहीं जागृत हो तो ऐसी शिक्षा व्यर्थ है। मूल्य सबंधी ज्ञान के बिना शिक्षा के मूल उद्देश्य को हम कभी प्राप्त नहीं कर सकते है।

शिक्षा द्वारा मूल्यों का विकास वैयक्तिक राष्ट्रीय व वैश्विक संदर्भों में एक महत्त्वपूर्ण उपागम है जिसकी आज महती आवश्यकता है। वैश्विक शांति, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, समानता जैसे जीवन के शाश्वत मूल्यों के साथ व्यक्तिगत मूल्यों के विकास व निरूपण के लिए मूल्य शिक्षा एक महत्वपूर्ण अभिकरण है। मूल्य परक शिक्षा ऐसे वैयक्तिक गुणों व जीवन मूल्यों के विकास पर बल देती है जिससे कि व्यक्ति के सभी स्तरों या पक्षों का संतुलित विकास हो सके।

शिक्षा लोगों की मानसिकता व दृष्टि कोण में बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम है। आध्यात्मिक चेतना व पूर्ण समर्पण से प्रेरित आत्मबल ही दी जाने वाली शिक्षा को प्रभावशाली बना सकता है। किताबी ज्ञान नहीं। समाज में दिनों दिन जीवन मूल्यों का ह्रास हो रहा है क्योकि आज की शिक्षा आदर्शों से विहीन होती जा रही है। ऐसे में एक विषय के रूप में स्कूली स्तर व कालेज स्तर में मूल्यपरक शिक्षा को शामिल की बात कही जा रही हैं।

शिक्षा एक संस्कार की प्रक्रिया है। इसके द्वारा ही शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा को संस्कारित किया जा सकता है। व्यक्तित्व निर्माण किया जा सकता है। हमारे देश मे अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की होड़ लगी है। गरीब से गरीब व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित करना चाहता है। ऐसे में आज की पीढ़ी जीवन मूल्यों से दूर होती चली जा रही है। हमारी पीढ़ी सीता, सावित्री के जीवन चरित्र से दूर होती जा रही है। वही राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, गाँधी के उपदेश आज की पीढ़ी को ग्राह्य नहीं हैं। जबकि हमारे संस्कार आज भी उनसे जुड़े हैं। हम चाहे कितना भी पढ़ लिख जाए आधुनिक बन जाए पर हमारी संस्कृति व सभ्यता भारतीय ही रहेगी। पुरातन संस्कृति में आधुनिकता का समावेश करके ही हम भावी पीढ़ी को संस्कारित कर सकते हैं।

शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है। शिक्षा सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है।

मूल्य मानव द्वारा उपार्जित ऐसे अनुभव है जो उसके व्यवहार में प्रदर्शित एवं व्यवहार को निर्देशित करते है। उसमें सद्गुणों का संचार करके जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं।

मूल्यपरक शिक्षा न तो धार्मिक शिक्षा है न ही नैतिक शिक्षा। ये वस्तुत: धर्म निरपेक्ष शिक्षा है। जिसमें शाश्वत, परम्परागत, पुरातन व आधुनिक मूल्यों का सम्मिश्रण होता है। जिससे व्यक्ति के अन्तर्मन, आत्मा की शुद्धि हो उसकी दुष्प्रवृत्तियों, कुविचारों का स्वत: ही दमन हो जाए।

**वुड्स** के अनुसार मूल्य मानव व्यवहार के घटक व निर्धारण तत्व है वो आदर्श व ध्येय दोनों का कार्य करते है

**मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य-**

1. मूल्यपरक शिक्षा का मूल उद्देश्य बालकों को आदर्श नागरिक बनाना है। उनमें मानवीय गुणों व आदर्शों के प्रतिमानों की स्थापना करना है ताकि मानव मूल्यों का विकास हो सके।
2. मूल्यपरक शिक्षा धार्मिक शिक्षा नहीं है धर्म निरपेक्षता पर आधारित शिक्षा है। जिसका उद्देश्य विभिन्न धर्मो के मतों से अच्छे विचार व मूल्यों को ग्रहण कर बाल व युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाना है।

इसके साथ ही स्कूलों में ऐसे शिक्षक हो जो नैतिक मूल्य बच्चों में विकसित कर सकें। छात्रों में भी लगन, योग्यता व पढ़ने की इच्छा शक्ति हो। माता पिता और शिक्षक के सही मार्गदर्शन से ही देश को भ्रष्टाचार से मुक्त व स्वस्थ मानसिकता वाला बनाया जा सकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में केवल बौद्धिक ज्ञान पर ही बल दिया जा रहा है। सम्वेदनाओं को अनदेखा कर दिया गया है। ऐसे में शिक्षा में आई विकृतियों के दुष्परिणाम स्वरूप समाज में मूल्यहीनता, अनैतिकता, तनाव, भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। इसी को देखते हुए विगत वर्षों से मूल्य परक शिक्षा देने की बात कही जा रही है। ताकि आज की पीढ़ी संस्कारवान बन सके।

इक्कीसवीं सदी में आने वाले समय में शिक्षा ही एक ऐसा सशक्त माध्यम बन कर उभरेगी जो हमारी भावी पीढ़ी को एक बेहतर नागरिक, इंसान बनाते हुऐ उन्हें आत्मविश्वास से परिपूर्ण करेगी। वैश्विक धारा से जोड़कर राष्ट्र का नव निर्माण करते हुए समूचे विश्व में भारत को एक बार फिर से विश्व गुरु का दर्जा दिलाने में कामयाब होगी। ये ही हमारी सुखद संकल्पना, परिकल्पना है।

संस्कृत शिक्षक (सेवानिवृत)
सिमरन अपार्ट त्रिलंगा भोपाल (म.प्र.) 462039
**मो: 9301468578**

Rajasthan Education Department

जीवन कौशल

# हारिये न हिम्मत बिसारिये ना राम

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

यह दुनिया हिम्मत वालों की है। जो हिम्मती, साहसी होते हैं, दुनिया हसरत भरी नजर से उनकी ओर देखती है। दरअसल वे नायक होते हैं। विषम परिस्थितियों एवं अभावों के बीच वे कैसे राह बना लेते हैं, कैसे वे आवश्यक संसाधन जुटा लेते हैं, सब अचरज भरा होता है। नटशैल में कहें तो भंवर में उलझी नाव को पार लगा लेने का नाम ही हिम्मत है। जहाँ एक ओर कमजोर मन वाले पुरुष छोटे-छोटे कामों को भी दुरुह-दुष्कर समझते, उनसे बचते दिखाई देते हैं, वहीं हिम्मत वाले शूरमां बड़ी-बड़ी जोखिमों एवं खतरे के कामों के लिए जैसे इंतजार कर रहे होते हैं।

साहस के लिए तन की मजबूती से अधिक मन की मजबूती चाहिए होती है। दरअसल मनुष्य में दो तरह के प्राण होते हैं। पहला जैविक प्राण यानी तन का प्राण जिसके चले जाने पर इंसान मुर्दा कहलाता है और दूसरा होता है साहस का प्राण यानी मन का प्राण। **'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'** उक्ति के अनुसार साहसी प्राण वाले किसी भी रणक्षेत्र में मुकाबला करने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। वे जैविक प्राणों की परवाह नहीं करते। साहस के सहचर ऐसे सपूत इन प्राणों को न्यौछावर करते देर नहीं लगाते। जैविक प्राण चले जाने के बाद अपने उत्तम कर्मों की स्मृति के रूप में वे जिंदा रहते हैं। साहसी पुरुष संकल्पी एवं दृढ़ निश्चयी होता है। कठिन समय में भी वह साहस का दामन पकड़े रहता है। कहते हैं कि कठिन परिस्थितियों में साहस बनाए रखना यानी आधी मंजिल तय कर लेना। महाराणा प्रताप की पराजय में छिपी जय का यशोगान आज भी होता है। यह उनका साहस एवं स्वाभिमान ही तो था।

राजस्थानी के मूर्धन्य कवि कृपाराम ने 'राजिया रा दूहा' शीर्षक से शिक्षाप्रद दोहे लिखे हैं। उनका एक प्रसिद्ध दोहा है-

**हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नहीं।**
**करे न आदर कोय, रद कागद ज्यूं राजिया।।**

(हे राजन आदमी की कीमत हिम्मत से ही होती है। हिम्मत के बिना उसका न कोई मूल्य होता है और न ही पहचान। हिम्मत रहित मनुष्य को रद्दी कागज की मानिंद कोई नहीं पूछता।) अतः व्यक्ति को साहसी होना चाहिए। हिम्मत सूरों की पूंजी होती है। सूरवीर सब कुछ खो जाने पर भी साहस के बल पर उन्हें पुनः हासिल कर लेने का दम रखते हैं। अतः साहस सुरक्षित रखना चाहिए। ख्यातनाम पश्चिमी विचारक सर जैम्स मैथ्यू बेरी ने कहा है, ''साहस ही सब कुछ है। यदि साहस चला गया तो समझो सब कुछ चला गया।'' (Courage is everything. All goes if Couragoes)

हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध लोकोक्ति, 'हारिए न हिम्मत बिसारिए न राम' आखिर यही तो कहती है। हारिए न हिम्मत के साथ बिसारिए न राम का भावार्थ है कि हिम्मत पाकर व्यक्ति नीतिवान बना रहे। यह न हो कि हिम्मत व बल पाकर वह अनीति करने लग जाए। रावण महाबली था। गजब का साहस था उसमें लेकिन नीति पथ मर्यादा से भटक जाने के कारण उसे मरना पड़ा। राम में नीति एवं मर्यादामयी साहस दोनों होने के कारण वे न केवल विजयी ही हुए अपितु अखिल विश्व में पुरुषों में उत्तम 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' कहलाए। अतः साहस का सकारात्मक दिशा में प्रवाहित होना भी आवश्यक है। किसी के घर में आग लगा देना साहस नहीं है जबकि जलती आग को बुझाना और उसमें से किसी को निकाल लाना साहस है। साहसी के लिए यह नीतिवान स्थिति ही बिसारिए न राम है। किसी शायर ने बहुत खूब लिखा है-

**कमाले बुजदिली है, पस्त होना अपनी आँखों में,**
**थोड़ी सी हिम्मत हो तो फिर क्या नहीं हो सकता।**

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद हिम्मत को दाद देते हुए लिखते हैं, 'हिम्मत और हौंसला मुश्किल को आसान कर सकते हैं, आंधी और तूफान से बचा सकते हैं। कितना सुन्दर कहा है प्रेमचंद जी ने! ऐसे अदम्य साहसी न रुकते हैं और न झुकते हैं। वे तो बस चलते रहते हैं। बाबू जयशंकर प्रसाद की इस कालजयी रचना को मनपूर्वक एक बार गुनगुनाकर तो देखिए-

**हिमाद्रि तुंग श्रृंग से**
**प्रबुद्ध शुद्ध भारती,**
**स्वयं प्रभा समुज्ज्वला**
**स्वतंत्रता पुकारती।**
**अमर्त्य वीर पुत्र हो**
**दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,**
**प्रशस्त पुण्य पंथ है**
**बढ़े चलो, बढ़े चलो।**
**असंख्य कीर्ति रश्मियाँ**
**विकीर्ण दिव्य दाह-सी,**
**सपूत मातृभूमि के-**
**रुको न शूर साहसी।**
**अराति सैन्य सिंधु में,**
**सुवाड़वाग्नि से जलो,**
**प्रवीर हो जयी बनों**
**बढ़े चलो, बढ़े चलो।**

साहसी मनुष्य मूल्यपरक एवं धैर्यवान होता है। वह अधीर नहीं होता। वह आत्मबली होता है। धैर्य और आत्मविश्वास उसके आभूषण होते हैं। इनके बल पर वह घोर वैतरणी पार कर सकता है। मृत्यु से साक्षात्कार के समय भी साहस का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसे अनेक उदाहरण दुनिया के इतिहास में देखने को मिलते हैं। स्वामी श्रद्धानंद ने कल्याण मार्ग का पथिक की प्रस्तावना में लिखा है- 'मुझे भी मौत सिरहाने खड़ी दिखाई देती है। फिर अन्तःकरण में निराशा की लहर जब कभी उठती है, उसी समय श्रद्धा सागर में विलीन हो जाती है। मेरा जीवन आशातीत व्यतीत हुआ है, इसलिए जब तक दम में दम है, तब तक मनुष्य को बेदम नहीं होना चाहिए।'

साहस मनुष्य के संकल्पों की कसौटी होता है। जिसका जितना बड़ा साहस है, समझ लीजिए कि उसके संकल्प एवं सपने भी उतने ही बड़े होंगे। सच्चे साहसी में उसके सामने आने वाली विपत्तियों से बुद्धिमत्तापूर्ण टकराने और टकराकर भी स्वयं के अस्तित्व की रक्षा करने की अद्भुत योग्यता होती है। वह अपने भाग्य का आप निर्माता होता है। भाग्य साहसियों के संग चलता है। वह उनका साथ देता है। जीवन भर जंगलों की ठोकर खाने वाले महाराणा प्रताप को विश्व का सर्वोच्च विजयी एवं साहसी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी बल्कि ऐसा सुनकर प्रसन्नता एवं प्रेरणा ही मिलेगी। उनकी पराजय में छिपी जय को आंक पाना सरल नहीं है। बस इसे तो अहसास ही किया जा सकता है। महाराणा प्रताप के साहस की बराबरी वाला दूसरा

Rajasthan Education Department

उदाहरण संपूर्ण विश्व में विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलता।

साहसपूर्वक कर्त्तव्य पर चलते यदि किसी को भौतिक हार का सामना करना पड़े तो वह हार भी सराहनीय होती है। उस हार में जीत छिपी होती है। पर्वतों को उखाड़ने की प्रक्रिया में यदि हाथियों के दांत टूट जाए तो भी वे प्रशंसा के पात्र होते हैं। हार के साथ हिम्मत की जुगलबंदी असाध्य को साध्य बना देने की कुबत रखती है। खलील जिब्रान लिखते हैं, **'पराजय, मेरी पराजय! और उस पर मेरी न मिटने वाली हिम्मत! मैं (हिम्मत) और तू (पराजय) मिलकर तूफां के साथ कह-कहे लगाएंगे।'**

साहसी पुरुष निरंतर चलने में विश्वास करते हैं। वे गिरने को इस प्रक्रिया का एक चरण मानते हैं। जीवन को परमात्मा की ओर से मिला एक उपहार मानकर उसका आनंद लेते हैं। हँसते गाते समय बिताते हैं। फिल्म जमीर (1975) के एक तराने में नगमाकार ने लिखा है-

**तेरे गिरने में भी तेरी हार नहीं**
**क तू आदमी है, अवतार नहीं,**
**जो हो देश वो वेश बना प्यारे**
**चले जैसे भी काम चला प्यारे**
**प्यारे तू गम ना कर**
**जिंदगी हँसने गाने के लिए है पल, दो पल...**

इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन रणक्षेत्र में साहस का दामन थाम कर परोपकार की भावना के साथ एक-एक पल का यथोचित आनंद ले। कायरों का जीवन उनकी दैहिक मृत्यु के साथ विराम हो जाता है जबकि साहसी सदैव जिंदा रहते हैं। जब देह नहीं रहती, तब कीर्ति के रूप में जिंदा रहते हैं। सब उनको स्मरण करते हैं, उन जैसा बनने की प्रेरणा लेते हैं। गुजराती में इन साहसी शूरमाओं के सम्मान में कहा गया है-

**साहसे कोलंबस गयो, नवी दुनियां मां,**
**साहसे नेपोलियन भिड्यो, यूरोप आखा मां,**
**साहसे ल्यूथर ते थयो, पोपनी सामां,**
**साहसे स्काटे देवु, रे वाळ्युं जोता मां,**
**साहसे सिकन्दर नाम अमर सहु जावै।**

(साहस के कारण ही कोलम्बस नई दुनिया में गया। साहस के कारण ही नेपोलियन सारे यूरोप से भिड़ा। साहस के कारण ही लूथर ने पोप का विरोध किया। साहस के कारण ही स्काट ने देखते ही कर्ज चुका दिया। साहस के कारण ही सारी दुनिया में सिकन्दर का नाम अमर है, यह किसी से छिपा नहीं है।)

संसार के महानतम वैज्ञानिक सर अल्बर्ट आइंसटीन एक बालक के पत्र के उत्तर में उसे महान बनने का मंत्र देते हुए लिखते हैं, 'हिम्मत न हारो। बचपन में लोग मुझे बुद्धु कहते थे। लड़के मेरी पीठ पर काठ का उल्लू लिख दिया करते थे। प्रश्नों का सही उत्तर न दे सकने के कारण स्कूल में प्रायः रोज ही मुझे सजा मिलती थी। अध्यापक कहा करते थे कि मैं सात जन्म लेकर भी गणित विषय में पास नहीं हो सकूँगा। इतने पर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। लगातार असफलताओं को सामना करते हुए मैं विद्या अध्ययन में लगा रहा और उसी का फल है, जैसा कि तुम मुझे आज देख रहे हो। मैंने हिम्मत नहीं हारी और अपना रास्ता बनाया। यदि तुम भी महान बनना चाहते हो तो कभी भी हिम्मत मत हारना। हमेशा हिम्मत वाले व आशावान बने रहो। यही महान बनने का सूत्र है।' इति शुभम।

संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)-334401
**मो: 9414060038**

## ज़ाजम कहाँ गई?

ज़ाजम... नाम लेते ही मस्तिष्क में मोटे सूत से बनी चटाई या दरी का चित्र सा उभर आता है, जो अक्सर वार-त्योहार या उत्सव-आयोजनों पर बैठने के लिए जमीन पर बिछाई जाती रही है तथा जिस पर लोगों के द्वारा बैठकर जमीनी हकीकत की बातें और विचार साझा किए जाते रहे हैं। ऐसी ही एक ज़ाजम विद्यालयों में भी होती थी, लेकिन सवाल यह है कि अब वो कहाँ गई?

एक समय था जब विद्यालयों में उत्सव आयोजनों पर ज़ाजम बिछती और उन पर शिक्षक-अभिभावकों की बैठकें होती रहती थी, उन बैठकों में चाय के साथ ही विद्यालयों में दूध शक्कर से लेकर वहाँ पढ़ने वाले बच्चों की शिक्षा, विकास, व्यवसाय तक की समस्याएँ शिक्षकों और अभिभावकों के मध्य साझा होती थी और उन समस्याओं के हल भी त्वरित ही निकल आते थे। विद्यालय में चाय की चुस्कियों के साथ ही अभिभावकों द्वारा हँसी मजाक में विद्यालय स्टाफ को उनकी कमियों की तरफ भी इशारा किया जाता था तो विद्यालय स्टाफ द्वारा भी अभिभावकों को विद्यालय की जरूरतों से अवगत कराया जाता था। अभिभावकों को उनके बच्चों की क्वालिटी को बढ़ाने के उपाय बताए जाते तो विद्यालय स्टाफ को भी उनके परिश्रम पर सार्वजनिक शाबाशी दी जाती थी।

समय परिवर्तन के साथ ही विद्यालय की वो ज़ाजम भी विद्यालयों के किसी कमरे में धूल-मिट्टी से अटी किसी कोने या आलमारी में पड़ी हुई होगी। ऐसा नही है कि अब शिक्षक - अभिभावक बैठकें नही होती बल्कि उन बैठकों का स्वरूप बदल गया है। अब वो बैठकें कुर्सियों पर होती हैं। विडंबना यह है कि कुर्सियों की संख्या सीमित होने के कारण उन बैठकों का दायरा भी सीमित हो गया है। अब शिक्षक अभिभावक बैठकें निश्चित समय पर मात्र कुछ समय के लिए होती हैं और अधिकांशतया तो वो भी रिकार्ड के लिए कागज की तरह ही कागज़ी।

विद्यालय की उस ज़ाजम को उठाने और बिछाने में कठिनाई अनुभव करने वाले लोगों के लिए यह समझना बहुत आवश्यक है कि उस ज़ाजम के बगैर विद्यालय और उस विद्यालय के स्टाफ व विद्यार्थियों का उचित विकास असंभव और अधूरा ही है। जो ज़ाजम अनेक बुद्धिजीवी लोगों का विचार करने का साझा विकल्प थी, जिस पर लक्ष्य भेद हेतु अभेद्य रणनीतियाँ बनती थी उस ज़ाजम के बगैर कोई लक्ष्य किस प्रकार स्वयं को प्राप्त कर सकता है?

वर्तमान समय में विद्यालय और समाज के बीच की खाई को पाटने का एक अचूक रास्ता वो ज़ाजम ही है, जिसे विद्यालय के बंद कमरों की आलमारियों से बाहर लाना होगा और उसे उपयोग में लेना होगा। विद्यालय की उस ज़ाजम के प्रति अभिभावकों की रुचि को प्रोत्साहित और पोषित करना होगा। तब ही सही अर्थों में विद्यार्थियों और विद्यालय की उन्नति और उत्कर्ष संभव है।

**इन्द्रा** अध्यापिका श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर (राज.), **मो: 9680693930**

Rajasthan Education Department

## परीक्षा विशेष

# परीक्षा परिणाम उन्नयन

❒ गोविन्द नारायण शर्मा

**उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न ही मनोरथैः।**
**न हि सुप्तस्य सिंहस्य मुखेप्रविशन्ति मृगाः।।**

परिश्रम करने से ही कार्यो में सफलता मिलती है,केवल मन में इच्छा मात्र से नहीं। सोए हुए शेर के मुख में कोई भी पशु निवाला बनकर नहीं जाता है।

पिछले वर्षों में विश्वव्यापी कोविड-19 महामारी के कारण राज्य सरकार द्वारा एहतियात के रूप में लिए गए निर्णयों के कारण विद्यालयों में नियमित रूप से अध्ययन कार्य नहीं हो सका। यद्यपि आनॅलाइन माध्यम से विद्यार्थियों को अध्ययन के कार्य में संलग्न रखा गया। परीक्षा में सम्मिलित हुए बिना ही कक्षोन्नति की गयी। ऐसे में विद्यार्थियों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रतिशत कुछ मायने में कम हुआ है। इस बात से हम सभी शिक्षाविद् अभिभावक एवं विद्यार्थीगण अच्छी तरह से वाकिफ हैं। अब जब आधुनिक युग प्रतिस्पर्धा का युग है। ऐसी स्थिति में साधारण अंकों के साथ केवल उत्तीर्णांक प्राप्त कर भविष्य में प्रतियोगी परीक्षाओं में अपने आप को साबित कर पाना दुरूह कार्य है। सफलता पूर्व तैयारी पर निर्भर करती है।

अगले दो माह बाद मार्च में शिक्षा सत्र 2022-23 की स्थानीय एवं बोर्ड परीक्षाएँ सन्निकट है। छात्रों, अभिभावकों एवं शिक्षकों को चाहिए कि माध्यमिक शिक्ष बोर्ड की परीक्षाओं की समयबद्ध रूप से योजना बनाकर उस पर अमल करना शुरू करें तो परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से आश्चर्यजनक अभिवृद्धि परिलक्षित होगी। इस कार्य में न केवल विद्यार्थी अपितु माता-पिता अभिभावक शिक्षक की भी बड़ी अहम भूमिका होगी। यह त्रिस्तरीय व्यवस्था निश्चय ही लाभकारी होगी और सभी विद्यार्थी गुणात्मक परीक्षा परिणामों के साथ सफलता का वरण करेंगे।

**स्वाध्यायात् मा प्रमदः (तैत्तिरीयोपनिषद्)**
**अपने अध्ययन से कभी भी प्रमाद नही करना चाहिए।**

**आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।**
**नास्त्युद्यमसमो बन्धुःकृत्वा यं नावसीदति।।**

विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने जीवन में कभी भी स्वाध्याय से आलस्य/प्रमाद नही करें, क्योंकि आलस्य ही मनुष्य के शरीर में निवास करने वाला सबसे बडा शत्रु होता है। परिश्रम से बढ़कर कोई बन्धु/मित्र नहीं जिसे करने के बाद कोई भी व्यक्ति अवसाद ग्रस्त नही रहता है। परिश्रमी व्यक्ति का सदैव सफलता वरण करती है।

- विद्यार्थियों को चाहिए कि अपना स्वयं का लक्ष्य निर्धारण करें।
- विद्यार्थी स्वयं अपने स्तर पर अपना अध्ययन समय विभाग चक्र बनाएँ, जिसमें न्यूनतम 6 से 8 घण्टे का अध्ययन समय हो।
- सभी विषयों के लिए समय निर्धारण करे। सभी के लिए समान अंक भार एवं महत्त्व समान होता है।
- घर में पढ़ाई के लिए एकान्त स्थान का चयन करें, जहाँ पर आप शान्त एकाग्रचित मन लगाकर बिना किसी बाधा विघ्न के अध्ययन कर सके।
- पाठ योजना अंक विभाजन के अनुसार तैयारी करें कठिनतम बिन्दुओं के नोट्स बनाए एवं विद्यालय में जाने पर उन समस्याओं का समाधान अपने शिक्षकों से पूछे जो आपको स्वाध्याय के समय महसूस हुई। इसमें किसी प्रकार की झिझक महसूस न करें।
- लिखने का अभ्यास करें कम समय में अधिक सुन्दर स्वच्छ सुपाठ्य शुद्ध लेखन सटीक जवाब हो।
- दिए गए गृह कार्य को नियमित रूप से हल करें इससे आपकी विषय पर पकड़ बनेगी। सभी बिन्दुओं को अध्ययन में शमिल करें।
- जहाँ पर आवश्यक हो गणित, जीवविज्ञान, भौतिक, रसायन, अर्थशास्त्र जैसे विषयों में नामांकित चित्र, आरेख, ग्राफ, नक्शे का अभ्यास भी नियमित रूप से करना चाहिए।
- अपने घर में अध्ययन सामग्री यथा विषय सम्बन्धी चार्ट, मॉड्ल, नक्शे, ग्लोब, सन्दर्भ पुस्तकें जो आप अपने पुस्तकालय से प्राप्त कर सकते हैं।
- बोर्ड के गत वर्षो के प्रश्न पत्र, मॉडल प्रश्न पत्र, प्रयास के प्रश्न पत्र आदि को नियमित रूप से समयबद्ध रूप से हल करना लाभप्रद रहता है। दोहरान करते रहें ।
- जो बच्चे गत वर्षो में बोर्ड की मेरिट में आए हैं उनकी उत्तर पुस्तिकाओं का अध्ययन करना एवं दिए गए उत्तरों के आधार पर स्वयं की तैयारी को परखना। कठिन विषयों पर अधिक ध्यान दे।
- अध्ययन के लिए ब्रह्म मुहूर्त सुबह 4 बजे से 8 बजे तक अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त रहेगा रात्रि में 7 से 10.30 बजे तक अपनी सुविधानुसार बदलाव सम्भव है।
- परीक्षा को सहजता से ले अपने ऊपर हावी न होने दे। याद कर लेने के बाद अति आत्म विश्वास से बचे ऐसी स्थिति में गलतियाँ होने की संभावनाएँ होती है।

**काक चेष्टा बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैव च।**
**अल्पाहारी गृह त्यागी विद्यार्थी एते पंच लक्षणं।।**
**धन धान्य प्रयोगेषु विद्या संग्रहेषु च।**
**आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्ज सुखी भवेत्।।**

महान शिक्षाविद् चाणक्य ने अपनी नीति में विद्यार्थियों के लिए लिखा है कि विद्या संग्रह करने में कभी भी संकोच नहीं करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति सदैव सुखी रहते हैं।

- **अभिभावक के दायित्व** – अपने बच्चे किसे प्यारे नहीं होते और कौन नहीं चाहता कि उनका बच्चा बोर्ड परीक्षाओं की मेरिट में आकर अपना व विद्यालय का नाम रोशन न करे। सभी माता-पिता की ख्वाहिश होती है कि उनके बच्चे अव्वल आवे।
- इसके लिए उनको चाहिए कि बच्चे को तनाव व भय मुक्त शिक्षण वातावरण प्रदान

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

करे।

- अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से कदापि न करें उनमें किसी भी प्रकार की हीन भावना पैदा करने वाले विचार उनके सामने न करें।
- उन्हे सम्बलन प्रदान करें कि आप भी बहुत अच्छा कर रहें है। सभी अंगुलियाँ जिस प्रकार एक समान नहीं होती उसी प्रकार थोड़ा बहुत अन्तर तो होता आया है। इसमें चिंतित होने की कोई बात नही है।
- बच्चों के नियमित खान-पान, पौष्टिक आहार, उत्तम स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।
- नियमित रूप से उसके साथ संवाद कायम करें, उसे प्रोत्साहन प्रदान करें।
- यदि बच्चा ई-लर्निंग कर रहा है तो उसका समय निर्धारण हो ताकि अध्ययन सामग्री के अतिरिक्त समय अपव्यय न करें और अपने लक्ष्य से न भटके।
- यदि अध्ययन के तनाव को दूर करने के लिए बच्चा अपना मन माफिक कोई धारावाहिक या अन्य मनोरंजक, शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक कार्यक्रम देखना पसन्द करता है, तो माता पिता को इसका भी ध्यान रखाना चाहिए ताकि पढ़ाई की जो बोरियत होती है उससे वह निजात पा सके।
- दोस्तों के साथ भी सकारात्मक संवाद होना चाहिए। एक-दूसरे के साथ समस्या व समाधान का आदान प्रदान लाभकारी है।
- समय-समय पर विद्यालय में आयोजित होने वाली अभिभावक शिक्षक बैठक में जाकर बच्चे की नियमित उपस्थिति, गृह कार्य, अभ्यास कार्य, प्रायोगिक कार्य, अध्ययन अन्य साथियों के साथ व्यवहार एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। शिक्षको से भी मिलकर उसकी यदि कोई समस्या है,तो उसका समाधान निकालना चाहिए।

**विद्यालय स्तर पर तैयारी–** सभी संस्था प्रधानों, शिक्षको को चाहिए कि अपने विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परीणाम उन्नयन के सकारात्मक प्रयास किए जाने चाहिए जिसके लिए एक कार्य योजना बनाकर प्रत्येक शिक्षक प्रति विद्यार्थी के अनुरूप कार्य योजना बनावें जिसमें प्रतिभावान छात्र, मध्यम श्रेणी एवं कमजोर या केवल उत्तीर्णांक प्राप्त करने वाले बालकों को सम्मिलित किया जाना चाहिए एवं तदनुसार निदानात्मक उपचारात्मक शिक्षण योजना बनाकर क्रियान्विति की जावे तो विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी का श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

बच्चों को विभिन्न प्रकार की केन्द्र व राज्य सरकार की प्रोत्साहन/छात्रवृत्ति योजनाओं की भी जानकारी दे कि इस प्रकार मेरिट में आने पर आपको क्या-क्या पुरस्कार मिल सकते हैं।

- बच्चें को कक्षा 10/12 की तैयारी कक्षा 9/11 से ही प्रारम्भ करवा देनी चाहिए क्योंकि कक्षा 9 व 10 कक्षा 11 व 12 का पाठ्यक्रम लगभग समान ही होता है। यूं कह सकते हैं कि कक्षा 10/12 की बोर्ड परीक्षा की पहली सीढ़ी कक्षा 9/11 ही है। यहीं से बालक की बोर्ड परीक्षा की तैयारी व रुचि का पता चल जाता है एवं उसके कमजोर पक्ष का भी ज्ञान हो जाता है जिन पर कार्य किए जाने की नितान्त आवश्यकता है।
- विद्यालय में आयोजित होने वाली प्रथम/द्वितीय परख से अर्द्धवार्षिक परीक्षा के परिणामों के आधार पर विश्लेषण करते हुए जुलाई से ही निदानात्क उपचारात्मक शिक्षण योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करें।
- विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति हो जिसमें अध्ययन अध्यापन गतिविधि में बालक सक्रियता से जुड़ा हो।
- यदि किन्हीं कारणों से बालक अनुपस्थित रहता है, तो अभिभावकों से तत्काल सम्पर्क करते हुए कारणों को जानकर निदान करना चाहिए।
- बच्चे का गृह कार्य साप्ताहिक रूप से अनिवार्य रूप से जाँच किया जाना चाहिए जिससे उसके हस्तलेख, शुद्धता, सुन्दरता, सुपाठ्य परिमित शब्द लेखन के बारे में जानकारी व आवश्यक प्रायोगिक कार्य की देख रेख हो पाएगी। भाषा विषयों में व्याकरण का अभ्यास हो ।
- शिक्षकों को चाहिए कि गृह कार्य जाँच पूर्ण गंभीरता के साथ करना चाहिए एवं आवश्यक सुधार संशोधन करवाकर गलती को दुरूस्त करवाए। पुनर्मूल्यांकन समयबद्ध रूप से होना चाहिए जिससे ग्रहण करने की क्षमता का पता चल सकेगा।
- शिक्षक को अपने कर्त्तव्य की महती भूमिका को समझना होगा। बच्चे को स्वयं सोचने का अवसर प्रदान करना। अधिगमकर्ताओ के उत्साहवर्धन हेतु पुनर्बलन का प्रयोग करना।
- शिक्षक व्यक्तिगत विभिन्नताओं, शिक्षण व्यूह रचना, सुधारात्मक योजना, परिवर्तन निरूपण कठिनाइयों को दूर करना, नियोजनात्मक आकलन व कक्षोत्तर आकलन करें।
- कक्षा परख, ईकाई परख, साप्ताहिक, मासिक परख के माध्यम से आकलन करते रहना परीक्षा परिणाम उन्नयन में सहायक सिद्ध होगा। गत सत्रों के प्रश्न पत्र, मॉडल प्रश्न-पत्र व विषय विशेषज्ञों की कक्षाओं का आयोजन करवाकर विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करवाना चाहिए।
- शिक्षण में नवीन तकनीक नवाचार ई-कक्षाओं का उपयोग भी विद्यार्थियों के लिए अति लाभकारी रहेगा। गुणात्मक अभिवर्द्धन में सर्वाधिक प्रयास शिक्षक के द्वारा ही किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थी परिभ्रमण कार्यक्रम का आयोजन निकटतम ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक, भौगोलिक, सांस्कृतिक कलात्मक दृष्टि से पाठ्यक्रम से जुड़े स्थलों का भ्रमण भी बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।
- बच्चे की वास्तविक प्रगति से माता-पिता को शिक्षक अभिभावक बैठकों में समय-समय पर अवगत करवाना चाहिए ताकि यथोचित समाधान करवाया जा सके।
- विद्यार्थियों के प्रयासों की सदैव सराहना करें उन्हे शाबासी दे, पीठ थपथपाएं।
- विद्यालय स्तर पर संख्यात्मक एवं गुणात्मक परिणाम उन्नयन कार्यक्रम की समीक्षा कर आवश्यक कदम उठाए जाए।
- इसके लिए प्रत्येक विद्यालय में सप्ताह के सातों दिवसों के लिए विद्यालय समय से पूर्व एवं पश्चात् एक घण्टे की अतिरिक्त कक्षाओं का नियमित संचालन परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु उपचारात्मक शिक्षण का विकल्प बेहतर होगा।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
केकडी, अजमेर (राज.)
**मो: 9660408232**

Rajasthan Education Department

# आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2023

**1. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन एवं 'सखा संगम' कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में।**

**2. सत्र 2023-24 में नवीन मान्यता/क्रमोन्नति/माध्यम, नाम, भवन/स्थान, वर्ग परिवर्तन/अति.विषय, अति. संकाय, अति माध्यम आदि के आवेदित प्रकरणों के संबंध में।**

## 1. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन एवं 'सखा संगम' कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/SDMC/22423/2022/09 दिनांकः 23.12.2022 ● विषयः राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन एवं 'सखा संगम' कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में। ●परिपत्र।

राज्य के प्रत्येक बालक-बालिका हेतु उनके निवास के समीपवर्ती स्थान पर उच्च माध्यमिक स्तर तक की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने हेतु राज्य सरकार द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाएं संचालित की जा रही है। इसके सुखद परिणाम के रूप में निकट भविष्य में ही राज्य की प्रत्येक ग्राम पंचायत में उच्च माध्यमिक स्तर तक की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता का लक्ष्य पूर्ण होने जा रहा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्रत्येक विद्यार्थी तक सहज एवं व्यावहारिक पहुँच की निरन्तर सुनिश्चितता हेतु स्थानीय जन समुदाय की विद्यालय के प्रबंधन एवं संचालन में सतत् भागीदारी आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु विभागीय निर्देशानुरूप विद्यालयों में अध्यापक-अभिभावक परिषद् तथा विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (SDMC)/विद्यालय प्रबन्धन समिति (SMC) जैसी प्रभावकारी समितियों के गठन का प्रावधान किया गया है।

शिविरा पंचांग में भी समस्त संस्था प्रधानों को विद्यालयों में समय-समय पर बालसभा एवं उत्सव आयोजन के अवसर पर स्थानीय क्षेत्र के सम्मानित व्यक्तियों, जो उसी विद्यालय से पढ़कर महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं, को आमंत्रित कर विद्यार्थियों को सम्बोधित करवाए जाने बाबत् स्थाई निर्देश प्रदान किए गए हैं।

स्थानीय जनसमुदाय एवं अभिभावकों की भागीदारी विद्यालय को विकसित करने व अध्ययन-अध्यापन की गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाये जाने हेतु अत्यंत आवश्यक है। इसी क्रम में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के विधिवत गठन बाबत् इस कार्यालय के पूर्व परिपत्र दिनांक 17.04.2017 के माध्यम से निर्देशित किया गया है। उक्त क्रम में निम्नांकित निर्देश जारी किए जाते हैं।

**विद्यालय द्वारा करणीय कार्य :-**

1. विद्यालय के समस्त पूर्व विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुए, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नामचीन एवं लब्धप्रतिष्ठ विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों का पता लगाया जाकर उनका भावनात्मक एवं भौतिक जुड़ाव विद्यालय से करने के उद्देश्य से समस्त राजकीय विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' का गठन आवश्यक रूप से किया जावे एवं प्रत्येक वर्ष 31 जुलाई तक इसे अद्यतन किया जाए।
2. उक्तानुसार पूर्व विद्यार्थी मंच का गठन एवं अद्यतन शाला दर्पण पोर्टल पर विद्यालय टेब में सामुदायिक सहभागिता उप टेब के अन्तर्गत पूर्व विद्यार्थी-पंजीकरण प्रपत्र में समस्त जानकारियों को आवश्यक रूप से भरते हुए सभी पूर्व विद्यार्थियों को संस्था प्रधान द्वारा पंजीकृत किया जाना सुनिश्चित किया जाए।
3. विद्यालय स्टाफ, स्थानीय क्षेत्र के उक्त विद्यालय में अध्ययनरत रहे पूर्व छात्रों तथा विद्यालय के छात्र पंजीयन रजिस्टर (S.R. Register) में उपलब्ध रिकॉर्ड की सहायता से विद्यालय के अधिकधिक पूर्व छात्रों का अभिलेख उनके विद्यालय त्याग के वर्ष के आधार पर एक डाटा बेस तैयार किया जाए एवं इस हेतु रजिस्टर संधारित किया जाए।
4. जिन विद्यालयों में उक्त मंच का गठन पूर्व में हो चुका है वे नए पूर्व विद्यार्थियों को जोड़ते हुए इसे अद्यतन करेंगे।
5. विद्यालय स्तर पर 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' हेतु विद्यालय में कार्यरत ऐसे व्याख्याता/व.अ./अध्यापक को प्रभारी नियुक्त किया जाए, जिसका स्थानीय जन समुदाय से व्यापक जुड़ाव हो।
6. ऐसे पूर्व विद्यार्थी जो व्यवसाय/ नौकरी के कारण अन्य जिलों या राज्यों में निवास कर रहे हैं, उनके अपने क्षेत्र में आगमन पर उन्हें ससम्मान विद्यालय में आमंत्रित किया जाए व उनके अनुभवों से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जाए।
7. समस्त पूर्व विद्यार्थियों से विद्यालय नियमित जुड़ाव रखे एवं पूर्व विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धता के आधार पर समय-समय पर आयोज्य विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) तथा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की संयुक्त बैठक में भाग लेने हेतु आमंत्रित करने की सुनिश्चितता करें।
8. विद्यालय किसी ऐसे स्थानीय अवसर पर यथाः-आस-पास लगने वाले मेंले, सावो के अवसर पर जिस समय अधिकाधिक संख्या में दिसावर से लोग अपने क्षेत्र में आते हों, उस समय सखा संगम का आयोजन कर सकते हैं अथवा विद्यालय के वार्षिकोत्सव के समय समस्त पूर्व विद्यार्थियों को ससम्मान आमंत्रित कर सखा संगम का आयोजन किया जा सकता है। इस अवसर पर यथावश्यक विद्यार्थियों से रूबरू करवाकर उनके अनुभवों व सुझावों का साझा करवाने एवं विद्यालय विकास में उनसे सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।
9. इसके अलावा वैकल्पिक तौर पर उक्त कार्यक्रम का आयोजन कार्यक्रम, छात्रों के विदाई समारोह (आशीर्वाद एवं अभिवादन समारोह) अथवा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की बैठक के साथ किये जाने पर भी विचार किया जा सकता है। उक्त कार्यक्रम में विद्यालय में पूर्व वर्षों में अध्ययनरत रहे छात्रों को सपरिवार कार्यक्रम

Rajshan Education Foundation सत्यमेव जयते

में भाग लेने हेतु सम्मानजनक रीति से आमंत्रित कर उनकी अधिकाधिक संख्या में भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

10. इस कार्यक्रम में वर्तमान में समाज में गौरवपूर्व उपलब्धि अथवा ख्याति अर्जित कर विद्यालय का नाम रोशन करने वाले पूर्व छात्रों के अभिनन्दन का कार्यक्रम भी इसी दौरान रखा जा सकता है।
11. सखा संगम के दौरान 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' की आगामी गतिविधियों के प्रभावी संचालन हेतु पूर्व छात्रों का सम्मान एवं अभिनन्दन करते हुए उक्त मंच हेतु समय दे सकने वाले व्यक्तियों की कार्यकारी समिति (Working Committee) का निर्माण किया जाए, जिसके पदेन अध्यक्ष संस्था प्रधान रहेंगे एवं प्रभारी व्याख्याता/व.अ./अध्यापक इसके सदस्य सचिव रहेंगे। पूर्व विद्यार्थियों में से यथायोग्य पदाधिकारी व सदस्यों का मनोनयन पारस्परिक सहमति एवं विचार-विमर्श से किया जाए।
12. 'सखा-संगम' कार्यक्रम का आयोजन प्रत्येक शैक्षिक सत्र में समस्त राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों द्वारा पूर्ण उत्साह, उमंग एवं भव्य तरीके से धूमधाम तथा समारोहपूर्वक किया जाएगा। इस हेतु प्रारम्भ में आवश्यक तैयारियों हेतु विद्यालय विकास कोष/विद्यार्थी कोष से व्यय किया जा सकता है।
13. संस्था प्रधान सखा संगम के तहत पूर्व विद्यार्थियों के इस जुड़ाव का उपयोग विद्यालय की आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण एवं भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी लिया जा सकता है।
14. विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों को विद्यालय की 'नामांकन लक्ष्य प्राप्ति कार्य योजना' से सक्रिय रूप से जोड़ने हेतु प्रतिवर्ष आयोज्य प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में उनकी सार्थक भागीदारी हेतु स्वीकृति प्राप्त की जाए तथा स्थानीय विद्यालय परिक्षेत्र में निवास करने वाले उनके परिजनों के बालक-बालिकाओं का प्रवेश विद्यालय में करवाने हेतु प्रेरित करवाएं।

**सीबीईओ द्वारा करणीय कार्यः-**

1. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पदेन ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी अपने क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में पूर्व विद्यार्थी मंच के गठन एवं अद्यतन किए जाने का प्रबोधन करेंगे।
2. विद्यालयों में उक्त मंच की गतिविधियों का रिकार्ड संधारित करेंगे।
3. प्रत्येक सत्र में सत्रारम्भ में अधीनस्थ विद्यालयों को उक्त मंच को अद्यतन किए जाने एवं शाला दर्पण पोर्टल पर समस्त पूर्व विद्यार्थियों का पंजीकरण किए जाने बाबत् प्रमाण पत्र क्षेत्राधिकार में सम्बन्धित संस्था प्रधानों से प्राप्त कर प्रत्येक वर्ष 16 अगस्त तक प्राप्त कर पालना सुनिश्चित करवाएंगे।
4. उक्तानुसार सत्र उद्यतन की समस्त रिपोर्ट 20 अगस्त तक अपने कार्यालय में संधारित करेंगे एवं सूचना संबंधित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को देंगे।
5. विद्यालय अवलोकन के समय विद्यालय में सखा संगम के अभिलेखों का अवलोकन भी करेंगे।

**सीडीईओ द्वारा करणीय कार्यः-**

1. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक अपने क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में पूर्व विद्यार्थी मंच के गठन का प्रबोधन करेंगे।
2. प्रत्येक सत्र में सत्रारम्भ में अधीनस्थ सीबीईओ को उक्त मंच को अद्यतन किए जाने बाबत् निर्देश जारी करेंगे। शाला दर्पण पोर्टल पर समस्त पूर्व विद्यार्थियों का पंजीकरण किए जाने बाबत् प्रमाण पत्र (क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों द्वारा कर लिया गया है) समस्त अधीनस्थ CBEO से प्राप्त कर प्रत्येक वर्ष 25 अगस्त तक प्राप्त कर पालना सुनिश्चित करवाएंगे।
3. उक्त की सूचना मय प्रमाण पत्र संबंधित संभागीय संयुक्त निदेशक को प्रत्येक वर्ष 31 अगस्त को भिजवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
4. विद्यालय अवलोकन के समय विद्यालय मे सखा संगम के अभिलेखों का अवलोकन भी करेंगे।

**संयुक्त निदेशक द्वारा करणीय कार्यः-**

1. समस्त संयुक्त निदेशक क्षेत्राधिकार में इस कार्यक्रम के प्रभारी अधिकारी रहेंगे एवं क्षेत्राधिकार के समस्त जिलों में पूर्व विद्यार्थी मंच के गठन का प्रबोधन करेंगे।
2. प्रत्येक सत्र में सत्रारम्भ में अधीनस्थ सीडीईओ को उक्त मंच को अद्यतन किए जाने बाबत् निर्देश जारी करेंगे। शाला दर्पण पोर्टल पर समस्त पूर्व विद्यार्थियों का पंजीकरण किए जाने बाबत् प्रमाण पत्र (क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों द्वारा कर लिया गया है) समस्त अधीनस्थ CBEO से प्राप्त कर प्रत्येक वर्ष 31 अगस्त तक प्राप्त कर पालना सुनिश्चित करवाएंगे।
3. प्रत्येक वर्ष 7 सितम्बर तक अधीनस्थ जिलों से प्राप्त सूचना समेकित कर रिकार्ड संधारित करेंगे तथा उच्च स्तर पर चाहे जाने पर सूचना उपलब्ध करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
4. क्षेत्राधिकार के जिलों में अवलोकन के समय विद्यालय में सखा संगम के अभिलेखों का अवलोकन भी करेंगे।

उपर्युक्तानुसार समस्त राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' का गठन एवं 'सखा-संगम' कार्यक्रम का आयोजन प्रदत्त निर्देशानुरूप किए जाने की कार्यवाही समस्त सम्बन्धितों द्वारा सर्वोच्च प्राथमिकता से सम्पादित की जाए।

● **(गौरव अग्रवाल)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

## 2. सत्र 2023-24 में नवीन मान्यता/क्रमोन्नति/माध्यम, नाम, भवन/स्थान, वर्ग परिवर्तन/अति. विषय, अति. संकाय, अति. माध्यम आदि के आवेदित प्रकरणों के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/पीएसपी-सी/अ-2/60566/वो-1/2023-24/71 दिनांकः 24.12.2022 ● जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा समस्त.... ● विषयः सत्र 2023-24 में नवीन मान्यता/क्रमोन्नति/माध्यम, नाम, भवन/स्थान, वर्ग परिवर्तन/अति. विषय, अति. संकाय, अति. माध्यम आदि के आवेदित प्रकरणों के संबंध में। ● प्रसंगः शासन का पत्रांक प.9 (51) शिक्षा-5/ मान्यता दिशा-

निर्देश/2022 दिनांक 22.12.2022 एवं इस कार्यालय द्वारा जारी विज्ञप्ति दिनांक 24.12.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में राज्य में संचालित गैर सरकारी विद्यालयों की सत्र 2023–24 में नवीन मान्यता/क्रमोन्नति/माध्यम, नाम, भवन/स्थान, वर्ग परिवर्तन/अति. विषय, अति. संकाय, अति. माध्यम आदि के आवेदित प्रकरणों के संबंध में अग्रानुसार निर्देश प्रसारित किये जाते हैः–

1. शिक्षा विभाग के परिपत्र क्रमांक : शिविरा–मा/पीएसपी/60572/8/राअनुजाआ/सामाजिक समानता/2022 दिनांक 22.08.2022 की अनुपालना में संस्था/विद्यालय द्वारा आवेदन करने पर पत्रावली के साथ जातिगत भेदभाव नहीं करने का एवं संस्था द्वारा साम्प्रदायिक व राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेने का शपथ पत्र (100 रुपये के नॉन–ज्युडिशियल स्टाम्प पेपर पर) प्रस्तुत करना होगा।
2. गत सत्रों में किसी भी संस्था/विद्यालय द्वारा पूर्व में अतिरिक्त माध्यम के लिए आवेदन किया जाता था तब स्वीकृति मान्यता/क्रमोन्नति आदि प्रमाण पत्र जारी करने हेतु विद्यालय से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया गया। सत्र 2023–24 से अतिरिक्त माध्यम के लिए आवेदन करने वाले विद्यालयों को स्वीकृति हेतु मान्यता प्रमाण पत्र लेने से पूर्व सचिव, बालिका शिक्षा फाउन्डेशन, जयपुर के नाम से निम्नानुसार निर्धारित शुल्क का डिमान्ड ड्राफ्ट लिया जावे।

| कक्षा (अतिरिक्त माध्यम) | शुल्क |
|---|---|
| 1–5 | 20000 |
| 1–8, 6–8 | 20000 |
| 1–10, 6–10, 9–10 | 30000 |
| 1–12, 6–12, 9–12, 11–12 | 30000 |

3. अतिरिक्त माध्यम हेतु कक्षा–कक्ष का निर्धारण पूर्व में संचालित कक्षा–कक्ष के क्रम में निम्नानुसार किया जावे :

| एक माध्यम में संचालन हेतु कक्षा–कक्षों की संख्या | | दोनो माध्यम में संचालन हेतु कक्षा–कक्षों की संख्या | | |
|---|---|---|---|---|
| कक्षा स्तर | कक्षा कक्ष संख्या | समान कक्षा स्तर | भिन्न भिन्न कक्षा स्तर | कक्षा–कक्ष संख्या |
| 1–5 | 2 | 1–5 | – | 4 |
| 1–8 | 5 | – | 1–8 एवं 1–5 | 07 |
| | | 1–8 | – | 10 |
| 1–10 | 14 | – | 1–10 एवं 1–5 | 16 |
| | | – | 1–10 एवं 1–8 | 19 |
| | | 1–10 | – | 24 |
| 1–12 (एक संकाय 03 विषय केसाथ) | 16 | – | 1–12 एवं 1–5 | 18 |
| | | – | 1–12 एवं 1–8 | 21 |
| | | – | 1–12 एवं 1–10 | 26 |
| | | 1–12 | – | 28 |

**नोट** : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों हेतु प्रत्येक अतिरिक्त 03 विषय–एक माध्यम हेतु अतिरिक्त 02 कक्षा–कक्षों एवं प्रत्येक अतिरिक्त 03 विषय–दोनों माध्यम हेतु अतिरिक्त 04 कक्षा– कक्षों की आवश्यकता होगी।

4. किसी भी संस्था/विद्यालय द्वारा आवेदन करने पर संलग्न पैन ड्राइव में विद्यालय की भौतिक स्थिति का विडियो, जिसमें निरीक्षण दल द्वारा निरीक्षण करते हुए प्रत्येक कक्षा–कक्ष, छात्र–छात्रा के लिए पृथक–पृथक शौचालय एवं मूत्रालय, पेयजल, खेल मैदान, मुख्य–द्वार, प्रयोगशाला, विद्यालय की छत व सम्पूर्ण निर्माण का आकाशीय परिदृश्य प्रदर्शित किया गया हो, प्रस्तुत करना होगा।
5. संस्था/विद्यालय द्वारा कक्षा 9–12 की क्रमोन्नति/स्थान परिवर्तन/दो पारी/वर्ग परिवर्तन (छात्रा विद्यालय से सह शिक्षा में परिवर्तन करने पर) सम्बन्धी आवेदन करने पर आवेदन करते समय पूर्व शैक्षिक सत्र 2022–23 में निर्धारित आवेदन शुल्क एवं स्वीकृति शुल्क को सम्मिलित करते हुए निम्नानुसार आवेदन शुल्क विद्यालय द्वारा ऑनलाईन आवेदन लॉक करते समय ई–ग्रास के माध्यम से लिया जाये।

| क्रमोन्नति (9–12) | | स्थान परिवर्तन | | | | स्थान परिवर्तन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरी | ग्रामीण | 02 किमी तक | | | | 02 किमी–05 किमी तक की दूरी होने पर | | | |
| 100000 | 80000 | प्रावि | उप्रावि | मावि | उमावि | प्रावि | उप्रावि | मावि | उमावि |
| | | 10000 | 20000 | 40000 | 50000 | 10000 | 20000 | 60000 | 70000 |

| दो पारी आवेदन शुल्क | | | वर्ग परिवर्तन (छात्रा विद्यालय से सह शिक्षा में परिवर्तन करने पर) | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कक्षा स्तर | ग्रामीण | शहरी | कक्षा स्तर | ग्रामीण | शहरी |
| प्रावि स्तर (कक्षा 1–5) | 45000 | 60000 | प्रावि स्तर (कक्षा 1–5) | 60000 | 60000 |
| उप्रावि स्तर (कक्षा 1–8) | 90000 | 115000 | उप्रावि स्तर (कक्षा 1–8) | 70000 | 70000 |
| मावि स्तर (कक्षा 1–10) | 265000 | 320000 | मावि स्तर (कक्षा 1–10) | 90000 | 90000 |
| उमावि स्तर (कक्षा 1–12) | 270000 | 325000 | उमावि स्तर (कक्षा 1–12) | 100000 | 100000 |

6. यदि विद्यालय पूर्व में उच्च माध्यमिक स्तर की मान्यता प्राप्त है एवं वर्तमान में अतिरिक्त विषय हेतु आवेदन किया जाता है तो विद्यालय परिसर की भूमि के माप में कारपेट एरिया/फ्लोर/कुल निर्मित क्षेत्र को शामिल करते हुए भूमि की माप निर्धारित की जावे अर्थात निर्धारित मापदण्ड़ के अनुसार भूमि की गणना में यदि विद्यालय में एक से अधिक तल का निर्माण किया गया है तो सभी निर्मित तलों का क्षेत्रफल सम्मिलित करते हुए विद्यालय परिसर का

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

कुल क्षेत्रफल निर्धारित किया जायेगा।

7. मान्यता/क्रमोन्नति का आवेदन करते समय विद्यालय/संस्था, विद्यालय का नाम एवं पता पूर्व में जारी किये गये मान्यता आदेशों से मिलान कर सुनिश्चित कर लें कि आवेदन में विद्यालय का नाम वही अंकित है जिस नाम से पूर्व में मान्यताएं/क्रमोन्नति प्रदान की गई हैं। किसी प्रकार की भिन्नता होने पर उसे आवेदन से पूर्व ही सही करवाकर आवेदन करें। आवेदन लॉक होने के 05 दिवस तक संबंधित विद्यालय लॉक आवेदन में आवश्यक संशोधन कर सकेगा। आवेदन लॉक होने के 05 दिवस पश्चात विद्यालय द्वारा विद्यालय के नाम अथवा पते के संशोधन के लिए प्राप्त होने वाले अभ्यावेदन/परिवेदनाओं को शास्ति शुल्क (30000 रुपये) सहित आवेदन स्वीकार किया जायेगा। नियमानुसार परीक्षणोपरान्त संशोधन जारी किया जायेगा।

8. विद्यालय में घटित होने वाली अप्रिय घटनाएं जैसे छात्र/छात्राओं के साथ होने वाले उत्पीड़न, मारपीट, भेदभाव, मानसिक रूप से प्रताड़ित करने पर अंकुश लगाने हेतु विभाग द्वारा समय–समय पर जारी निर्देशों की पालना विद्यालय द्वारा अनिवार्य रूप से करनी होगी। यदि विद्यालय प्रबन्धन ऐसी घटनाओं में दोषी पाया जाता है तो विद्यालय/संस्था के विरूद्ध मान्यता/क्रमोन्नति के निलम्बन/समाप्ति की कार्यवाही की जा सकेगी।

9. विभाग के पत्र क्रमांक : शिविरा–मा/मा–स/बाल संरक्षण/ 2016–19/194 दिनांक 23.05.2019 के क्रम में छात्र/छात्राओं की समस्याओं के लिए सभी गैर सरकारी विद्यालयों में बाल शिकायत पेटिका का लगाया जाना अनिवार्य होगा जिसका उल्लेख आवेदन करते समय विद्यालय द्वारा प्रस्तुत शपथ पत्र में करना होगा।

10. पूर्व शैक्षिक सत्र 2022–23 में मान्यता/क्रमोन्नति के आवेदनों के साथ ही प्रबन्ध अन्तरण एवं मान्यता समर्पण के आवेदन लिये गये किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मान्यता प्रबन्ध अन्तरण एवं मान्यता समर्पण के प्रकरणों की प्रकृति मान्यता के आवेदनों से अलग होने के कारण इन्हें सत्र पर्यन्त पृथक रूप से शुल्क निर्धारित कर ऑनलाईन आवेदन लिये जायेंगे।

11. मान्यता प्राप्त संस्थाओं को आवेदन करते समय भविष्य–निधि कटौती का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।

12. नवीन मान्यता स्वीकृति के समय जिला शिक्षा अधिकारी को उपलब्ध करवायी जाने वाली आरक्षित कोष (एफ.डी.) संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं मान्यता प्राप्त विद्यालय के सम्मिलित नाम से होनी चाहिए (न कि संस्था के नाम से)। पूर्व में बनायी हुई एफडी की परिपक्व अवधि समाप्त होने पर नवीनीकरण के समय बनायी जाने वाली एफडी संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं मान्यता प्राप्त विद्यालय के सम्मिलित नाम से होनी चाहिए।

13. नवीन मान्यता के आवेदन के समय विद्यालय को स्थानीय सक्षम प्राधिकारी (नगर निगम/ नगरपालिका/ग्राम पंचायत) द्वारा जारी अग्नि सुरक्षा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा।

14. **Virtual स्कूल** – राजस्थान राज्य में कोरोना काल जैसी विषम परिस्थितियों के मद्देनजर विगत सत्रों में विद्यार्थियों के शिक्षा में हुए नुकसान हेतु विभाग द्वारा राजस्थान में शैक्षिक सत्र 2023–24 से कक्षा 9 से कक्षा 12 तक गैर सरकारी VIRTUAL स्कूल को मान्यता प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। भविष्य में ऐसी विकट परिस्थितियों में भी विद्यार्थियों का शिक्षण निर्बाध गति से करवाया जा सकें, इस हेतु शैक्षिक सत्र 2023–24 में कक्षा–कक्ष अध्ययन (Class room study) के साथ वर्चुअल (ऑनलाइन) स्कूल की अभिधारणा को सम्मिलित किया गया है, जिसके तहत रजिस्टर्ड संस्था यदि चाहे तो विभाग से स्वीकृति लेकर वर्चुअल स्कूल प्रारंभ कर सकती है। यह स्वीकृति विभाग द्वारा पूर्व में संचालित विद्यालयों के साथ सहभागिता करने वाली रजिस्टर्ड संस्था (सोसाइटी) को ही प्रदान की जायेगी।

वर्चुअल स्कूल की मान्यता प्राप्त करने के संबंध में जारी किये जाने वाले दिशा–निर्देश निम्नानुसार हैः–

A. शैक्षिक तकनीकी संस्थाओं द्वारा वर्चुअल स्कूल प्रारंभ करने हेतु राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्थान अधिनियम 1989 नियम 1993 में वर्णित भौतिक मापदंड जैसे खेल मैदान, भूमि का माप, कक्षा–कक्ष, प्रयोगशाला आदि के लिए शिक्षा विभाग राजस्थान से उच्च माध्यमिक स्तर/माध्यमिक स्तर की मान्यता प्राप्त गैर सरकारी विद्यालय से सहभागिता (COLLABORATION) करना अनिवार्य होगा।

B. यह सहभागिता "वर्चुअल इंटिग्रेशन पार्टनर (VIP)" कहलाएगी जिसके अंतर्गत वर्चुअल स्कूल के मान्यता के लिए आवेदन करने वाली शैक्षिक तकनीकी संस्था (Ed-TECH Companies) को आवेदन से पूर्व मान्यता प्राप्त गैर सरकारी संस्था से सहभागिता हेतु एमओयू करना आवश्यक होगा। उदाहरणतः यदि उक्त एज्युकेशन संस्था शैक्षिक सत्र 2023–24 में मान्यता हेतु आवेदन करना चाहती है तो उसे आवेदन की अंतिम तारीख से पूर्व यह सहभागिता करनी होगी।

C. वर्चुअल स्कूल की मान्यता वीआईपी सहभागिता की समयावधि तक मान्य होगी। जिसे न्यूनतम 4 वर्ष की अवधि हेतु करना अनिवार्य होगा।

D. प्रत्येक शैक्षिक तकनीकी संस्था (Ed-Tech Companies) एक समय में एक से अधिक गैर सरकारी विद्यालयों के

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

साथ वीआईपी सहभागिता कर सकेगी यदि निर्धारित समय अवधि से पूर्व किसी भी गैर सरकारी विद्यालय से किया हुआ एमओयू समाप्त होता है तो इसकी सूचना विभाग को तत्काल प्रेषित करनी होगी।

E. Ed-Tech संस्था करार के समय यह सुनिश्चित कर लेवें कि एमओयू (MOU) में वर्णित छात्र संख्या के अनुसार मान्यता प्राप्त गैर सरकारी विद्यालय के पास आवश्यक संसाधन उपलब्ध है।

F. वर्चुअल स्कूल में प्रवेश के समय विद्यार्थियों को शैक्षिक गतिविधियों जैसे परीक्षा, प्रयोगशाला आदि का आयोजन जिस गैर सरकारी विद्यालय परिसर में होगा उसका विवरण देना होगा।

G. वीआईपी सहभागिता के अधीन होने वाले करार (MOU) में एक शैक्षिक सत्र में अध्ययन कराये जाने वाले अधिकतम अध्ययनरत विद्यार्थियों का अंकन करना अनिवार्य होगा।

H. सहभागिता के लिए होने वाले एमओयू में एक शैक्षिक सत्र के मध्य में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा।

I. Virtual schools के सम्बन्ध में प्राप्त होने वाले आवेदन कक्षा 9–10, 11–12 व कक्षा 9 से 12 की मान्यता स्वीकृति हेतु निर्धारित किये जायेंगे।

| क्र. सं. | मान्यता का प्रकार (एक अथवा दोनो माध्यम) |
|---|---|
| 1 | 9–10 |
| 2 | 11–12 |
| 3 | 9–12 |

J. इसके अलावा वर्चुअल स्कूल की मान्यता लेने के लिए एक संस्था के पास well developed online facility होना अनिवार्य होगा। (परिशिष्ट XVI)

K. Virtual school की मान्यता प्राप्त करते ही संस्था को बोर्ड से Affiliation प्राप्त करने हेतु आवेदन करना होगा एवं साथ ही बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठयक्रम एवं परीक्षा कार्यक्रम के अनुसार अध्ययन कार्यक्रम एवं परीक्षाओं का आयोजन करना होगा। विभाग एवं बोर्ड द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार ही संस्था को परीक्षाओं एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करना होगा। प्रत्येक शैक्षिक सत्र पर निर्धारित किये गये टाइम–फ्रेम के अनुसार स्थानीय/जिला समान परीक्षाएं आयोजित करने की व्यवस्था Ed-tech संस्था से सहभागिता (MOU) करने वाले मान्यता प्राप्त गैर सरकारी विद्यालय के विद्यालय परिसर में ही करनी होगी।

L. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अलावा CBSE/CISCE/CAIE से संबद्धता प्राप्त करने से पूर्व सम्बन्धित वर्चुअल विद्यालय को विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

M. प्रायोगिक परीक्षा को आयोजित करने की सम्पूर्ण व्यवस्था virtual school की मान्यता प्राप्त करने वाली Ed-tech संस्था द्वारा अपने स्तर पर ही सहभागी मान्यता प्राप्त विद्यालय में करनी होगी।

N. शैक्षिक तकनीकी संस्था द्वारा स्वयं की प्रत्येक विषय एवं प्रत्येक कक्षा हेतु तैयार की गई अध्ययन सामग्री (with QR Coded) वर्चअुल स्कूल की मान्यता के आवेदन के समय प्रस्तुत करनी होगी।

O. कक्षा 10 एवं कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षाएं बोर्ड के नियम एवं दिशा–निर्देशों के अनुसार ली जावेंगी।

P. वर्चअुल स्कूल की मान्यता प्राप्त करने के पश्चात Ed-tech संस्था के अधीन वर्चुअल स्कूल संचालित किया जाएगा। उक्त संचालित वर्चुअल स्कूल का सम्पूर्ण प्रबन्धन संबंधित Ed-tech संस्था का रहेगा।

Q. Virtual School में कक्षावार प्रत्येक कालांश में अधिकतम 45 विद्यार्थियों को ही शिक्षक द्वारा ऑनलाईन अध्ययन करवाया जाये, इस हेतु ऑनलाईन लिंक केवल 45 विद्यार्थियों के साथ ही Share किया जाये। निर्धारित विद्यार्थियों को संबंधित विद्यालय द्वारा अध्यापन कार्य Live online classes द्वारा होना चाहिए, आवश्यकता के अनुसार Recorded live classes द्वारा रिवीजन करवाया जा सकता है।

R. Virtual School की मान्यता हेतु आवेदन करने वाली संस्था के पास आवेदित कक्षा स्तर की मान्यता के अनुसार निम्नानुसार virtual स्टूडियो होना आवश्यक है।

| Sr. No. | Class Level | Minimum Virtual Studio |
|---|---|---|
| 1 | 9-10 | 2 |
| 2 | 11-12 | 2 |
| 3 | 9-12 | 4 |

S. Virtual School में विद्यार्थियों के प्रति दिवस अध्ययन का समय 6 घंटे एवं कालांश 08 तथा शिक्षकों के अध्यापन का समय साप्ताहिक 45 घंटे अर्थात सामान्य विद्यालय के लिए निर्धारित साप्ताहिक कालांश (शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए) के अनुसार तय होगा।

T. Virtual School की मान्यता हेतु आवेदन करने वाली संस्था के पास कक्षा स्तर के अनुसार Virtual स्टूडियो होना आवश्यक है।

U. Virtual School की मान्यता प्राप्त करने हेतु आवेदन शुल्क निम्नानुसार निर्धारित किया जावे।

**वर्चुअल स्कूल की मान्यता प्राप्त करने हेतु**

| कक्षा स्तर | एक माध्यम | दोनों माध्यम |
|---|---|---|
| 9–10 | 1,00,000 | 1,50,000 |
| 11–12 | 1,20,000 | 1,75,000 |
| 9–12 | 1,50,000 | 2,25,000 |

V. वर्चुअल स्कूल द्वारा विद्यालय संचालन हेतु राजस्थान गैर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सरकारी संस्था अधिनियम 1989, नियम 1993 एवं राजस्थान विद्यालय (फीस का विनियमन) अधिनियम 2016 विभाग द्वारा गैर सरकारी विद्यालयों के सम्बन्ध में समय–समय पर जारी किये गये निर्देशों/परिपत्रों/आदेशों की पालना की जावेगी।

W. शैक्षिक तकनीकी संस्थाओं को वर्चुअल स्कूल की मान्यता प्राप्त करने के लिए निम्न योग्यता/शर्त को पूर्ण करना आवश्यक होगा :–

- संबंधित तकनीकी संस्था का राज्य स्तरीय कार्यकारी कार्यालय होना आवश्यक होगा जिसके द्वारा राज्य में वर्चुअल विद्यालय का संचालन किया जाएगा। विद्यालय से संबंधित समस्त दस्तावेज का संधारण एवं पत्र व्यवहार उक्त कार्यालय के माध्यम से ही किया जाएगा।
- वर्चुअल स्कूल की मान्यता प्राप्त करने वाली प्रत्येक शैक्षिक तकनीकी संस्था को राजस्थान सोसायटी अधिनियम 1958 के अधीन पंजीकृत होना आवश्यक होगा।
- शैक्षिक तकनीकी संस्थाओं द्वारा विगत तीन शैक्षिक सत्रों में कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों को अध्ययन करवाने के लिए विभाग के दिशा–निर्देशों के अनुसार अनुभव होना आवश्यक होगा।
- शैक्षिक तकनीकी संस्था द्वारा वर्चुअल विद्यालय के संचालन हेतु न्यूनतम 15 सदस्य प्रबंध समिति का गठन करना होगा। गठित प्रबंध समिति द्वारा ही वर्चुअल स्कूल की समस्त शैक्षिक व गैर शैक्षिक गतिविधियों को संचालन किया जाएगा।

15. विज्ञप्ति में जारी टाईम फ्रेम शासन स्तर से अनुमोदित है अतः विज्ञप्ति में जारी टाईम फ्रेम का पालन विद्यालय एवं कार्यालय द्वारा अनिवार्य रूप से किया जाना अनिवार्य है। विद्यालय द्वारा टाईम फ्रेम का पालन नहीं करने की स्थिति में आवेदन हेतु अपात्र हो जायेंगे। निरीक्षण दल/कार्यालय स्तर पर टाईम फ्रेम का पालन नहीं करने वाले संबंधित अधिकारी/कार्मिक का उत्तरदायित्व निर्धारित कर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी।

16. गैर सरकारी विद्यालयों की सत्र 2023–24 में मान्यता/क्रमोन्नति/माध्यम, नाम, स्थान, वर्ग परिवर्तन/अति. विषय, अति. संकाय, अति. माध्यम आदि के आवेदित प्रकरणों के संबंध में शासन द्वारा निर्धारित एवं विज्ञप्ति में जारी टाईम फ्रेम की अक्षरशः एवं समयबद्ध पालना अनिवार्य रूप से की जानी है। समस्त प्रक्रिया निर्धारित टाईमफ्रेम/दिशा–निर्देशों के तहत किये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करावें। पोर्टल पर यदि कोई तकनीकी खामी किसी प्रकरण विशेष में प्रकट होती है, तो उसका स्क्रीन शॉट लिया जाकर साक्ष्य के रूप में पत्रावली में प्रकरण के साथ संलग्न करें। दल परिवर्तन/निरीक्षण रिपोर्ट अपलोड/जिशिअ द्वारा अनुशंसा अपलोड हेतु किसी प्रकार का संशोधन/सुविधा की आवश्यकता होने पर मेल आईडी ad.psp.dse@rajasthan.gov.in एवं वॉटस–एप ग्रुपः– PSP MANYATA DSE पर पत्र एवं स्मरण पत्र की कार्यालय पद्धति का अनुसरण करें एवं कार्य को निर्धारित समयावधि में संपादित करें।

17. प्रकरण निदेशालय को अग्रेषित/प्रेषित करने से पूर्व संस्था द्वारा वांछित आवेदन के अनुसार संस्था द्वारा ई–ग्रास के माध्यम से निर्धारित शुल्क जमा किये जाने का मिलान शासन के पत्र दिनांक 16.09.2019 एवं वर्तमान में जारी विज्ञप्ति के अनुसार प्रकरणवार अनिवार्य रूप से जमा हो गया है, का मिलान कर लिया जावे। विद्यालय का नाम, आवेदन क्रमांक, वांछित आवेदन (यथा मान्यता/क्रमोन्नति/स्थान या भवन परिवर्तन/अतिरिक्त विषय/अतिरिक्त संकाय अतिरिक्त माध्यम आदि) प्रकरण वार निर्धारित शुल्क ई–ग्रास के माध्यम से जमा शुल्क प्रकरण वार गणना की जाकर जमा शुल्क का मिलान निर्धारित शुल्क से कर देय शुल्क की राशि प्रकरण वार गणना कर निर्धारित शुल्क से कम जमा शुल्क के प्रकरण को आक्षेपित कर विद्यालय को लौटाएँ एवं सूचना बकाया राशि के साथ निदेशालय को प्रेषित करें ताकि बकाया राशि के ई–ग्रास हेतु संबंधित विद्यालय के लॉगइन में व्यवस्था करवायी जा सके।

18. प्रकरण निदेशालय को अग्रेषित/प्रेषित करने से पूर्व संस्था द्वारा वांछित आवेदन के अनुसार संस्था द्वारा ई–ग्रास के द्वारा जमा किये जाने के मिलान पत्र के साथ संलग्नक के अनुसार प्रकरणवार अनिवार्य रूप से कर लिया जाये। प्रकरणवार निर्धारित शुल्क से यदि संस्था द्वारा ई–ग्रास के माध्यम से अपेक्षित रूप से न्यून जमा हुआ हो तो उसकी सम्पूर्ण रिपोर्ट संबंधित जिशिअ द्वारा प्रकरण वार निम्न फार्मेट में प्रेषित की जाएगी–

| क्र. सं. | विद्यालय का नाम एवं जिला | आवेदन क्रमांक | वांछित आवेदन (यथा मान्यता/ क्रमोन्नति/ स्थान या भवन परिवर्तन/ अतिरिक्त विषय/ अतिरिक्त संकाय/ अतिरिक्त माध्यम आदि) | प्रकरण वार निर्धारित शुल्क | ई–ग्रास के माध्यम से जमा शुल्क | प्रकरणवार गणना की जाकर जमा शुल्क का मिलान निर्धारित शुल्क से कर देय शुल्क की राशि | प्रकरण वार गणना कर निर्धारित शुल्क से कम जमा शुल्क का विवरण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

19. निर्धारित शुल्क एवं जमा शुल्क में किसी प्रकार की भिन्नता की विपरीत स्थिति पायी जाती है तो इसके लिए संबंधित जिशिअ द्वारा निदेशालय को प्रकरण के साथ ही अनिवार्य रूप से अवगत करवाया जाना सुनिश्चित किया जाये। विपरीत स्थिति उत्पन्न होने पर समस्त उत्तरदायित्व आपके कार्यालय का निर्धारित किया जाएगा। प्रकरण के साथ निरीक्षण रिपोर्ट तथा कमेन्ट बॉक्स में जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा अंकित अभिशंसा के साथ इस आशय का भी अंकन अवश्य करावें कि शासन के पत्र दिनांक 16.09.2019 एवं विज्ञप्ति में जारी दिशा–निर्देशों के तहत आवेदन के वांछित प्रकरणवार निर्धारित शुल्क विद्यालय द्वारा जमा करवा दिया गया है, का अंकन कर निदेशालय को प्रकरण प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करावें। जिशिअ की स्पष्ट अभिशंसा एवं प्रकरणवार निर्धारित शुल्क जमा करवा दिया गया है कि टिप्पणी के अभाव में प्रकरण स्वीकार नहीं किया जाएगा।

20. निर्धारित टाईमफ्रेम में निरीक्षण करना एवं रिपोर्ट अपलोड नहीं करने वाले दल प्रभारियों एवं निरीक्षण प्रतिवेदन गलत/अधूरे/अपठनीय/निरीक्षण प्रतिवेदन के स्थान पर विद्यालय द्वारा भरा गया आवेदन पत्र अपलोड करने वाले एवं इसी तरह की अन्य त्रुटियां करने वाले दल प्रभारियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही के प्रस्ताव प्रकरण के साथ निदेशालय को भिजवाये। निरीक्षण दल द्वारा निरीक्षण की कार्यवाही निर्धारित समयावधि में करवाये जाने का उत्तरदायित्व जिशिअ कार्यालय का होगा। निरीक्षण दल के गठन का संदेश (SMS) जनरेट होने के साथ संबंधित DEO कार्यालय द्वारा निरीक्षण समय पर करवाने हेतु सघन मॉनिटरिंग की जावे। समय पर निरीक्षण करवाया जाना संबंधित DEO की जिम्मेदारी है। समय पर निरीक्षण नहीं करने वाले कार्मिकों की जवाबदेही तय कर अनुशासनात्मक कार्यवाही किये जाने हेतु प्रपत्र अ,ब,स,द भिजवायें।

21. सामान्यतया निरीक्षण दलों को बदला नहीं जायेगा यदि अपरिहार्य परिस्थितियों यथा दल के सदस्य का स्थानांतरण/पदोन्नति पर, अन्यत्र स्थान पर कार्य ग्रहण किये जाने पर/जिले से अन्यत्र कार्यव्यवस्थार्थ/मृत्यु/गंभीर बीमारी/प्रसूति अवकाश आदि की परिस्थितियों के आधार पर निरीक्षण दल में संशोधन अनुमत होगा। यदि निरीक्षण दल में किसी प्रकार का संशोधन अपेक्षित हो तो इस हेतु प्रार्थना पत्र मय आवश्यक दस्तावेज संलग्न कर जिशिअ कार्यालय को प्रेषित किया जायेगा। जिशिअ कार्यालय द्वारा तथ्यों से संतुष्टि की स्थिति में प्रकरण निदेशालय स्तर पर अग्रेषित किया जायेगा।

22. चूंकि वर्तमान सत्र में निरीक्षण दल द्वारा अपने निरीक्षण प्रतिवेदन अपलोड कर जिशिअ कार्यालय को अग्रेषित किये जाने की सुविधा उपलब्ध करवायी गई है। संबंधित जिशिअ कार्यालय द्वारा प्रकरण पर यदि आक्षेप नहीं लगाया जाता है तो इस स्थिति में उक्त रिपोर्ट को ही जिशिअ कार्यालय द्वारा अनुमोदित मानकर निदेशालय को अपलोडेड मानी जाएगी। यदि प्रकरण में जिशिअ स्तर पर आक्षेप लगाया जाता है तो ऐसी स्थिति में आक्षेप पूर्ति उपरान्त निरीक्षण प्रतिवेदन की रिपोर्ट को जिशिअ द्वारा प्रमाणित कर मय अभिशंसा सहित रिपोर्ट अपलोड की जायेगी।

23. सत्र 2023–24 हेतु मान्यता/क्रमोन्नति/स्थान, वर्ग, नाम, माध्यम परिवर्तन/अति. विषय, संकाय, माध्यम, आदि के संबंध में विज्ञप्ति जारी की जा रही है। जिन विद्यालयों द्वारा मान्यता/क्रमोन्नति हेतु ऑनलाईन आवेदन किया जायेगा, उन विद्यालयों का निरीक्षण करने हेतु निरीक्षण दलों के गठन उपरान्त निरीक्षण दल द्वारा विद्यालय का निरीक्षण कर रिपोर्ट को ऑनलाईन अपलोड किये जाने का कार्य निरीक्षण दल प्रभारी द्वारा किया जाकर निरीक्षण रिपोर्ट की हॉर्डकापी संबंधित जिशिअ कार्यालय को प्रेषित कर दी गई है के प्रकरणों के संबंध में संबंधित जिशिअ कार्यालय द्वारा निरीक्षण रिपोर्ट निदेशालय को अग्रेषित/प्रेषित किये जाने की कार्यवाही निम्न प्रकार से सम्पादित की जानी हैः–

I. चूंकि वर्तमान सत्र में निरीक्षण दल द्वारा अपने निरीक्षण प्रतिवेदन अपलोड कर जिशिअ कार्यालय को अग्रेषित किये जाने की सुविधा उपलब्ध करवायी गई हैं। अतः संबंधित जिशिअ कार्यालय द्वारा प्रकरण पर यदि आक्षेप नहीं लगाया जाता है तो इस स्थिति में उक्त रिपोर्ट को ही जिशिअ कार्यालय द्वारा निदेशालय को अपलोडेड मानी जाएगी। निदेशालय को प्रकरण पोर्टल के माध्यम से अग्रेषित करने से पूर्व अपनी टिप्पणी मय अभिशंसा को निर्धारित रिमार्क स्थान में अनिवार्य रूप से अंकित किया जाकर निदेशालय को अग्रेषित करें।

II. निदेशालय स्तर पर पत्रावली संबंधित जिशिअ के अग्रेषण पत्र के साथ भिजवायी जाये, जिसमें स्पष्ट अंकन हो कि प्रेषित प्रकरणों के संबंध में शासन के पत्र दिनांक 22.12.2022 एवं विज्ञप्ति में जारी दिशा–निर्देशों के तहत आवेदनों के वांछित प्रकरणवार निर्धारित शुल्क सूची में अंकित विद्यालयों द्वारा जमा करवा दिया गया हो।

III. निरीक्षण रिपोर्ट की हॉर्डकॉपी निरीक्षण दल प्रभारी द्वारा अपलोड कर संबंधित जिशिअ कार्यालय को दिये जाने की तिथि उपरान्त अनुमोदन योग्य प्रकरणों को संबंधित जिशिअ कार्यालय द्वारा 07 दिवस की अवधि में अग्रांकित तालिका अनुसार निरीक्षण रिपोर्ट मय पत्रावली जिशिअ की स्पष्ट अनुशंसा के साथ निदेशालय को प्रेषित किया

Rajasthan Education Directorate सत्यमेव जयते

जाना सुनिश्चित किया जाये। आक्षेपित प्रकरणों को आक्षेप पूर्ति उपरान्त प्राप्ति दिनांक से 07 दिवस की अवधि में निदेशालय को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करावें तथा निदेशालय को प्रेषित किये जाने वाले प्रकरणों को उक्तानुसार निर्धारित टाईम फ्रेम में निदेशालय को प्रेषित नहीं किये जाने की स्थिति में कार्य में देरी एवं लापरवाही का द्योतक माना जाएगा तथा नियमानुसार समस्त उत्तरदायित्व आपका निर्धारित किया जाएगा। इस संबंध में टाईम फ्रेम निम्नानुसार निर्धारित किया जाता है:–

| क्र.सं | मण्डल वार जिले | निदेशालय को प्रकरण उपलब्ध कराये जाने हेतु निर्धारित दिवस (कार्य दिवस में) |
|---|---|---|
| 1. | जयपुर, कोटा, उदयपुर मण्डल | प्रत्येक सोमवार, मंगलवार |
| 2. | जोधपुर, अजमेर, भरतपुर मण्डल | प्रत्येक बुधवार, गुरूवार |
| 3. | बीकानेर, पाली, चूरू मण्डल | प्रत्येक शुक्रवार |

उक्त आवेदनों में निरीक्षण दल द्वारा किये गये निरीक्षण उपरान्त निरीक्षण प्रतिवेदन जिशिअ स्तर से स्पष्ट अभिशंषा सहित मय मूल निरीक्षण प्रपत्र एवं चैक लिस्ट के साथ व मूल फाईल में पृष्ठों का अंकन कर भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

I. निरीक्षण रिपोर्ट के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निर्धारित संलग्न प्रारूप में एक्सल शीट में भरा जाना है। निर्धारित प्रारूप में निरीक्षण रिपोर्ट को भरकर ही निरीक्षण रिपोर्ट की हॉर्डकॉपी निदेशालय स्तर पर प्रेषित की जानी है। (संलग्न निर्धारित प्रारूप) निरीक्षण रिपोर्ट की एक्सल शीट (Softcopy) को पी.एस.पी अनुभाग के ई–मेल (ad.psp.dse@rajasthan.gov.in) आईडी पर भी भेजा जाना आवश्यक है।

II. निर्धारित एक्सल शीट के अभाव में निरीक्षण प्रतिवेदन एवं पत्रावली को स्वीकार्य नहीं किया जायेगा।

24. निदेशालय द्वारा प्रकरणों में प्रदत्त अनुमोदन के उपरान्त जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्राप्त प्रकरणों की दिनांक से 02 दिवस के भीतर बालिका फाउण्डेशन राशि/सावधि जमा राशि 07 दिवस के भीतर जमा करवाये जाने हेतु सम्बन्धित विद्यालय को रजिस्टर्ड डाक/पोर्टल पर उपलब्ध विद्यालय लॉगइन में मैसेज पॉपअप की सुविधा जैसी भी स्थिति हो, से सूचित करना।

25. सम्बन्धित विद्यालय द्वारा बालिका फाउण्डेशन राशि/सावधि जमा कार्यालय में जमा करवाये जाने की दिनांक से 02 दिवस के भीतर आदेश जारी कर कार्यालय के लॉगइन से पोर्टल पर अपलोड करें तथा मूल आदेश जरिये रजिस्टर्ड डाक भिजवाया जाना सुनिश्चित करें। ऑनलाइन आदेश जनरेट कर जारी करने से पूर्व इस बात की सुनिश्चितता कर ली जाये कि आदेश–प्रारूप में, विद्यालय द्वारा आवेदन में प्रदर्शित विवरण, आदेश के समस्त फील्ड का मिलान कर लिया गया है।

26. प्रकरण के संबंध में यदि कोई आक्षेप हो तो आक्षेप पूर्ति का अवसर संबंधित विद्यालय को दिया जाये। DEO कार्यालय स्तर पर लगाये गये आक्षेपों को संबंधित DEO कार्यालय आक्षेपित दस्तावेजो को आक्षेप प्रमाणीकरण पश्चात ही निदेशालय को भिजवावे। बिना ऑनलाइन फॉरवर्ड किये मूल फाईल कार्यालय को नहीं भिजवाई जाये। संबंधित DEO मान्यता आवेदन पत्रावली निदेशालय को प्रेषित करने से पूर्व यह सुनिश्चित करेगा कि फाईल की पृष्ठांकन सही हो एवं दस्तावेज चैक लिस्ट के क्रमानुसार ही लगे हो एवं वांछित आवेदन के अनुसार पत्रावली पूर्ण हो।

27. निदेशालय स्तर द्वारा किसी भी संस्था के मान्यता आवेदन को नामंजूर/इन्कार किये जाने पर संस्था द्वारा राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था अधिनियम 1989 एवं नियम 1993 की धारा–4 एवं नियम–6 में वर्णित प्रावधानों के अनुसरण में शासन स्तर पर विशिष्ट शासन सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर को अपील प्रस्तुत की जा सकती है। धारा–4 में निम्नानुसार प्रावधान उपलब्ध है:–

**धारा–4:–मान्यता के इंकार के विरूद्ध अपील:–**

(1) जहाँ किसी संस्था को मान्यता से इंकार किया जाये वहाँ ऐसे इंकार से व्यथित कोई भी व्यक्ति, उसे ऐसे इंकार की संसूचना दिये जाने की तारीख से 30 दिन के भीतर–भीतर, ऐसे इंकार के विरूद्ध ऐसे अधिकारी को, जिसे कि विहित किया जाये, विहित रीति से अपील कर सकेगा।

(2) उप–धारा (1) के अधीन की गयी किसी अपील की सुनवाई पर उक्त प्राधिकारी, अपीलार्थी को सुनवाई का अवसर देने के पश्चात्, उस आदेश को, जिससे कि विरूद्ध अपील की गई है, पुष्ट या उपान्तरित कर सकेगा या उससे उलट सकेगा और उस पर इसका विनिश्चय अन्तिम होगा।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि उक्त 30 दिवस की अवधि जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा पीएसपी पोर्टल से ऑनलाइन जनरेट कर जारी किये गये नामंजूर प्रमाण पत्र की दिनांक से 30 दिवस रहेगी।

28. निदेशालय स्तर द्वारा संस्थाओं के आवेदनों को मंजूर/नामंजूर किये जाने के उपरान्त जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों द्वारा संस्थाओं के मान्यता

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

मंजूर/नामंजूर प्रमाण पत्र समय पर जनरेट/जारी नहीं किये जाते है। जिससे मान्यता/अपील की प्रक्रिया में अनावश्यक विलम्ब होता है एवं सत्र व्यतीत होने के पश्चात भी व्यक्तिगत सुनवाई जारी रहती है। इस हेतु सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया जाए कि निदेशालय स्तर से जारी स्वीकृति/अस्वीकृति प्रकरणों पर त्वरित कार्यवाही करते हुए संबंधित संस्थाओं को मान्यता मंजूर/नामंजूर प्रमाण पत्र अविलम्ब जारी किये जाए।

**नोटः**– इस कार्य को समयबद्व किये जाने को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें, विलम्ब की स्थिति में आप स्वयं की जिम्मेदारी रहेगी।

(संलग्नः–

1. शासन का पत्र दिनांक 22.12.2022
2. एक्सल प्रारूप
3. चैक लिस्ट (प्रारम्भिक/माध्यमिक)

• **(गौरव अग्रवाल)** आइ.ए.एस, निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

| माह : **जनवरी, 2023** | **विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम** | प्रसारण समय : **दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक** |
|---|---|---|

| दिनांक | वार | आकाशवाणी केन्द्र | कक्षा | विषय | पाठ क्रमांक | पाठ का नाम | आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06.01.23 | शुक्रवार | उदयपुर | 8 | विज्ञान | – | परीक्षामाला | लखन शर्मा |
| 07.01.23 | शनिवार | जयपुर | NO BAG DAY | | | गैर पाठ्यक्रम | |
| 09.01.23 | सोमवार | जयपुर | 12 | राजनीति विज्ञान | – | परीक्षामाला | संतोष यादव |
| 10.01.23 | मंगलवार | जोधपुर | 10 | हिन्दी | – | परीक्षामाला | अकमल नईम |
| 11.01.23 | बुधवार | कोटा(जयपुर) | 12 | व्या. अध्ययन | – | परीक्षामाला | हरिमोहन गुप्ता |
| 12.01.23 | गुरूवार | जयपुर | गैर पाठ्यक्रम (कॅरियर डे-विवेकानन्द जयंती) | | | | |
| 13.01.23 | शुक्रवार | बीकानेर | 8 | संस्कृत | – | परीक्षामाला | रचना सारण |
| 14.01.23 | शनिवार | जयपुर | NO BAG DAY | | | गैर पाठ्यक्रम | |
| 16.01.23 | सोमवार | जयपुर | 12 | जीव विज्ञान | – | परीक्षामाला | सुनीता अग्रवाल |
| 17.01.23 | मंगलवार | जोधपुर | 5 | अंग्रेजी | – | परीक्षामाला | डॉ. मीना जांगिड़ |
| 18.01.23 | बुधवार | कोटा(जयपुर) | 8 | सामाजिक विज्ञान | – | परीक्षामाला | नवीन गहलोत |
| 19.01.23 | गुरूवार | उदयपुर | 10 | संस्कृत | – | परीक्षामाला | पुष्कर आमेटा |
| 20.01.23 | शुक्रवार | बीकानेर | 12 | इतिहास | – | परीक्षामाला | भुवनेश्वर सिंह भाटी |
| 21.01.23 | शनिवार | जयपुर | NO BAG DAY | | | गैर पाठ्यक्रम | |
| 23.01.23 | सोमवार | जयपुर | सुभाष चन्द बोस जयंती (गैर पाठ्यक्रम) | | | | |
| 24.01.23 | मंगलवार | जोधपुर | 12 | भौतिक विज्ञान | – | परीक्षामाला | डॉ. महेश चन्द्र शर्मा |
| 25.01.23 | बुधवार | कोटा(जयपुर) | 8 | अंग्रेजी | – | परीक्षामाला | श्रीमती पंकज सेन |
| 27.01.23 | शुक्रवार | बीकानेर | 10 | सामाजिक विज्ञान | – | परीक्षामाला | मोनिका |
| 28.01.23 | शनिवार | जयपुर | NO BAG DAY | | | गैर पाठ्यक्रम | |
| 30.01.23 | सोमवार | जयपुर | शहीद दिवस (गैर पाठ्यक्रम) | | | | |
| 31.01.23 | मंगलवार | उदयपुर | 12 | हिन्दी साहित्य | – | परीक्षामाला | जगदीश चौबिसा |

● कार्य दिवस–22 ● कुल प्रसारण दिवस–21 ● अवकाश–09 ● पाठ्यक्रम आधारित–14 ● गैर पाठ्यक्रम आधारित–7

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

## शिविरा पञ्चाङ्ग

| जनवरी-2023 | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| सोम | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| मंगल | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| बुध | 4 | 11 | 18 | 25 | |
| गुरु | 5 | 12 | 19 | 26 | |
| शुक्र | 6 | 13 | 20 | 27 | |
| शनि | 7 | 14 | 21 | 28 | |

**जनवरी 2023 ● कार्य दिवस–21, रविवार–05, अवकाश–06, उत्सव–05 ● 01 से 05 जनवरी :** शीतकालीन अवकाश जारी। **04 जनवरी :** विश्व ब्रेल दिवस (समग्र शिक्षा)। **07 जनवरी :** PTM-III का आयोजन सामुदायिक बाल सभा का आयोजन–(विद्यालय परिसर में) अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणामों को अभिभावकों को प्रदर्शित करना। **09 से 11 जनवरी :** रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता राज्य स्तर (RSCERT)। **12 जनवरी :** स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस–उत्सव), केरियर डे। **14 जनवरी :** मकर सक्रान्ति (उत्सव)। **21 जनवरी :** सामुदायिक वृहद बाल सभा आयोजन–सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर। **23 जनवरी :** सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)। **26 जनवरी :** गणतंत्र दिवस (अवकाश–उत्सव अनिवार्य), बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। **30 जनवरी :** शहीद दिवस (प्रात: 11.00 बजे दो मिनट का मौन)(महात्मा गांधी पुण्य तिथि)। **जनवरी–2023 :** मा.शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यवसायिक कौशल, उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। **नोट :** 1. द्वितीय योगात्मक आकलन का आयोजन–CCE/SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)। 2. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। ● प्रत्येक मंगलवार–IFA नीली गोली (कक्षा 6–12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1–5) (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार–विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें। ● DAG की चतुर्थ बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है व DCG की तृतीय बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है। ● राष्ट्रीय स्तरीय कला उत्सव (विद्यार्थियों के लिए )जनवरी के प्रथम सप्ताह में (समग्र शिक्षा)

Rajasthan Education Department

### राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर

प्रभाग–4, शैक्षणिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर

**January - 2023**

**Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya**

| S.No. | Class | Link for Monthly schedule | QR Code | S.No. | Class | Link for Monthly schedule | QR Code |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | Class I | https://bit.ly/3l4e0oZ | | 7 | Class VII | https://bit.ly/3WFRbvS | |
| 2 | Class II | https://bit.ly/3VlpBTT | | 8 | Class VIII | https://bit.ly/3jvnteS | |
| 3 | Class III | https://bit.ly/3GlE3qH | | 9 | Class IX | https://bit.ly/3hULATW | |
| 4 | Class IV | https://bit.ly/3vjEAD9 | | 10 | Class X | https://bit.ly/3YQ5aRS | |
| 5 | Class V | https://bit.ly/3YIWfS6 | | 11 | Class XI | https://bit.ly/3GlhXVb | |
| 6 | Class VI | https://bit.ly/3hZPyKR | | 12 | Class XII | https://bit.ly/3Gnmjva | |

## मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

# स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल करौली

❐ राजेश कुमार मीना

स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल योजना राज्य सरकार की एक महत्त्वाकांक्षी योजना है, जिसका प्रमुख उद्देश्य राज्य के शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक में केंद्रीय विद्यालय के समकक्ष स्तर की सुविधाएँ उपलब्ध कराना है। इस योजना के अंतर्गत प्रथम चरण में 71 तथा द्वितीय चरण में 63 कुल 134 मॉडल स्कूलों की स्थापना राज्य सरकार द्वारा की गई। स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल ब्लॉक करौली रणगंमा तालाब के ऊपर सिविल लाइन के पीछे एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। यह स्थान अत्यंत रमणीक है एवं वर्षा के मौसम में इसकी प्राकृतिक सुंदरता सभी को आकर्षित करती है।

अन्य सरकारी विद्यालयों के समान मॉडल स्कूल में भी मिड डे मील, ट्रांसपोर्ट वाउचर, निःशुल्क साइकिल, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक, छात्रवृत्ति इत्यादि राज्य सरकार की योजनाएँ संचालित हैं। मॉडल स्कूल करौली वर्तमान में कक्षा 12 तक संचालित है। विद्यालय में नर्सरी से लेकर पाँचवी तक की कक्षाएँ आगामी शिक्षण सत्र से प्रारंभ होने की पूर्ण आशा है। इस हेतु एक करोड़ की लागत से प्राइमरी भवन बनकर तैयार हो चुका है। इस स्कूल में शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी है।

मॉडल स्कूल करौली का भवन अत्याधुनिक ढंग से निर्मित सर्व सुविधा संपन्न भवन है। प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों को बैठने के लिए फर्नीचर एवं पंखे की सुविधा उपलब्ध है। आर.ओ. वाटर कूलर के माध्यम से विद्यार्थियों को शुद्ध एवं शीतल पेयजल उपलब्ध कराया जाता है। कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों के लिए यहाँ उच्च स्तरीय भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान तथा इन्फॉर्मेशन प्रैक्टिस की प्रयोगशाला उपलब्ध है, जहाँ पूरे सत्र विद्यार्थियों को कुशल व्याख्याताओं द्वारा प्रायोगिक अभ्यास करवाए जाते हैं।

इस विद्यालय की कंप्यूटर प्रयोगशाला जिले की सबसे समृद्ध प्रयोगशाला है, जो कि पूर्णतया एयर कंडीशन है। इस प्रयोगशाला में 40 विद्यार्थी एक साथ बैठ सकते हैं। शीघ्र ही एक और कंप्यूटर प्रयोगशाला स्थापित करने की योजना है। मॉडल स्कूल करौली को जिले में अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना का भी गौरव प्राप्त है। इस लैब की स्थापना नीति आयोग द्वारा 12 लाख रुपए की लागत से की गई है। यह लैब अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, ड्रोन, हवाई जहाज रॉबोट तथा 3D प्रिंटर से सुसज्जित है। इस लैब में सृजनशील बालक अपनी कल्पना शक्ति को वास्तविक रूप प्रदान करते हैं।

विद्यालय में बालक-बालिकाओं के लिए आउटडोर और इंडोर दोनों ही प्रकार के खेलों की सुविधा उपलब्ध है, जहाँ विद्यार्थी अपनी-अपनी रुचियों के आधार पर खेलों का अभ्यास करते हैं। इन खेलों में टेबल टेनिस, वॉलीबॉल, क्रिकेट, खो-खो, बैडमिंटन, ऊँची कूद, लंबी कूद, कबड्डी, शतरंज इत्यादि खेल शामिल हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित खेल टूर्नामेंट में स्थानीय विद्यालय के छात्र-छात्राएँ भाग लेते हैं एवं जिला स्तर एवं राज्य स्तर पर विजेता होने का गौरव प्राप्त करते हैं। खेल टूर्नामेंट के अतिरिक्त इस स्कूल के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। इन प्रतियोगिताओं में इंग्लिश ड्रामा (जिसमें मॉडल स्कूल करौली क्लस्टर लेवल पर विजेता रहा है और राज्य स्तर पर नागौर में क्लस्टर का प्रतिनिधित्व किया है) मैथ्स ओलंपियाड, बैंड वादन (इस प्रतियोगिता में मॉडल स्कूल करौली का वर्चस्व रहा है विगत 4 वर्षों से लगातार क्लस्टर लेवल पर विजेता रहते हुए 4 बार राज्य स्तर पर क्लस्टर का प्रतिनिधित्व किया है) इंग्लिश एक्सटेम्पॉर, पेंटिंग आर्ट एंड क्राफ्ट, सोशल साइंस वाद-विवाद प्रतियोगिता (इस प्रतियोगिता में मॉडल स्कूल करौली की छात्रा सुनैना सिंह ने राज्य स्तर पर विजेता होने का गौरव प्राप्त किया है) साइंस फेयर, रीजनल आई टी क्विज कॉम्पटीशन इत्यादि प्रतियोगिताएँ शामिल हैं। ये प्रतियोगिताएँ क्लस्टर लेवल पर आयोजित होती हैं जिसमें करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर जिले के 10 मॉडल स्कूलों की टीमें भाग लेती हैं। क्लस्टर लेवल पर विजेता टीम स्टेट लेवल पर आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेती है। मॉडल स्कूल करौली को कई प्रतियोगिताओं में कलस्टर एवं स्टेट लेवल पर विजेता होने का गौरव प्राप्त है।

मॉडल स्कूल करौली में ईको क्लब एवं स्काउट गाइड की गतिविधियाँ भी संचालित हैं। इको क्लब के माध्यम से जहाँ विद्यार्थियों में पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति जागरूकता का विकास होता है वहीं स्काउट गाइड के माध्यम से विद्यार्थियों में समाज एवं राष्ट्र की सेवा के संस्कार विकसित होते हैं। विगत शैक्षिक सत्र में विद्यालय के 10 स्काउट छात्रों को राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

विद्यालय का शैक्षणिक रिकॉर्ड विद्यालय की स्थापना से ही उत्कृष्ट कोटि का रहा है। इस विद्यालय में सभी विषयों के योग्य एवं अनुभवी शिक्षक हैं, जो पूर्ण मनोयोग के साथ विद्यार्थियों को अध्यापन कार्य कराते हैं। समय-समय पर शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के घर-घर जाकर उनके अभिभावकों को बालकों की शैक्षणिक स्थिति से अवगत कराया जाता है एवं विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान किया जाता है। मॉडल स्कूल करौली केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) नई दिल्ली से सम्बद्ध विद्यालय है। इस विद्यालय का बोर्ड परीक्षा परिणाम विगत कई वर्षों से शत-प्रतिशत रहा है। पिछले शैक्षणिक सत्र में विद्यालय की छात्रा नंदिनी शर्मा को CBSE नई दिल्ली द्वारा विशिष्ट शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करने एवं पूरे देश में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले (0.1) प्रतिशत विद्यार्थियों में स्थान बनाने के लिए विशेष सम्मान पत्र प्रदान

Rajasthan Education Department

किया गया है। यह न केवल मॉडल स्कूल करौली अपितु संपूर्ण करौली जिले के लिए गौरव की बात रही है। विद्यालय की छात्राएँ कुमारी प्रिया शर्मा एवं जैनुल इमाम को परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम के अंतर्गत नई दिल्ली जाकर प्रधानमंत्री महोदय से चर्चा करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है।

विद्यालय प्रबंधन द्वारा प्रतिवर्ष दो एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण एवं एक 3 दिवसीय शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण में विद्यार्थियों को पड़ोसी जिले के धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थानों का अवलोकन कराया जाता है जबकि तीन दिवसीय शैक्षिक भ्रमण में पड़ोसी राज्य के धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन कराया जाता है। इन शैक्षणिक भ्रमणों का संपूर्ण व्यय राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाता है। इन भ्रमणों से विद्यार्थियों में प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा सीखने की ललक पैदा होती है। विद्यार्थियों में नृत्य व संगीत के प्रति रुचि विकसित करने हेतु विद्यालय में अत्याधुनिक म्यूजिक एवं डांस रूम उपलब्ध हैं जहाँ म्यूजिक टीचर के निर्देशन में छात्र-छात्राएँ आदम कद शीशे के सामने आधुनिक संगीत उपकरणों के माध्यम से संगीत का अभ्यास करते हैं। विद्यार्थियों में हस्तकलाओं का विकास करने हेतु आर्ट्स एवं क्राफ्ट रूम की स्थापना की गई है जहाँ योग्य शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थियों को सिलाई कला, मिट्टी के खिलौने, कपड़े के खिलौने, कैनवास पेंटिंग आदि कलाओं में दक्ष किया जाता है।

जिला स्तरीय कार्यक्रम 26 जनवरी, 15 अगस्त या जो भी जिला स्तरीय कार्यक्रम शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित होता है, मॉडल स्कूल करौली के विद्यार्थियों एवं स्टाफ की भागीदारी रहती है। 2021 में श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में मुझे जिला स्तर पर सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ है वहीं 2022 में भी विद्यालय से ब्लॉक स्तर पर शिक्षक को सम्मानित होने का अवसर प्राप्त हुआ है।

वरिष्ठ अध्यापक
स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल ब्लॉक करौली (राज.)
**मो: 9929224005**

**नवाचार**

# विद्यार्थियों का मित्र बना रीडिंग लर्निंग कॉर्नर

❐ दिनकर विजयवर्गीय

जयकिशनपुरा के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में श्रीमान जिला कलेक्टर टोंक के मिशन प्रेरणा अराइज के तहत अंत्योदय रीडिंग कॉर्नर बनाया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों को कोरोना में हुए लर्निंग लॉस को दूर करने में मदद मिलेगी। खास बात यह है कि इस रीडिंग कॉर्नर में किताबों का डिस्पले ही बच्चों को पढ़ने के लिए आकर्षित करेगा। इससे उनमें पढ़ने की जिज्ञासा भी उत्पन्न होगी।

**शिक्षक पहल–** प्रेरक नवाचारी शिक्षक दिनकर विजयवर्गीय ने बताया कि रीडिंग लर्निंग कॉर्नर यानि एक ऐसी जगह जिसमें सब्जेक्ट के अलावा अन्य रोचक कक्षा स्तर की किताबें पढ़ने को मिलेंगी। इसी पर विचार विमर्श को लेकर गत दिनों प्रधानाध्यापक हेमराज माली, शिक्षक मोरपाल गुर्जर, मोहनलाल गुर्जर, शंकरलाल मीणा, रायसिंह, कन्हैयालाल शर्मा, निरमा चौधरी, घनश्याम लक्षकार, दिनकर विजयवर्गीय एवं अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के राजेंद्र सिंह, दिलीप की एक ग्रुप मीटिंग हुई, जिसमें विद्यालय के प्रत्येक कक्ष में एक रीडिंग लर्निंग कॉर्नर बनाने का निर्णय लिया गया। रीडिंग कॉर्नर में शुरुआत में पुस्तकें अजीम प्रेमजी फाउंडेशन एवं अंत्योदय फाउंडेशन मुम्बई द्वारा उपलब्ध करवाई गई हैं। सभी कक्षा-कक्षों में रीडिंग लर्निंग कॉर्नर बनने से सभी विद्यार्थियों में खुशी है। सभी कक्षा-कक्षों में संबंधित कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा ही इस रीडिंग लर्निंग कॉर्नर का संचालन किया जा रहा है। विद्यार्थी समूह में इन किताबों को पढ़ रहे हैं।

**ऐसी होगी सामग्री, जिससे बच्चे होंगे आकर्षित –** दिनकर विजयवर्गीय ने बताया कि रीडिंग लर्निंग कॉर्नर के तहत रोचक तस्वीरों, कहानियों, किताबों और अन्य पठन सामग्री को पढ़ने में शामिल किया है। जिससे बच्चों को यह पढ़ने का कोना अपनी ओर आमंत्रित कर रहा है।

**नियमित व क्रियाशील–** इसमें अलग-अलग आयु वर्ग, पठन स्तर, विविध रुचियों एवं शैलियों की पुस्तकें शामिल कर इसको नियमित व क्रियाशील बनाया है। पुस्तकालय का उपयोग बच्चों की पठन क्षमता के विकास के साथ-साथ शैक्षिक कौशल, स्वतंत्र चिंतन, सामाजिक, सांस्कृतिक जानकारी में अभिवृद्धि तथा अन्य विषयों व अभिरुचियों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगा। यह रीडिंग कॉर्नर बच्चों के भाषा विकास में सहायक होगा। बच्चे कहानियों के माध्यम से भाषा आसानी से सीख सकेंगे।

पहली से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों में पढ़ने के लिए रुचि बनाने को लेकर एक्टिविटी भी की जा रही है। इसमें अध्यापक कहानी, चित्र दिखाकर प्रार्थना में भी पढ़ा रहे हैं। पठन कौशल से बालक को अपनी संस्कृति एवं सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान देना भी इसका उद्देश्य है। बालपन से ही बच्चों में पढ़ने के लिए आदत रहे इसको लेकर ही यह रीडिंग लर्निंग कॉर्नर स्थापित किया जा रहा है।

**रीडिंग कॉर्नर के लिए कक्षा-कक्ष बेहतर–** अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के राजेंद्र सिंह, दिलीप ने बताया कि प्रारंभ से ही पढ़ने के लिए विविध प्रकार की किताबों से बच्चों का परिचय करवाया जाए। इसके लिए विद्यालय कक्षा-कक्ष बेहतर जगह है। बच्चों को वैविध्यपूर्ण किताबें उपलब्ध करवाई जानी चाहिए, जिनके साथ वह स्वयं को शामिल कर आनंद के साथ पढ़ सकें। कहानियाँ पढ़ने के लिए सार्थक संदर्भ का निमंत्रण देती हैं। कक्षा में पढ़ने का कोना बच्चों को विस्तृत पठन सामग्री उपलब्ध करवाता है। साथ ही एक स्वतंत्र पाठक बनने की प्रक्रिया में सहयोग देता है।

**इनका कहना है**

सीबीईओ विष्णु शर्मा ने बताया कि सरकार, शिक्षा विभाग, जिला कलेक्टर की मंशा के अनुरूप जयकिशनपुरा विद्यालय में रीडिंग कॉर्नर बनाने से विद्यार्थियों को पढ़ने में आनंद आ रहा है। इस नवाचार से विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

एसीबीईओ नरेंद्र सोगानी ने बताया कि मिशन प्रेरणा अराइज के तहत अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य की उपलब्धता एवं बच्चों की उन तक सुनिश्चित पहुँच के लिए यह क्रियाशील रीडिंग कॉर्नर बना है।

शिक्षक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
जयकिशनपुरा, पीपलू, टोंक (राज.)-304801
**मो:9530004735**

Rajsthan Education Department

# राज्य में गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा उन्नयन हेतु संचालित शैक्षणिक कार्यक्रम

❒ डॉ. डी.डी. गौतम

शिक्षा शब्द संस्कृत के 'शिक्ष' से लिया गया है, जिसका अर्थ 'सीखना या सिखाना' होता है। अर्थात जिस प्रक्रिया में अध्ययन और अध्यापन होता है उसे शिक्षा की संज्ञा दी गई है। शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सौद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन संभव है। शिक्षा खुशहाली व सभ्यता का प्रतीक होती है। देश की सभ्य संस्कृति, सभ्यता, आदर्श, गौरव एवं विकास आदि शिक्षा की बुनियाद पर निर्भर हैं। इसे समाज का आईना भी कहा जा सकता है।

याज्ञवलक्य के अनुसार- ''शिक्षा को मनुष्य के चरित्र निर्माण के साथ संसार भर के लिए उपयोगी बनाने का सेतु माना है।''

भारतीय परिप्रेक्ष्य में मूल्यपरक शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। वर्तमान परिदृश्य में परिवर्तन के प्रयास एवं सामंजस्य को ही नवाचार कहा गया है। इन सभी बदलावों एवं नवाचारों को समाहित करने एवं शिक्षा के स्वरूप में बदलाव के लिए शिक्षाशास्त्रियों, शिक्षाविदों एवं सरकारों द्वारा निरन्तर प्रयास किए हैं। जिससे शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत बदलाव करते हुए शिक्षा की बुनियाद को और अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सके। इसका मूल उद्देश्य देश के लिए सुनागरिक तैयार करने हैं, जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान कर सकें।

वर्तमान परिदृश्य में गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा के अन्तर्गत शैक्षिक, भौतिक, सामाजिक एवं शारीरिक कौशल का विकास अन्तर्निहित है। बुनियादी शिक्षा के द्वारा बच्चे To Make confident की ओर अग्रसर होते हैं। इससे बच्चे स्कूली शिक्षा के साथ-साथ परिवार व समाज के अनुभवों तथा व्यावहारिक ज्ञान से स्वयं सीखते हैं, साथ ही स्वत: ज्ञान का सृजन करते हैं। इसे Construction of knowledge कहते हैं। अत: उत्तरोतर कक्षाओं में अध्ययन पूर्व, बुनियादी शिक्षा का सुदृढ़ एवं गुणवत्तापूर्ण होना नितांत आवश्यक है।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के स्वरूप में गुणात्मक एवं सकारात्मक परिवर्तन और शैक्षिक उत्थान के उद्देश्य से समय-समय पर नवाचारों को सम्मिलित करते हुए बहुत सारे प्रयास होते रहे हैं। इस धारा में राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा आयोग, नीति, शिक्षाविदों एवं शिक्षाशास्त्रियों, NCF-2005, शिक्षा का अधिकार कानून-2009 एवं नई शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत 'निपुण भारत मिशन'।

**कोठारी आयोग (1964)**

- राष्ट्र स्तर पर एक समान पाठ्यक्रम का संचालन हो।
- पाठयक्रम में मातृभाषा, क्रियात्मक और रचनात्मकता को महत्त्व।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)**

- शिक्षा का ढाँचा 10+2+3
- प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा में हो।

**यशपाल समिति (1992)**

- स्कूल बैग का बोझ कम करने के उपाय।
- गणित को रटने के बजाय समझना।

**राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-2005)**

- बाल केन्द्रित शिक्षण को कक्षा-कक्ष की गतिविधि से जोड़ा जाए।
- शिक्षण-अधिगम में बच्चों को क्षमता और कौशल विकास के अवसर।

**नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून (RTE-2009)**

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21-A के तहत 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा करवाने का कानून।
- शिक्षा प्राप्त करना बच्चे का मौलिक अधिकार।
- प्रत्येक बच्चे के पढ़ने के स्तर व गति की जाँच एवं प्रगति का दस्तावेजीकरण।
- बाल केन्द्रित शिक्षण एवं गतिविधि आधारित अधिगम।
- रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन के आधार पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रावधान।

**नई शिक्षा नीति-2020** : नई शिक्षा नीति-2020 के तहत हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करने की अनुशंसा के साथ-साथ शिक्षण व्यवस्था में लचीलापन की अपेक्षा की गई है, जिसमें विद्यार्थी अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार जीवन जीने का रास्ता सहज भाव से खोज सके। भारत सरकार द्वारा 2030 तक नीतिगत पहलुओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति लागू की गई है, जिसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास के साथ-साथ बचपन को सुदृढ़ बनाना है। इसमें ऐसे उत्पादक को तैयार करना है जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान दे सके।

**FLN और निपुण भारत मिशन:** वर्तमान परिदृश्य में प्राथमिक स्तर पर अनेक बच्चे सामान्य लेख को पढ़ने, समझने और अंकों के साथ बुनियादी जोड़ और घटाव की दक्षता नहीं रखते हैं। इसी को संज्ञान में रखते हुए नई शिक्षा नीति-2020 में तात्कालिक उपायों और अल्पावधि में कक्षा-3 तक मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) को आवश्यक रूप से शामिल किया गया है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्राथमिक आधार पर आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता को प्राप्त करने के लिए चरणबद्ध तरीके से योजना तैयार की गई है। 'निपुण भारत मिशन' के अन्तर्गत 2025 तक प्राथमिक विद्यालय में सार्वभौमिक आधारभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इससे प्रत्येक विद्यार्थी कक्षा-3 के अंत तक पढ़ने, लिखने और अंकगणित में वांछित सीखने की दक्षता प्राप्त कर सकेगा।

उक्त सभी सुझावों एवं सिफारिशों में प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण

Rajasthan Education Department

शिक्षा सुनिश्चित करने, संस्थाओं का संगठनात्मक ढाँचा मजबूत करने, शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने तथा प्रत्येक बच्चे को अधिगम के समान अवसर उपलब्ध करवाने का मुख्य प्रयास रहा है, जिससे बच्चे सीखने में ज्ञान सृजन करते हुए सशक्तीकरण, सक्रिय सहभागिता, भावनात्मक संबलन आत्मविश्वास के कौशल को हासिल कर सकें। अधिगम प्रक्रिया में समग्रता, समसामयिक संदर्भ में सर्वांगीण विकास, बुनियादी शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक बहुआयामी संप्रत्यय है अर्थात एक ऐसी विकासमान अवधारणा है जिसमें बच्चों में उनकी क्षमताओं के अनुरूप उन्मुख दृष्टिकोण और बुनियादी कौशल के साथ-साथ व्यक्तिगत क्षमताओं, रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा मूल्यपरक एवं संस्कारी शिक्षा सुनिश्चित हो सके। अत: औपचारिक शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए निम्नांकित उद्देश्य समाहित किए जाने अपेक्षित हैं:-

**गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य**

- शिक्षार्थियों में पूर्णतम मात्रा तक शारीरिक व मानसिक योग्यताओं का विकास करना।
- बच्चों में उच्च कौशल विकास एवं ज्ञान सृजन करने की क्षमताओं को विकसित करना।
- बुनियादी/सार्वभौमिक साक्षरता को सुनिश्चित करना।
- शिक्षा को बाल केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित बनाना।
- शिक्षण प्रक्रिया में समग्रता एवं समसामयिक संदर्भ में बच्चों का चहुँमुखी विकास करना।

**गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आयाम**

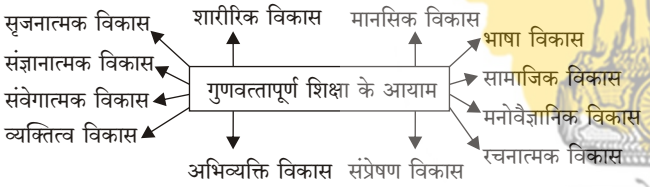


**गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के घटक : राज्य में गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा हेतु किए जा रहे प्रयास**

भारतीय संविधान की भावना सबके लिए शिक्षा (Education for all) के अनुक्रम में राज्य में शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए 1986 से ही विभिन्न कार्यक्रम एवं योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इसी क्रम में 90 के दशक में अनेक शैक्षिक परियोजनाएँ प्रारम्भ करते हुए सार्वभौमिक शिक्षा, शत प्रतिशत नामांकन तथा सभी बच्चों का विद्यालय में ठहराव के लक्ष्य रखते हुए कक्षा-8 तक की शिक्षा पूर्ण कर सके। नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अन्तर्गत कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके इस हेतु सम्पूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अन्तर्गत :-

- 6 से 14 वर्ष के बच्चों का शत-प्रतिशत नामांकन।
- सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बाल केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित बनाना।
- बच्चों का विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित करना।
- शिक्षा उन्नयन में समुदाय की सहभागिता व स्वामित्व का विकास।

इस प्रकार जन भागीदारी द्वारा प्रोत्साहन हेतु प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर डी. पी. ई. पी. एवं सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया गया। इस हेतु संस्थागत शिक्षा के साथ-साथ वैकल्पिक शिक्षा के साधनों के उपयोग के सम्पूर्ण प्रयास किए गए। इन सभी का समेकित उद्देश्य यह था कि बच्चों को शिक्षा के दायरे में लाकर उनकी बुनियादी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने के हर संभव प्रयास किए जा सके, ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

वर्तमान में 'समग्र शिक्षा अभियान' के अन्तर्गत राज्य सरकार द्वारा शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करने तथा कोरोना काल जैसी विषम और असामान्य परिस्थितियों में शिक्षा की निरन्तरता को बनाए रखने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों का समावेश करते हुए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षा में गुणात्मक अभिवृद्धि के लिए निम्नानुसार औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अनौपचारिक शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे है। जिसमें : -

**गतिविधि आधारित अधिगम (ABL):** शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को गतिविधि आधारित, आनन्ददायी, रुचिकर एवं बाल उपयोगी के साथ रचनात्मक, मूल्यपरक और बुनियादी कौशल विकसित करने के उद्देश्य से राज्य में प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से 5) में ABL प्रक्रिया को प्रभावी बनाने की विद्यालयों में कक्षावार-विषयवार दीवार लेखन के द्वारा ABL कक्ष के विकास के साथ-साथ Learning outcomes एवं FLN के उद्देश्य अनुरूप ABL किट (अधिगम सामग्री) को सहायक सामग्री के रूप में उपलब्ध करवाया गया है। शिक्षक इस किट में उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर गतिविधि आधारित शिक्षण-अधिगम करवाते हुए बच्चों की बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की समझ को और अधिक सुदृढ़ बना सकेंगे। विद्यालयों में अनुकूल एवं उपयुक्त वातावरण के साथ-साथ पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु आवश्यक उपकरण/संसाधन उपलब्ध करवाने तथा बच्चों में सक्रिय सहभागिता, भावनात्मक संबलन एवं आत्मविश्वास अभिवृद्धि के लिए ABL गतिविधि का प्रभावी संचालन किया जा रहा है।

**सीसीई:** शिक्षा शास्त्र विषय के अन्तर्गत आकलन एवं मूल्यांकन एक वृहद् विषय है, जिसका महत्त्व समसामयिक, सभी के लिए समतुल्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने को लक्ष्य मानती है। अत: ऐसी आकलन एवं मूल्यांकन व्यवस्था जो सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा का लक्ष्य हासिल करवा सके। सीसीई के संदर्भ में पहली अवधारणा

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सततता, दूसरा-आकलन जो सीखने-सीखाने की प्रक्रिया का हिस्सा है। इसमें बच्चों को सीखने के पर्याप्त एवं समान अवसरों की उपलब्धता तथा संज्ञानात्मक कौशल का मार्ग प्रशस्त होता है। बच्चों के सीखने के स्तर का दस्तावेजीकरण तथा परम्परागत शिक्षण एवं मूल्यांकन पद्धति में सकारात्मक बदलाव करते हुए विद्यालयों की कक्षा 1 से 5 में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) पद्धति को लागू किया। वर्तमान में RTE-2009 की धारा 29 (घ) की पालना में CCE के अंतर्गत शिक्षण व्यवस्था में बदलाव कर बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने, अधिगम स्तर का रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन करने, बच्चों की अपेक्षित दक्षताओं तथा प्रगति को नियमित दर्ज कर गुणवत्ता को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। CCE कार्यक्रम के प्रभावी संचालन से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उन्नयन की दिशा में सार्थक सिद्ध हो रही है।

**समुदाय सहभागिता** : विद्यालय में समुदाय की सहभागिता से न केवल बच्चों की शैक्षिक प्रगति बेहतर होती है, बल्कि इससे शिक्षक व बच्चों के मनोबल में वृद्धि होती है। अभिभावकों द्वारा शिक्षकों से चर्चा कर समस्याओं का निराकरण किया जाता है। इससे विद्यालयों में बच्चों का ठहराव एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उन्नयन में समुदाय की सहभागिता व स्वामित्व परिलक्षित होता है। इसी आशय को ध्यान में रखते हुए राज्य में सभी विद्यालयों की प्रबन्धन समिति (SMC एवं SDMC) के सदस्यों के कर्त्तव्य एवं दायित्व निर्वहन के लिए प्रत्येक माह की अमावस्या के दिन बैठक का आयोजन किया जाता है। इसके अन्तर्गत बच्चों की नियमित उपस्थिति, विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित करने, ड्रॉप आउट बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा में लाने के लिए तथा सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में जारी महत्वाकांक्षी योजनाओं के क्रियान्वयन पर चर्चा की जाती है। साथ ही गत बैठकों में प्राप्त सुझावों एवं निर्णयों की समीक्षा की जाती है। यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सम्प्राप्ति का एक मुख्य पहलू है।

**बाल सभा** : बाल सभाओं के माध्यम से बालकों में अभिव्यक्ति कौशल के साथ-साथ सृजनात्मकता के कौशल का विकास निहित है, जिसमें सकारात्मक पुनर्बलन प्रदान किया जाता है। बाल सभा के माध्यम से मौखिक विचारों को रखते हुए अभिव्यक्ति की प्रेरणा के साथ-साथ व्यक्तित्व निर्माण के अवसर उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार बच्चे अपनी झिझक दूर करते हुए निडरता के कौशल हासिल करते हैं, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उद्देश्य है। बाल सभा के माध्यम से बच्चों में अभिव्यक्ति कौशल विकास के साथ-साथ विभिन्न कला कौशल के विकास से संस्कारों का बीजारोपण होता है। इससे शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक बच्चों के व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। बच्चों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए एक सुलभ प्लेटफार्म मिलता है। इन्हीं उद्देश्यों के अन्तर्गत विद्यालयों में नियमित बालसभा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें बच्चों को उनकी रुचि अनुरूप कला एवं संस्कृति आधारित सह-शैक्षिक गतिविधियों के प्रदर्शन हेतु एक उपयुक्त मंच उपलब्ध करवाया जा रहा है। इससे बच्चों में अपनी श्रेष्ठतम क्षमताओं की अभिव्यक्ति एवं प्रतिस्पर्धा के कौशल का विकास हो रहा है, जो कि गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा का एक घटक है।

**बालिका शिक्षा** : देश के निर्माण में समता मूलक शिक्षा के लिए लड़कों के साथ-साथ लड़कियों को शिक्षा प्रदान करना न केवल प्राधिकरण का अपितु समाज का भी दायित्व है। सामाजिक व्यवस्था में माँ को बच्चे की प्रथम शिक्षक कहा गया है। एक शिक्षित लड़की न केवल अपने परिवार बल्कि समाज और देश के उत्थान में अपनी महत्ती भूमिका रखती है। बालिकाओं को शिक्षा ग्रहण करना उनका मूल अधिकार भी है। हमारे समाज में अभी भी लैंगिक भेदभाव के कारण लड़कियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शिक्षा से वंचित किया जा रहा है। इसी को संज्ञान में रखते हुए महिला सशक्तीकरण के अन्तर्गत बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियान के अन्तर्गत बालिका शिक्षा उन्नयन हेतु विभिन्न योजनाएँ संचालित हैं, जिससे लड़कियों को अधिकाधिक शिक्षित किया जा सके। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं सर्वांगीण विकास के लिए बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास निहित है। अत: शिक्षित माँ से ही, बच्चों का अच्छी तरह से लालन-पालन व पोषण कर उन्हें शिक्षित करके अच्छा नागरिक बनाकर, सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज के निर्माण की परिकल्पना संभव है।

**बालिका शिक्षा उत्थान हेतु राज्य में प्रमुख योजनाएँ**

- अपनी बेटी योजना
- गार्गी एवं इन्दिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार
- निःशुल्क साइकिल एवं स्कूटी
- कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय
- ट्रांसपोर्ट वाउचर
- आत्मरक्षा प्रशिक्षण (सक्षम)
- जागृति, मीना एवं अध्यापिका मंच इत्यादि।

**समावेशिक शिक्षा (मिशन समर्थ)**: समावेशित शिक्षा के अन्तर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (नि:शक्त) की क्षमता संवर्धन, शैक्षिक उन्नयन, मुख्यधारा में समायोजन, भेदभाव को रोकने, अंतर्निहित योग्यताओं के संबलन प्रदान करने के उद्देश्य से मिशन समर्थ कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय स्तर तक वॉट्सअप समूह बनाकर विशेष आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चों की शिक्षण व्यवस्था के लिए ऑफलाइन के साथ-साथ ऑनलाइन, ऑडियो एवं वीडियो के माध्यम से अधिगम सामग्री उपलब्ध करवाते हुए निम्नांकित कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं -

- मिशन समर्थ
- ब्रेल शिक्षण अधिगम सामग्री
- असेसमेन्ट कैम्प
- परिवहन एवं एस्कॉर्ट भत्ता।
- अंश-उपकरण वितरण
- साईट सर्जरी
- संदर्भ केन्द्र इत्यादि

**SMILE:** राज्य में कोविड काल में शिक्षा की निरन्तरता एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अभिनव प्रयासों के अन्तर्गत SMILE (Social media Interface for learning

Rajasthan Education Department

Engagement) कार्यक्रम संचालित किया गया है। इसके अन्तर्गत कक्षा 1 से 12 के पाठ्यक्रम आधारित विषयवस्तु के छोटे-छोटे वीडियो के रूप में विद्यार्थियों को Online सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की गई। इस प्रक्रिया में राज्य स्तर पर स्थापित केन्द्र के माध्यम से यू-ट्यूब लिंक से जिला, ब्लॉक, पंचायत स्तर तथा प्रत्येक विद्यालय स्तर पर व्हाट्सअप समूह द्वारा कक्षावार-विषयवार शिक्षण सामग्री की पहुँच सुनिश्चित की गई। इसके अलावा जो विद्यार्थी संसाधनों के अभाव में Online व्यवस्था द्वारा सम्पर्क में नहीं थे, उन्हें शिक्षकों द्वारा घर-घर जाकर नियमित Offline शिक्षण अधिगम सामग्री की व्यवस्था का भी प्रयास किया गया। वर्तमान में शैक्षणिक गतिविधि के साथ सह-शैक्षिक गतिविधि हेतु प्रत्येक शनिवार को Online कार्यक्रम 'हवामहल' के माध्यम से रोचक एवं प्रेरणादायी लघु कहानियाँ तथा कविताएँ विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाई जा रही हैं। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम अनुरूप विषय-वस्तु के अलावा Pshchometric Assessment के लिए Aptitude और Personality Development के लिए Life Skill Development के कार्यक्रम भी सोशल मीडिया के माध्यम से संचालित किए जा रहे हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया के नवोन्मेष से अधिकाधिक बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

**रीडिंग कैम्पेन (100 दिवस आनन्ददायी अधिगम)** : राज्य में 1 जनवरी, 2022 से बच्चों के लिए आनंदमय पठन की रुचि में अभिवृद्धि के लिए रीडिंग कैम्पेन कार्यक्रम संचालित किया गया है। इसके अन्तर्गत प्राथमिक स्तर कक्षा 1 से 8 के बच्चों में पठन कौशल विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। पढ़ना, जो कि स्वाभाविक रूप से नहीं आता बल्कि, इसे सीखने की आवश्यकता होती है। इससे बच्चों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिन्तन, शब्दावली विकास और मौखिक व लिखित में अभिव्यक्त करने की दक्षता का विकास होता है।

**STAR (Set to Augment Results) रेमीडिऐशन कार्यक्रम:** कोरोना काल में बाधित शिक्षण व्यवस्था के कारण बच्चों में Learning Gap की स्थिति उत्पन्न हुई है। इसी को ध्यान में रखते हुए निदेशालय माध्यमिक शिक्षा द्वारा उपचारात्मक कार्यक्रम STAR (Set to Augment Results) संचालित किया गया है। इसके अन्तर्गत कक्षा 1 से 8 में अध्ययनरत बच्चों का प्री-टेस्ट के माध्यम से शैक्षिक स्तर का आकलन कर समूहवार उपचारात्मक शिक्षण कार्य करवाते हुए प्रत्येक बच्चे को At Grade लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस ब्रिज कोर्स के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा Behind Grade शैक्षिक स्तर वाले विद्यार्थी को कार्य-पुस्तिकाओं का नियमित अभ्यास कार्य करवाते हुए At Grade की दक्षताएँ हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

**स्कूल रेडिनेश/विद्या प्रवेश कार्यक्रम:-** विद्या प्रवेश कक्षा-1 के लिए तीन माह (90 दिवस) का प्ले आधारित तैयारी कार्यक्रम, जो कि नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत निपुण भारत मिशन की सिफारिशों के अनुसार विकसित किया गया है। इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में बच्चों के लिए अक्षर, रंग, आकार और संख्या सीखने के लिए रोचक गतिविधियाँ तैयार की गई हैं, जिससे नौनिहालों में पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ाने की सकारात्मक पहल की जा सके। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखना, उन्हें एक अच्छा संचारक बनाना है और यह सुनिश्चित करना है कि वे अच्छे शिक्षार्थी बनें और अपने पर्यावरण से जुड़ सकें ताकि बच्चों की पढ़ाई निर्बाध रूप से चल सके। यह कार्यक्रम एक खेल आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अनुसरण और विकासात्मक रूप से उपयुक्त गतिविधियों और स्थानीय खेल सामग्री के उपयोग के साथ अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने पर तैयार किया गया है।

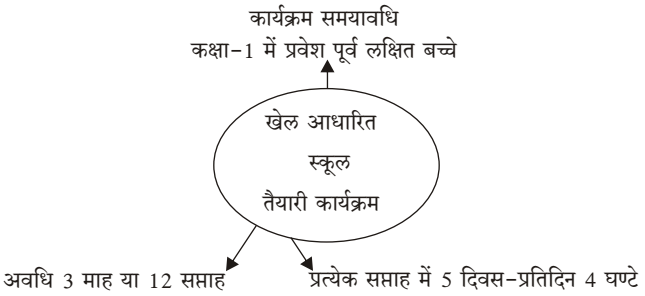


प्राय: यह देखा गया है कि स्कूल में प्रवेश करने वाले बच्चे प्रारम्भिक दिनों में सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक रूप से शिक्षा के लिए कक्षा 1 और 2 के पाठ्यक्रम में सीधे प्रवेश करने के लिए तैयार नहीं होते हैं, उन्हें एक औपचारिक शैक्षणिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने के लिए सामाजिक, भावानात्मक, भाषा, संज्ञानात्मक कौशल विकास की आवश्यकता होती है। एक सुव्यवस्थित विद्यालय तैयारी कार्यक्रम (रेडीनेस कार्यक्रम) बच्चों के सीखने के माहौल को सहज बनाता है। बच्चों की वृद्धि, विकास और सीखने में माता-पिता और समुदाय की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए सचेत प्रयास किए गए हैं। इसमें यह अपेक्षा की गई है कि गतिविधियों के माध्यम से बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक अवधारणाओं को भी सीखेंगे और ऐसे कौशल हासिल करेंगे जो प्रारम्भिक स्तर पर सीखने के लिए एक सुदृढ़ नींव के रूप में उपयोगी सिद्ध होंगे।

**बस्ता मुक्ति दिवस (नो-बैग डे):** राज्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियों को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशानुसार विद्यार्थियों के सीखने के स्तर, क्षमता एवं जटिलता के आधार पर कक्षावार समूहों का निर्माण किया जाता है। इस दिवस के आयोजन के अन्तर्गत माह के प्रथम चार शनिवार को राजस्थान को पहचानो, भाषा कौशल विकास (हिंदी व अंग्रेजी), खेलेगा राजस्थान बढ़ेगा राजस्थान, मैं भी हूँ वैज्ञानिक एवं बालसभा मेरे अपनो के साथ, जैसी थीम पर आधारित गतिविधियों का संचालन किया जाता है। इसके साथ ही माह के अन्तिम शनिवार को स्वैच्छिक श्रमदान का प्रावधान रखा गया है। इसके अतिरिक्त कला एवं संस्कृति की समझ विकसित करने तथा पारम्परिक घरेलू उद्योगों के प्रति जागरूकता का विकास एवं क्षमता संवर्धन का लक्ष्य रखा गया है।

अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
ब्लॉक कुम्हेर, भरतपुर (राज.)
**मो: 9413671118**

Rajasthan Education Department

शिक्षक की कलम से....

# सफलता की कहानी : शिक्षक की जुबानी

❒ इमरान खान

चुनौतियाँ हमें न केवल सिखाती हैं बल्कि विपरीत परिस्थितियों में आने वाली समस्याओं के समाधान भी सुझाती हैं। कुछ ऐसा ही मेरे साथ हुआ था, जब मैं अलवर जिले के एक प्राथमिक विद्यालय में एकल शिक्षक के रूप में कार्य कर रहा था। इससे पूर्व मुझे अकेले विद्यालय चलाने का कोई अनुभव नहीं था तो निश्चित रूप से मैं अब बहुत असहाय महसूस कर रहा था। मैं सोच-सोच कर ही परेशान था कि 100 से अधिक विद्यार्थियों को अनुशासन में भी रख पाऊंगा या नहीं। पाँच कक्षाओं के सभी विषयों को पढ़ाना लगभग असंभव सा काम लग रहा था। कुछ दिनों तक संघर्ष करने के बाद मैंने अपनी खुद की एक शिक्षण शैली विकसित की जिसमें मैं एक कक्षा में पढ़ाता था, दूसरी कक्षा में होशियार बच्चे मेरे द्वारा बच्चों को दिए गए काम को देखते थे, तीसरी कक्षा के बच्चे कुछ खेल विधि से शिक्षण कर रहे होते थे और एक अन्य कक्षा के बच्चे विद्यालय से संबंधित काम जैसे स्वच्छता, पेड़ पौधों में पानी देना आदि काम कर रहे होते थे और कुछ दिनों में ही मुझे यह बात समझ में आ गई कि यदि मुझे सभी बच्चों को अनुशासन में रखते हुए शिक्षण कराना है तो जरूरी है कि बच्चों को लगातार किसी न किसी रूप में व्यस्त रखूँ और इस प्रकार की गतिविधियों का निर्माण करूँ जो बच्चों को खेल लगे पर साथ ही उनमें सीखने के अवसर भी मौजूद रहें। इसलिए मैंने गत्ते और चार्ट का प्रयोग करते हुए विषय अनुसार 500 से अधिक फ्लैश कार्ड का निर्माण किया और यह निर्माण सिर्फ मेरे द्वारा नहीं किया गया बल्कि विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से यह काम किया। मुझे वह दृश्य आज भी याद है जब कुछ बच्चे कैंची की मदद से बड़े कार्ड को एक निश्चित आकार में काट रहे थे। कुछ उस पर गोंद लगाकर चार्ट पेपर चिपका रहे थे। कुछ स्केल और पेंसिल से दो लाइन खींच रहे थे जिससे उनके बीच शब्द को लिखा जा सके। कुछ उनको सूखने के लिए धूप में रख रहे थे। और मैं मार्कर पेन के माध्यम से अंग्रेजी की स्पेलिंग जैसे पशु-पक्षियों के नाम, रंगों के नाम, शरीर के अंगों के नाम, दिनों के नाम आदि अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत भाषा में लिख रहा था। इसी प्रकार हिंदी के शब्द, अंक, एक तरफ शब्द दूसरी तरफ उसका विलोम शब्द आदि उन पर लिख दिए और इस प्रकार खेले-खेल में कई कार्ड्स के बंडल तैयार हो गए। जिनको अलग-अलग रंग के डिब्बों में रखा गया। इन कार्ड्स का प्रयोग शिक्षण के दौरान किया गया। फ्लैश कार्ड के माध्यम से कक्षा में बालक और बालिकाओं के मध्य प्रतिस्पर्धा करते हुए खेल विधि से शिक्षण कराया गया।

इस दौरान बड़ी रोचक बात यह रही कि एक बार खेल खेलने के पश्चात बच्चों ने स्वयं ही उन कार्ड्स को पढ़कर याद कर लिया और जो बच्चे कमजोर थे उनको भी सिखा दिया जिससे कि उनका ग्रुप पीछे ना रहे। इसी प्रकार विद्यालय परिसर में अलग-अलग कक्षा अनुसार कुछ पौधे लगाए गए जिनकी जिम्मेदारी भी अपनी अपनी कक्षा को दी गई। वे उनकी देखरेख बड़े चाव से करते थे नियमित रूप से पानी देना, खरपतवार को निकाल देना, पेड़ के आसपास साफ सफाई रखना और अन्य कक्षा के पेड़ों से तुलना कर बात करना कि हमारा पौधा अधिक तेजी से बढ़ रहा है, बच्चों को बहुत पसंद आता था। विद्यालय परिसर को भी स्वच्छता की दृष्टि से कुछ भागों में बांटा गया जिसकी जिम्मेदारी कक्षा अनुसार दे दी गई। परिसर में बच्चों के द्वारा फाड़े गए कागजों को नियमित रूप से एक लाइन में खड़े होकर 5 मिनट के अंदर ही सभी बच्चे चलते हुए उठा लेते थे और डस्टबिन में डाल देते। एकल शिक्षक के रूप में मैं वहाँ पर ना केवल विद्यालय का प्रधानाध्यापक था, बल्कि शिक्षक भी था, चपरासी भी था और बच्चों का अभिभावक भी क्योंकि कई बार बच्चे लड़ जाते और उनको चोट लग जाती तो उस स्थिति में मुझे ही मरहम पट्टी भी करनी पड़ती थी। शिक्षण को रोचक बनाने के लिए जो भी संभव होता मैं वह करता था मैंने 2005 में स्वयं निर्मित प्रोजेक्टर बनाया जिसमें रिचार्जेबल बैटरी के माध्यम से रोशनी की जाती थी और प्लास्टिक की सीट पर परमानेंट मार्कर से लिखे गए शब्दों चित्रों को दीवार पर प्रोजेक्ट किया जा सकता था। इसके अलावा विज्ञान को रोचक बनाने के उद्देश्य से बहुत सारे मॉडल्स का निर्माण किया गया जो आस पड़ौस में मौजूद सामग्री का प्रयोग करते हुए बनाए गए थे और इनके निर्माण में बच्चों ने पूरा सहयोग प्रदान किया था।

2005 के पश्चात ग्रामीण क्षेत्रों में भी मोबाइल ने अपनी पहुँच बनाना शुरू कर दिया था। शुरुआती दौर में छोटी स्क्रीन के मोबाइल हुआ करते थे पर उनमें भी रोचक गेम होते थे जैसे स्नेक, स्पेस इम्पैक्ट, सुडोकू, कार रेस आदि। मुझे आज भी याद है कि गणित में एक नादान बच्चे की शिकायत जब मैं उसके दादाजी से कर रहा था और उस लड़के ने अपने दादा से फोन लिया और वह गेम खेलने लगा। जब मैं उसको डांटने गया तो मैंने देखा कि वह सुडोकू खेल रहा था। कक्षा पाँच का वह बच्चा बड़े गौर से सुडोकु को हल करने का प्रयास कर रहा था और मैं उसी बच्चे की शिकायत उसके दादाजी से कर रहा था कि यह गणित में अच्छा नहीं है। जब मैंने यह देखा तो एक बात जरूर समझ में आ गई कि आने वाले समय में निश्चित रूप से मोबाइल शिक्षण में भी बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला है। यदि समय रहते हमने मोबाइल का प्रयोग शिक्षा में बेहतर तरीके से नहीं किया तो निश्चित रूप से यह बच्चों के कीमती समय को दूसरे कामों में जाया कर देगा। एक बात और भी समझ में आ गई कि हम चाहे कितनी भी कोशिश कर ले पर बच्चों को मोबाइल से दूर नहीं कर सकते। इस एक छोटी सी घटना ने मुझे प्रेरित किया कि क्यों ना इस दिशा में सोचा जाए और कोशिश की जाए कि मोबाइल में भी कुछ बनाया जा सके जिसका प्रयोग बच्चे पढ़ाई में कर सकें।

बस इसीलिए मैंने इंटरनेट कनेक्शन लिया और सीखने के लिए गूगल का प्रयोग करते हुए 2009 में अपनी पहली वेबसाइट बनाई। यह वेबसाइट सिंपल एचटीएमएल पेजेज पर आधारित थी पर इन एचटीएमएल पेज में मैंने शिक्षा से संबंधित सामग्री का समावेश किया। मेरी पहली ऑफलाइन वेबसाइट चंद्र यात्रा से संबंधित थी जिसमें नील आर्मस्ट्रांग के चांद

Rajasthan Education Department

यात्रा की कहानी को किताब से थोड़े अलग तरीके से दिखाने का प्रयास किया गया था। इसमें आकर्षक चित्रों का भी समावेश किया गया और ऐसे तथ्यों का भी समावेश किया गया जिनको पुस्तक में नहीं दिया गया था। तब तक मेरे विद्यालय में सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से 3 कंप्यूटर भी आ चुके थे। मैंने इस वेबसाइट को उन कंप्यूटर में लोड कर दिया और बच्चे जब उनको समय मिलता तो बड़े गौर से इन पेजेज को पढ़ते, देखते और बड़ी आसानी से उस अध्याय के बारे में सीख गए। इसी प्रकार के ऑफलाइन वेब पेजेज का प्रयोग मैंने अंग्रेजी और गणित के लिए भी किया। पैराग्राफ में कुछ शब्दों को बोल्ड कर दिया और नीचे लिखा हुआ था कि इन शब्दों को अपनी नोटबुक में अंकित करें और उनके विलोम शब्द लिखें। जितना कोडिंग को मैं सीख रहा था धीरे-धीरे उसे प्रयोग में ले रहा था। उस समय मैंने कभी नहीं सोचा था यह छोटे छोटे प्रयोग मुझे एक दिन एप डवलपर बना देंगे।

मुझे याद है वह दिन 2011 में जिला कलक्टर अलवर ने मेरी वेबसाइट देखी और उसकी प्रशंसा की और कहा कि इमरान डाइट अलवर की तथा अलवर के 50 सबसे अच्छे काम कर रहे विद्यालय की वेबसाइट बनाएँ। तब तक मैं स्टैटिक वेबसाइट ही बनाता था जिसमें काफी समय लगता था और उसके पश्चात बहुत सारी वेबसाइट बनाने की बात आई तो मैंने सर्वर साइड लैंग्वेज पी एच पी सीखी और अपना खुद का सीएमएस कंटेंट मैनेजमेंट सिस्टम तैयार किया। जिसके माध्यम से बहुत तेजी से वेबसाइट बनाई जा सकती थी। इसके माध्यम से 50 श्रेष्ठ विद्यालयों की वेबसाइट का निर्माण किया गया और साथ ही एक डाइट अलवर तथा अलवर स्कूल पोर्टल का भी निर्माण किया जिसमें जिले के सभी विद्यालयों से संबंधित डाटा अपलोड किये गए थे। इसके पश्चात 2012 में मैंने अपना पहला एप बनाया जो कक्षा 9 की विज्ञान के लिए था और बस सिलसिला चलता गया 2015 तक मेरे 50 एप्स थे जिनके 35 लाख यूजर्स थे। केंद्र सरकार ने नई शिक्षा नीति से संबंधित एक मीटिंग में आमंत्रित किया जिसमें शिक्षा में हो रहे नवाचार से संबंधित बातें साझा की जानी थी। इस मीटिंग में मेरे ऐप्स को भी प्रदर्शित किया जिन्हें तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी द्वारा बहुत पसंद किया गया। और, हमने नवंबर 2015 में 50 ऐप्स मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से भारत सरकार को मुफ्त में समर्पित कर दिए।

जिसका जिक्र स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा वेम्बली स्टेडियम लंदन में किया गया। मुझे शिक्षा में सूचना तकनीक के प्रयोग को नवाचारी तरीके से बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय आईसीटी शिक्षक पुरस्कार 2016 से सम्मानित किया गया। राजस्थान सरकार द्वारा भामाशाह पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2017 में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 2019 में ग्रामीण क्षेत्र में विज्ञान और तकनीक के प्रयोग के लिए जमना लाल बजाज पुरस्कार भी मिला। मुझे अपने एप्स को प्रदर्शित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव, आईआईटी दिल्ली में बुलाया गया। इसके अलावा लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी, एनसीईआरटी दिल्ली सहित बहुत से विश्वविद्यालयों में आमंत्रित किया गया।

हाल ही में मेरा चयन फुलब्राइट डिस्टिंगुइस अवार्ड फॉर इंटरनेशनल टीचर्स के लिए हुआ है यह पुरस्कार अमेरिकी सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। इसके तहत विश्वभर से 50 शिक्षकों को और भारत से अधिकतम 4 शिक्षकों को किसी अमेरिकी विश्वविद्यालय में प्रोजेक्ट करने का अवसर मिलता है और लगभग 5 महीने अमेरिका में रहने का अवसर मिलता है।

मेरा उद्देश्य सूचना एवं संचार तकनीक के माध्यम से विद्यार्थियों को घर बैठे गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री मुहैया कराना है और इसी उद्देश्य के लिए मैं अब तक 100 शैक्षिक एप्स का निर्माण कर चुका हूँ। गूगल एनालिटिक्स के मुताबिक लगभग तीन करोड़ यूजर्स ने अब तक इन एप्स का प्रयोग किया है। अधिकतर यूजर्स भारत (94%) से है लेकिन भारत के अलावा भी 50 देशों में इन एप्स का प्रयोग किया जाता है। मैंने भारत सरकार के लिए हाल ही में प्रशस्त एप का निर्माण किया है जिसके माध्यम से विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की डिसेबिलिटी स्क्रीनिंग की जा सकती है। इसके अलावा राजस्थान सरकार के लिए दिशारी, देववाणी और गीर्वाणी एप का निर्माण किया है। कोरोना के दौरान मॉरीशस सरकार के लिए भी एनसीईआरटी के दिशा निर्देश अनुसार एसएसपी मॉरीशस एप का निर्माण किया गया। कोरोना लॉकडाउन के दौरान इन एप्स ने घर बैठे शिक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

**मेरे द्वारा शिक्षा के लिए बनाए गए कुछ महत्वपूर्ण एप्स :**

**देववाणी एप:** कोरोना लॉकडाउन के दौरान विद्यालय बंद हो गए थे। ऐसी स्थिति में ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षण कराने के उद्देश्य से संस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए देववाणी एप का निर्माण किया। जिसमें कक्षा 1 से लेकर 12 तक संस्कृत व अन्य सभी विषयों के ई-कंटेंट का समावेश किया गया है।

**दिशारी एप :** इस एप का निर्माण कॉलेज शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में मदद करने के उद्देश्य से किया गया है। इस एप में समसामयिकी, तर्कशक्ति, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि से संबंधित 40 हजार प्रश्नों का संकलन किया गया है और नियमित रूप से अद्यतन सामग्री अपलोड की जाती है। एप पर प्रतिदिन शाम 8:00 से 9:00 बजे तक ऑनलाइन टेस्ट का आयोजन किया जाता है। इस एप पर 6 लाख युवाओं द्वारा अब तक 2 करोड़ 80 लाख टेस्ट दिए जा चुके हैं।

**प्रशस्त एप:** भारत सरकार के लिए प्रशस्त एप का निर्माण किया है। जिसके माध्यम से सभी विद्यार्थियों की डिसेबिलिटी स्क्रीनिंग की जा सकेगी। इस ऐप के माध्यम से कक्षा अध्यापक अपने विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग कर सकता है।

**कक्षा अनुसार एप्स:** खेल-खेल में शिक्षण कराने के उद्देश्य से प्राथमिक कक्षाओं के लिए किंग ऑफ मैथ, किड्स जीके, किड्स कन्वर्सेशन, इजी मैथ, पिक्चर बुक, 20-20 एप्स, जनरल साइंस, डिजिटल पेंटिंग आदि एप्स का निर्माण किया गया है। माध्यमिक कक्षाओं के लिए इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन, हिस्ट्री जीके, हिंदी व्याकरण, भौतिक विज्ञान, ज्योग्राफी जीके, सोशल साइंस आदि एप्स का निर्माण किया है।

राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त
राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय
अलवर, (राज.)
**मो: 9785984283**

Rajasthan Education Department

# Learn Ganganagar-A Programme to Enhance English Communication Skills

❒ Arvinder Singh

Teaching English as a foreign language has always been a challenging task particularly in hindi speaking rural India. The linguistic skills of the students are limited grossly to reading and writing the answers of their textual questions only with little focus on speaking. It gravely affects the students of government schools and consequently, they find themselves half-prepared to compete with their counterparts from the high end urban private schools. The students of government schools may have better understanding of a subject, but due to lack of command over English, they still find themselves uncompetitive for corporate sector.

**Learn Ganganagar** is an innovation, intervened by District Administration of Ganganagar to bring about transformation in English communication skills of the students of government schools. The idea got its roots during Mrs. Rukmani Riar, District Collector's visit to a Mahatma Gandhi Government school, when she observed that both the teachers and the students need to polish their English communication skills to take the teaching learning activities to the desired level. Mahatma Gandhi Government school is a flagship programme of the government that differs from other schools due to its medium of learning. If the students of these schools fail to communicate in the language of their pedagogy, the whole mission will be futile. Hence, it was decided to launch a programme that would provide a platform of Spoken English classes to the students of government schools every Saturday on No-Bags day. Initially, the programme was meant to be launched in Mahatma Gandhi Government schools only, but subsequently it was extended to all government schools of the district.

**Challenges-** Since this was the first of its kind in school education in the state, the challenges were manifold. Initially, it was thought upon to involve fluent and master speakers from civil society, bureaucracy and defence services. It was decided to launch an App to invite volunteers with an option to choose a school of their choice every Saturday and contribute their free services to teach English communication skills to the students. But to make the programme sustainable, 1200 English teachers of the district needed to be trained. A Core Project team was formed under Mr. Muhammad Junaid, IAS, CEO, Zila Parishad as Nodal Officer. I was given an opportunity to execute the work in coordination with department of education and district administration. The first and foremost challenge was the selection and training of KRPs followed by the training of almost twelve hundred English teachers in the district. The development of Class appropriate modules was another task that needed to be addressed alongside.

**Training-** A meeting with Directors of leading IELTS institutes of Ganganagar was arranged under the aegis of District Collector that led the path to ten days' training to the first batch of 220 teachers. The group consisted of lecturers, senior teachers and level II teachers, who were willing to be trained with panache. Two institutes were selected, that would provide free training with boarding lodging facilities as required. Mrs. Rukmani Riar and Mr. Junaid visited the training venue almost on daily basis to see whether the training achieved its objectives. It was a huge success as almost all participating teachers enhanced their communication potential to the desired standards. The outcome of the training was appreciated far and wide not only by teaching fraternity but also got a positive coverage in print and electronic media. A group of KRPs was formed amongst the best speakers of the lot to further train the remaining teachers at block level. At the persuasion of district administration, Bhama Shahs and business houses were involved in to provide facilities for block level training. A total of 1180 teachers in English of the district were trained at zero government budgeting in April and May 2022 through a fifty hours intensive training that included group discussions, role-plays, debates, extempore, reviews, mock interviews, picture and documentary analysis etc. The training was a life changing experience for the teachers and they were very elated and motivated to learn new techniques and methods of engaging students in classroom situations. Most of them graded it as the best training of their career and sent highly positive reviews through video messages. Its impact has been observed in execution at school level.

**Preparation of Modules-** Preparing modules for actual classroom situations was another horrendous task that needed to be completed before the start of new session in July. I took up the challenge personally and formed a team of English teachers to design class appropriate modules. It was decided to prepare two sets of modules; separate ones for elementary and secondary classes. A booklet of ten modules of one hundred commonly asked questions was drafted for elementary classes. Similarly,a set of thirty activity-based modules was prepared for secondary classes, that included self-introduction, surroundings, school environment, habits, friends, decision-making, problem-solving, analysis etc. A whole range of activities that formed teachers' training was also included. After several reviews by DM Madam and CEO sir, modules were approved and shared with schools. District Administration provided funds to get two thousand copies of the modules printed so that every government school could have one copy each. A 1000 words limited vocabulary dictionary has also been developed and shared with each school in soft copy. A date-wise calendar of thirty classes was

Rajshri Education Department

prepared at the district level to ensure uniformity in all schools.

**Execution-** All government Schools of the district are conducting spoken English classes every Saturday through activities provided in the modules. The students of elementary classes are learning to respond to questions in the booklet. It has been observed during school inspections that majority of the students have been able to introduce themselves in English language. Two English words are circulated daily from the district office to all schools through social media network. Mahatma Gandhi Government schools have gone a step further to organize a competitive language activity at school level. A good number of army and BSF officers have contributed by taking model classes in MGGS. It seems to be a small step yet, but if nurtured, will transform the perception of society toward government education system. Not only will it enhance communication skills of the students, but also help them take their self-confidence to the highest level. It will bring them at par with their private school counterparts and provide them equal opportunities of employment.

Learn Ganganagar has been an awakening experience for teachers and officers of the department. It has strengthened our belief that any tiny idea of innovation, if nourished properly, can result in something excellent. It also emphasizes the need of such training to all teachers of Mahatma Gandhi Government schools Should we expect this flagship programme to flourish? The scope of training to English teachers should not be limited to theoretical knowledge but enhancement of all linguistic skills, grammar, phonetics and pronunciation. Learn Ganganagar is just a first small step towards a long journey and may best be summed up in the words of Robert Frost,

**"And miles to go before I sleep".**

ADPC- SMSA
Sri Ganganagar (Raj.)
**Mob. 9460094870**

**School Eduaction**

# Teaching English in Rajasthan

❒ **Kana Ram Sharma**

English has the major role to play in the prevalent socioeconomic era. It has been evolved into a lingua franca of the globe. Spatial barriers have been nullified with the advent of internet revolution. No human being is literally foreign today. With all this metamorphic change, there is an urging need to have a strong and wholesome communication tool to cope with all the tongue differences. English is the only possible language that can be the lingua franca with such a flexibility and evolving nature.

Keeping in view of that education system of every state or province has embarked with all the possible ways to teach English so as to run abreast the gusty waves. The School Education Department of Rajasthan is not an exception to this. We have determined best measures for the teaching and learning of English. Rajasthan School Education System is meticulously striving to get to the standard and strata of every kind.

And we, the English teachers are supposed to play a vital and pivotal role to inject English in the given conditions in the younger generation of such a unique social strata of Rajasthan. After all the advantage the modernity and globalisation provide, there are various chances of questions and challenges while teaching English in Rajasthan.

Here are some aspects that should be kept in mind while teaching English in Rajasthan:-

- Sounds and Spellings:- We have a different vocal range. Initially our throat is neither acquainted nor accustomed to the various sounds of English. For example the sounds //ɔ//, //æ//, //f//, //ð//, //ɵ// etc our pronounced far more different than Rajasthani and other Indian languages. The initial sounds of the words i.e. all, fall, boy, cat, there and thin etc are much different from any of Rajasthani and Hindi.

There is also a tendency to teach English according to the Barahkhari of Hindi where we try to find a sound for sound translation from Hindi alphabets. That's quite wrong and it actually ends up marking wrong spellings and pronunciation. There is no mutual replacement of alphabets or sounds both in English and Hindi. There are several sounds such as क, ख, ग, घ, ड़, च, छ etc that are not spoken in English.

For example the letter 'c` has its own diameter and range when the sound is concerned. It sounds as //s// as in cement and civil, //k// as in coin, corn and chemistry and //ʧ//as in chair, choice and cello. There is huge variety of such sounds that are pretty different from Rajasthani and Hindi. So we must take an utmost care of these words while pronouncing in the classroom. We cannot just do away with making the students learn mere spelling and meaning of a word. We have to focus upon the exact pronunciation of the particular word. We have to make our students know that English has to different Barahkhari. We focus and care for the twenty six letters for writing but we don't really pay any serious heed to the forty four sounds to speak. We had the topic phonetic transcription in our Senior Secondary Examination Course a couple of years back. We need to teac hphonetic transcriptions compulsorily in the early years of the school.

- Salutation and Greetings:- We teach Good morning, good afternoon, good night and good bye etc in the initial years of school and are

Rajasthan Education Department

content with telling their translations i.e. सुबह का नमस्कार, शाम का नमस्कार etc. We also put Mr., Miss or Mrs. before the names when we are trying to communicate in English. There is a need to conceptualise the real sense behind these phrases. And there is no harm done if we put Shri, Smt and Jee before or after the names.

Why don't we simply stop providing word by word translation!

We must avoid translating everything readily. We have to leave a few things to the students to let them sink in and form a habit of using the words in day to day life. We should focus on the articulation of speech for the betterment of understanding more than providing a readymade translation that makes the class rote and boring too.

- Cultural Brushes:- Rajasthan is known for its dynamic and tantalizing fabric of society. We teach a language mostly through literature. And the literature of English covers almost whole of the globe and thus varies the most. These cultural diversions should not impose any negative or contradictory effect upon the students. Rather it should be taken positively having them as the variety of ways the people live in. The teacher will need to have a level-headed attitude and outlook in such cases.
- Love:-There may be a special sort of interpretation for love in many parts of Rajasthan. The word love itself has been associated with the cinematic love where two persons sing a song around a tree, embrace or cuddle each other. So the students may react unnecessarily at the mere mention of the word love. They have to be explained the real literary meaning of love and its depth and dimensions. Once you acquaint them with the real love there will be no more giggles or furtive glances in the classroom when you will be teaching `Love across the Salt Desert`.
- Hugs and Kisses:- There is the culture of kissing the beloved in many parts of the world while Indian always try to shun such overt display of love. When such account occurs in the stories, it sometimes becomes uncomfortable to deliver the lesson. The teacher should make the environment of the class mature and level –headed before such a lesson. He must have to win the confidence of his students and make the delivery of the lesson in such a fluid and natural way that the students should only keep engrossed in the progress of the chapter.
- Food and beverages:- There is lot of difference in eating and drinking behaviour across the globe. Sometimes it becomes odd for the younger ones to know for the first time. For example The Last Lesson has the French background where the butcher totally an odd character for the students and they make faces when we talk about his profession in such an accepted manner because most of Rajasthan's village folk are vegetarian and do not want to mention names of non vegetarian dishes. Again the cook of Dr.Sadao in the chapter Enemy kills the bird while having a conversation and lets the blood flow in the Vistaria vine that looks peculiar to the innocent village folks of Rajasthan. The chapter Proposal talks about Russian wedding and about the raising the toast where liquor is the part and parcel of the customs and traditions of Russian marriage.

These accounts may cast an unfavourable effect upon the young ones if the teacher just moves ahead unattended to the nuances of such kind. We have to make a whole descriptive account without failing to link with and think about our traditional life and its norms. We have to make them believe that there can be cultural differences between the two sects and community. And it is not necessary to take everything in that we may come across on the various points. We should try to learn English keeping our culture intact.

- Geographical Divergence:- When the writer narrates the story 'We Are Not Afraid to Die if We Can All Be Together' there are numerous terms of sea and water and the chapter 'Deep Water' is also about water and fishing, boating, canoeing and picnicking etc. A child born and brought up in the Thar where water has not that abundance to have it for transportation or other purposes needs ko know about these things fully well. We talk about hills and snow in the chapter Silk Road. He or she may lose interest in Douglas and his efforts to eradicate the phobia of water if the things are not discussed properly. We should make it clear that being amongst the particular tract of land that they essentially have to hone their particular skills accordingly to survive fully well.

There are plenty of such things that can be faced during the teaching learning process of English. We can avoid uncomfortable and odd situations in the class by being aware, progressive and positive. We should always keep contemplating upon our classes and their variants. We can keep discussing these things with our colleagues and other scholar friends in the teaching field. Many a time we hear discouraging remarks about English and its future in Rajasthan.We cannot be marked as the one who lag behind and remain so. We will work hard and will do it. There are more than a single way to teach anything and we have been appointed to do the best. And lets make it the best.

Lecturer in English
Govt. Sr. Sec. School Sonpalsar, Churu (Raj.)

Rajasthan Education Department

# बालशिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

## बचपन

दुनिया का सबसे सुंदर तोहफा होता है बचपन
बचपन के बिना सूना होता है हर घर आंगन

बचपन की बातें आती है याद
वे शरारतें, वो डांट खाना, वो पिटाई
उकता गए हैं अब दुनिया के झमेलों से

बचपन तो जैसे घूम रहा हो मेलों में

कितनी रोमांचक थी वे बचपन की बातें
गलती हमारी और डांट दूसरों को
अब तो कम होता जा रहा है अपनापन
कितना अच्छा, कितना प्यारा था बचपन।

रितिका सहारण, कक्षा 12, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भैरूपुरा सीलवानी, सूरतगढ़

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

## बेटी

बेटी माता पिता का सम्मान है
फिर बेटियों का क्यों होता अपमान है।

बेटी भी बनती है माता पिता का सहारा
लगन से करती हैं घर का काम सारा
बेटों और बेटी में फर्क क्यों समझता जहान है
बेटी भी बढ़ाती परिवार का मान है।

सुनीता, कक्षा 12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भैरूपुरा सीलवानी, सूरतगढ़

# एक नया सवेरा

मत होना कभी उदास प्यारे,
अँधेरा जग का छट जाएगा।
एक न एक दिन लौटकर यहीं,
एक नया सवेरा फिर आएगा।

नव रोशनी हो इस जीवन में,
तब जाकर पथ नया पाओगे।
बड़े होकर तुम ही तो बच्चों,
राह विकास की दिखलाओगे।

कष्ट मिटेंगे सारे तुम्हारे,
बस उजले मन से विश्वास हो।
तुम भी कुछ कर जाओगे,
बस कुछ नव करने की आस हो।

शबनम, कक्षा–8, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
चौरसियावास,वार्ड 78, अजमेर (राज)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

# तितली रानी

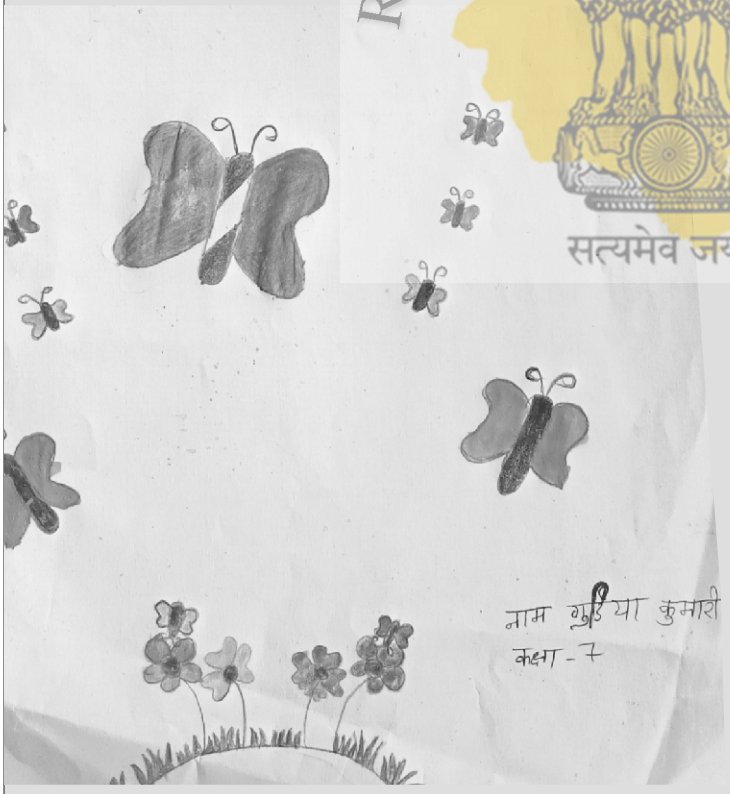


छोटी - छोटी रंग-बिरंगी तितली,
फूलों के बागों में उड़ती सुंदर तितली।
कितनी प्यारी कितनी न्यारी ये लगती,
तितली मुस्कुराती तितली खुशबू फैलाती ।
तितली खिलखिलाती तितली चमचमाती,
उड़ती-उड़ती प्यारी लगती तितली रानी,
छोटी प्यारी कितनी रंग-बिरंगी कहानी,
खूबसूरत पंखों वाली मेरे मन को भाती।

गुड़िया कुमारी, कक्षा–7, रा.बा.उ.प्रा.वि. सराणा, जालोर

# पुस्तक समीक्षा

## अदीठ डोर

**कहानीकार** : श्री राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर'; **प्रकाशक** : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर); **संस्करण प्रथम** : 2022; **मूल्य**: ₹250/-

संसार में हर क्षण घटनाओं को देखने का ढंग सबका न्यारा-न्यारा होता है। कोई उसमें अच्छाई देखता है, कोई कमियाँ ढूँढता है, कोई लाभ-हानि देखता है तो वहीं एक साहित्यकार देखता है- उसमें छिपा सामाजिक हित एवं मानवीय मूल्य। यहीं से साहित्य का जन्म होता है। राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर' का कहानी संग्रह 'अदीठ डोर' इस दृष्टि से एक उपयोगी और श्रेष्ठ साहित्यिक कृति है। राजस्थानी कहानियों के इस संग्रह में कुल तेरह कहानियाँ संकलित हैं। हर कहानी में समाज द्वारा अनुभूत किसी न किसी सत्य का उद्घाटन हुआ है। एक कहानीकार के रूप में विचार करें तो, कहानीकार अपनी प्रत्येक कहानी में समाज के किसी यथार्थ को उकेरने की कोशिश करता है तथा उसमें छिपे मानवीय मूल्यों को उभारकर पाठक के समक्ष रखने का प्रयास करता है। इस लेखकीय कर्म से एक और जहाँ साहित्यिक भण्डार में अभिवृद्धि होती है, वहीं जीवन-मूल्यों का खजाना भी कहानी के कथानक के माध्यम से पाठक तक पहुँचता है। राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर' की इन कहानियों को पढ़ते हुए एक सहृदय पाठक को ऐसा लगता है मानो वह सब उसके ही इर्द-गिर्द घटित हो रहा है।

संग्रह की पहली शीर्षक-कहानी 'अदीठ डोर' में आज के युग के तेजी से बदलते सामाजिक यथार्थ को कलमकार ने उकेरने की कोशिश की है। रंजीता और संध्या दोनों सहेलियों का मेलजोल शनैः-शनैः प्रेम का रूप लेता है। यही प्रेम, परवान चढ़ते हुए आगे चलकर समलैंगिक विवाह के रूप में सामने आता है। समाज कभी भी इस प्रकार के अप्राकृतिक विवाह के पक्ष में नहीं रहा है। रंजीता और संध्या का यह बन्धन निश्चय ही समाज के समक्ष एक ज्वलंत प्रश्न खड़ा करता है। कहानीकार ने वर्तमान समय के उभरते इस नवीन सामाजिक मूल्य को इस कहानी के माध्यम से उठाने का प्रयास किया है। 'मझधार' और 'भरमजाळ' नामक दोनों कहानियों में प्रेम के अलग-अलग स्वरूप देखने को मिलते हैं। 'मझधार' की नायिका शिवांगी, मोहित से प्रेम करते हुए यह तक भूल जाती है कि वह दो बच्चों की माँ है। सहकर्मी मोहित से प्यार करते हुए वह सब कुछ छोड़कर मोहित के साथ घर से भाग निकलती है, किन्तु उसके अंतस में एक द्वन्द्व चल रहा है। बस-यात्रा के दौरान अपने बच्चों की याद करके यह असहज हो उठती है और अन्ततः वे दोनों अगले बस-स्टेण्ड पर उतर कर घर लौट आते हैं। प्रणय और ममता की जंग में ममता जीत जाती है।

'भरमजाळ' कहानी का नायक सुरेश, सहकर्मी अध्यापिका मेघना के कला-प्रेम को दैहिक प्रेम समझते हुए मेघना को स्पर्श करने की भूल कर बैठता है। मेघना की तत्क्षण प्रतिक्रिया और उसके व्यवहार की वास्तविकता को समझने के बाद सुरेश को आत्मग्लानि होती है, वह क्षमायाचना के साथ गहरे पश्चाताप में डूब जाता है। 'चिंत्या-फिकर' कहानी का नायक हरिप्रसाद अपने बेटे-बहू के व्यवहार से गलतफहमी पाले रहता है। वह तरह-तरह की दुश्चिन्ताओं से घिरा है। एक दिन, कोरोना त्रासदी से पीड़ित मजदूरों की दुर्दशा में बेटे-बहू को मजदूरों के लिए भोजन की व्यवस्था करते देख पिता हरिप्रसाद आश्वस्त होता है कि बेटे-बहू में दया, करुणा और संवेदनशीलता है अर्थात, अनुकूल परिस्थिति आती है तो व्यक्ति में अपेक्षित व्यवहार दिखाई दे जाते हैं। 'अेक पोचौ सम्पादक' कहानी में राजकीय कार्यालयों की कार्य-शैली पर करारा व्यंग्य किया गया है। नाम और प्रसिद्धि के चक्कर में लोग किस हद तक गिर जाते हैं, इस तथ्य को उजागर करती यह कहानी सबल बनी है, किन्तु कहानी के आखिर में सम्पादक महेश द्वारा अपना नाम गायब देखकर स्याही लाना और कलेक्टर आदि उपस्थित लोगों पर फैंककर अपनी भड़ास निकालना नाटकीय सा लगता है। एक लिपिक द्वारा इस तरह का दुस्साहस करना लेखक की मंशा तो हो सकती है, किन्तु यथार्थ में ऐसा किया जाना विरल ही है।

'बाइज्जत बरी' का नायक शिक्षक रामरिख विक्रमपुरा गाँव की कटु स्मृतियों को लिए अपने ही शिष्य सुनील से यकस्मात् मिल जाता है। अपने नाम के साथ लगी कालिख के कारण शिक्षक का व्यक्तित्व ही बदल गया था। शिष्य के परिवार ने ही रामरिख का चरित्रहनन किया था। बरसों बाद सुनील से ही उसके परिवार द्वारा रचे प्रपंच की हकीकत सुनता है। सारा वृतान्त सुनकर अपने पर लगे झूठे इल्जाम को हटता देखकर रामरिख अपने आप को बाइज्जत बरी महसूस करता है। जीवन में किफायत से चलने वाले मनुष्य की कहानी है, 'किफायत'। मोलभाव की आदत से मजबूर व्यक्ति के सामने अपने बचपन का चलचित्र चल पड़ता है और वह कबाड़ी के बच्चे को मुफ्त में ही साइकिल दे देता है। यह भाव परिवर्तन की अच्छी कहानी है। 'लूंठो करजौ' के नायक नेतराम को बेटी के विवाह के लिए कर्ज चाहिए। कर्ज के लिए केवल अपने सेठ पर आशा टिकी है, जो सेठ द्वारा इन्कार कर देने पर टूट जाती है। नेतराम सेठ से विमुख हो जाता है। तभी एक दिन सेठ के पुत्र अनिल का नेतराम की पत्नी अनिता से संयोगवश मिलना, अनिल-अनिता का स्कूली सहपाठी होना, अनिल द्वारा पचास हजार रुपयों की राशि उधार देना। एक सुखद किन्तु नाटकीय दृश्य उपस्थित करता है। छेकड़ली गोठ, प्रास्चित, गुरु-दिछणा आदि अन्य कहानियाँ भी पठनीय हैं।

इस संग्रह की सभी कहानियाँ अपनी बुनावट कथानक, संवाद व देशकाल के अनुसार श्रेष्ठ तथा पाठक के चित्त को झंकझोरने वाली हैं। कहानीकार राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर' का यह संग्रह निश्चय ही पाठकों के बीच सराहा जाएगा, ऐसा विश्वास किया जा सकता है। कहानियों की भाषा भी पात्र एवं संवादों के अनुकूल है तथा पाठकों को कहीं भी उसमें अटकाव महसूस नहीं होता। सभी कहानियाँ पाठक को प्रारम्भ से अन्त तक बाँधे रखने में सफल होंगी, ऐसी आशा है।

समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
वार्ड नं. 9, मालासी मन्दिर के पास,
तारानगर (चूरू)
**मो. 9413888209**

Rajasthan Education Department

# शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

**-व. संपादक**

## विद्यालय में बदलाव की बयार-भामाशाहों का सहयोग

**सिरोही–** सिरोही जिले के आबूरोड तहसील के उच्च माध्यमिक विद्यालय गाँधीनगर में भामाशाह के सहयोग से बदलाव की बयार संभव हुई है। स्थानीय विद्यालय की संस्थाप्रधान श्रीमती मिथलेश बैरवा के अनुसार नवक्रमोन्नत विद्यालय में आधारभूत समस्याओं के कारण शिक्षण गतिविधियाँ काफी प्रभावित हो रही थी। जिसके लिए विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति की मासिक बैठक में इन समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया और त्वरित निराकरण का फैसला लिया गया। सर्वप्रथम विद्यालय उच्च माध्यमिक विद्यालय में नवक्रमोन्नत विद्यालय होने से विद्यालय के ऑनलाइन कार्य व अन्य कार्य हेतु कम्प्यूटर व प्रिंटर की सख्त आवश्यकता थी। विद्यालय की संस्थाप्रधान श्रीमती मिथलेश बैरवा व कनिष्ठ सहायक श्री हितेन्द्रसिंह गुर्जर के संपर्क करने पर भामाशाह सुश्री पल्लवी टांक ने विद्यालय को एक कम्प्यूटर सेट व एक प्रिंटर भेंट किया जिसकी अनुमानित लागत 50,000/- है। संस्थाप्रधान ने भामाशाह का आभार प्रकट किया। इसी क्रम में विद्यालय के रंग-रोगन व बच्चों के फर्नीचर हेतु प्रयास जारी है।

## विद्यालय में पहली बार इंदिरा प्रियदर्शिनी छात्रा संसद का गठन

**नागौर:** राउमावि. बासनी, बेहलीम, नागौर में 7 दिसम्बर 22 को इंदिरा प्रियदर्शिनी छात्रा संसद का गठन किया गया। प्रभारी फरजाना बानो ने बताया कि प्रधानाचार्य पद पर कार्यग्रहण करते ही शिवशंकर व्यास ने सहशैक्षिक गतिविधियों में छात्राओं की रुचि जगाने के लिए ये नवाचार का प्रयोग किया है। विद्यालय में ये पहली बार इस नाम से छात्रा संसद बनी है। सर्वसम्मति से बनी कार्यकारिणी अध्यक्ष साजिया क्लास-12 सचिव पिंकी क्लास-12, उपाध्यक्ष सादिया क्लास-12, नादिया, बुशरा, रुकैया, निकिता, तरन्नुम सभी क्लास-12, सयुंक्त सचिव पूजा, सुमन। नवनिर्वाचित अध्यक्ष साजिया और प्रभारी फरजाना बानो ने कहा जल्दी ही मंत्रिमंडल का विस्तार कर शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया जाएगा। व्याख्याता असगर अली ने कहा कि ऐसे नव प्रयोग से बच्चों-बच्चियों में नव ऊर्जा का संचार होता है। प्रधानाचार्य शिवशंकर व्यास ने बताया कि इससे पूर्व कांकरिया स्कूल में भी हमने इस नाम से छात्रा संसद का गठन किया था। उन्होंने कहा कि बालिकाओं में उत्साह का संचार करने, उनमें सेवा भावना, दायित्वों का निर्वहन करने सबसे बड़ी बात नेतृत्व गुण विकसित करने के ऐसे नव प्रयोग यहाँ पहली बार किया गया। विभिन्न मंत्रिमंडल प्रभार के लिए बच्चियों ने स्वयं ने आगे आकर कहा कि हम जल, अनुशासन, खेल, मंत्रालय कार्य करेंगे। जल्दी ही नए साल में छात्रों का भी लोकतांत्रिक विधि से छात्र संसद का गठन किया जाएगा।

## मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना का शुभारंभ

**झुंझुनूं :** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाडेट (झुंझुनूं) में कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को प्रधानाचार्य महावीर प्रसाद मीना, सरपंच यज्ञपाल व उप सरपंच राजपाल ने दूध पिला कर मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना का शुभारंभ किया इस अवसर पर प्रधानाचार्य महावीर प्रसाद मीना बताया कि राज्य सरकार की कल्याणकारी योजना है इससे विद्यार्थियों को कुपोषण से निजात मिलेगी व स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

## विद्यालय को मिले सीसीटीवी कैमरे

**झुंझुनूं :** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाडेट (झुंझुनूं) में 16 सीसी टीवी कैमरा का उद्घाटन व राजस्थान के शिक्षा की ओर बढ़ते कदम के पीटीएम का आयोजन किया गया इस अवसर पर प्रधानाचार्य महावीर प्रसाद मीना, सरपंच यज्ञपाल सिंह, लक्ष्मण सिंह, धन्नाराम बेनीवाल व

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

माधाराम सारण ने फीता काट कर सीसीटीवी कैमरों का उद्घाटन किया। सभी कक्षा कक्ष में 16 कैमरे जन सहयोग से लगाए गए पीटीएम बैठक में आए अभिभावकों को राजस्थान के शिक्षा की ओर बढ़ते कदम द्वारा आयोजित परीक्षा का रिपोर्ट कार्ड विद्यार्थियों के अभिभावकों को वितरित किए।

## जंबूरी प्रोमो गीत का कुंचौली में नो बैग डे पर हुआ गायन

**कुंभलगढ़:** राजसमंद जिला परिक्षेत्र के समीपवर्ती राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली में शनिवार को 'नो बेग डे' पर जंबूरी प्रोमो गीत पाली धरा पर लाग्यो मेलो..... हम सब हो जाएँ तैयार ... आई जंबूरी शांति प्रगति का संदेश लाई जम्बूरी गीत का स्काउट्स एवं विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में गायन किया गया। कार्यवाहक प्रधानाचार्य उमेश कुमार सर्वा ने बताया कि 18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जंबूरी में स्थानीय विद्यालय के 18 स्काउट्स मंडल गतिविधि प्रभारी राकेश टांक, दल्लाराम भील व खेमशंकर भील के नेतृत्व में रोहट, पाली में राजस्थान प्रदेश का 28 दिसम्बर 2022 से प्रतिनिधित्व करेंगे। सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट व शारीरिक शिक्षक राकेश टांक ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में 66 वर्ष बाद होने वाली 18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जंबूरी प्रोमो गीत का आज पूरे प्रदेश में 'नो बैग डे' पर गायन किया गया। इसी शृंखला में कुंचौली, स्थानीय संघ- कुंभलगढ़ में सभी स्काउट्स, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने जंबूरी प्रोमो गीत का गायन किया। इसका उद्देश्य जंबूरी का संदेश प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाना है। पाली और जोधपुर सीमा पर बसे रोहट के नजदीक निबली ब्राह्मण गाँव में 18वीं राष्ट्रीय जम्बुरी का आयोजन 4 जनवरी से 10 जनवरी 2022 तक होगा जिसमें देश विदेश से 35 हजार स्काउट गाइड हिस्सा लेंगे। इस जंबूरी में स्काउट विभाग, गाइड विभाग व संयुक्त रूप से कई प्रतियोगिताओं का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर होगा। इस अवसर पर कुंचौली में जंबूरी पोस्टर का भी विमोचन विद्यालय में किया गया। राष्ट्रीय जम्बुरी में राजस्थान प्रदेश का परचम लहराने के लिए जनजाति क्षेत्र के कुंचौली ग्राम से अट्ठारह स्काउट पूर्व तैयारी के लिए 28 दिसंबर 2022 को रोहट जंबूरी मैदान पर पहुँचेंगे। इस अवसर पर स्टाफ के भगवतीलाल आमेटा, पुष्पा शर्मा, धनराज भील, अंशुल जोशी, दिलीप कुमार मेघवाल, गोपाल लाल भील, गिरजा शंकर भील, सुरज्ञान मीणा, दोलत राम भील उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन शारीरिक शिक्षक राकेश टांक ने किया।

## यूनिफॉर्म प्राप्त कर बच्चों के चेहरे खिले

**चित्तौड़गढ़ :** राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को यूनिफॉर्म के लिए कपड़ा दिया गया। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय

ठिकरिया के अध्यापक संजय कुमार जैन ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक पढ़ने वाले समस्त छात्र छात्राओं को मुख्यमंत्री निःशुल्क यूनिफॉर्म वितरण योजना के तहत यूनिफॉर्म वितरित की गई। कक्षा वार अलग अलग नाप में कपड़ा दिया गया। कपड़ा पाकर छोटे-छोटे बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे। अब बच्चे एक जैसी यूनिफॉर्म में विद्यालय आएँगे। जिससे उन्हें अलग से पहचाना जा सकेगा कि यह राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले कक्षा 1 से 8 तक के छात्र-छात्राएँ है । बच्चों ने बताया कि उन्होंने यह वस्त्र सिलने के लिए भी दे दिए हैं, जो जल्दी ही सिलकर आ जाएँगे। ड्रेस के 2 सेट दिए गए है, इसके लिए उन्हें 200 रुपये भी दिए जाएँगे जो सीधे उनके खातों में आएँगे। मंगलवार को बच्चों को बाल गोपाल योजना के तहत दूध का भी वितरण किया गया। जिसे बच्चों ने चाव के साथ पिया। यूनिफॉर्म वितरण के समय प्रधानाध्यापक श्री राजकुमार खटीक, समस्त स्टाफ, श्री पृथ्वीराज जी डांगी, अध्यक्ष छोगालाल डाँगी व अभिभावक भी उपस्थित रहे जिनके हाथों से वस्त्र वितरण हुआ।

## यूनिफॉर्म एवं दूध वितरण पाकर खिले चेहरे

**बूँदी :** खटकड़ पीईईओ क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा में छात्र छात्राओं को निःशुल्क यूनिफार्म वितरण की गई। संस्थाप्रधान जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री बजट घोषणा के अनुसार विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं को यूनिफॉर्म के दो सेट वितरित किए गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपसरपंच दीपक गोस्वामी, विशिष्ट अतिथि एसएमसी सदस्य हंसा मीणा, अध्यापक परशुराम मेघवाल, महेंद्र स्वामी, राकेश कुमार, सुनीता एवं अभिभावक तस्वीर बाई आदि के द्वारा यूनिफॉर्म वितरण की गई एवं छात्र छात्राओं को बाल गोपाल योजना अंतर्गत दूध वितरित किया गया। संस्थाप्रधान व अभिभावकों द्वारा दूध की गुणवत्ता की जाँच की गई। सभी विद्यार्थी यूनिफॉर्म मिलने से बहुत खुश नजर आए वही दूध पीने के बाद छात्रों में उत्साह का माहौल बना रहा।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

## ज्ञान संकल्प पोर्टल

# भामाशाहों ने बदला विद्यालय की तस्वीर

## राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सात्यूँ, चूरू

❒ राकेश कस्वां

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सात्यूँ, ब्लाक-तारानगर (चूरू)- सन् 1950 में प्राथमिक विद्यालय के रूप में स्थापित हुआ। सन्-1999 में उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में क्रमोन्नत हुआ। ग्रामीणजन, अभिभावक और विद्यालय स्टाफ के प्रयासों से सत्र 2017-18 से लगातार परीक्षा परिणाम उन्नयन हुआ एवं इसके फलस्वरूप नामांकन में आशातीत वृद्धि हुई है। खेल क्षेत्र में भी इस विद्यालय के छात्र-छात्राएँ राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर भाग लेकर विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

**भामाशाहों ने बदली तस्वीर-** संस्थाप्रधान ने पूरी लगन और निष्ठा से स्टाफ के साथ मिलकर ग्रामवासियों एवं भामाशाहों से सम्पर्क किया। बस एक आह्वान की ही आवश्यकता थी और कारवां जुड़ता गया। गाँव के हर घर से दानवीर आगे आए और ज्ञान संकल्प पोर्टल व जनसहयोग से आर्थिक सहायता दी गयी। विद्यालय के संस्थाप्रधान व स्टाफ के अनवरत भामाशाहों से सम्पर्क के कारण मार्च 2021 से अब तक विद्यालय लगभग 46,70,000 रुपये का आर्थिक सहयोग प्राप्त हो चुका है। उक्त सम्पूर्ण राशि ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में जमा करवाई जा चुकी है। परिणाम ये हुआ कि ज्ञान संकल्प पोर्टल और जनसहयोग से राशि एकत्रित कर मुख्यमंत्री जनसहभागिता से यह स्तुत्य कार्य आरम्भ करवाया।

**सहशैक्षिक गतिविधियाँ -** विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अध्ययन-अध्यापन के कार्य के साथ-साथ विद्यालय में सत्र पर्यन्त नियमित रूप से सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें खेलकूद प्रतियोगिता, नृत्य, गायन, निबन्ध, पोस्टर, मॉडल, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन किया जाता है। पीईईओ स्तर पर होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी छात्र-छात्राओं द्वारा भाग लिया जाता है, जिससे

विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आता है एवं उनमें आत्मबल को भी बढ़ावा मिलता है। विद्यालय की छात्र संसद द्वारा समय-समय पर विज्ञान, लोक क्षेत्र एवं लोक कला से जुड़े कार्यक्रम किए जाते हैं जो स्टाफ एवं विद्यार्थियों का सराहनीय कदम है।

**विभिन्न भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न परिवेश:-** भामाशाहों द्वारा बनवाए गए इस भवन में हर तरह की सुख-सुविधा एवं संसाधन हैं जो कि एक आदर्श विद्यालय में होने चाहिए। अतिरिक्त 9 कक्षा-कक्ष, पानी का कुण्ड, सीढ़ियाँ, स्टेज और बास्केटबॉल कोर्ट, आधुनिक पेयजल टंकी, जल संग्रहण कुण्ड, छात्रों के लिए नया फर्नीचर, खेल उपकरण, ग्रीन बोर्ड, नए इलेक्ट्रोनिक उपकरण, पंखे, अलमारी, वाटर कूलर के साथ कक्षा-कक्ष मेजर रिपेयर के कार्य करवाए गए हैं।

**विद्यालय नामांकन:-** सत्र 2012-13 से संस्थाप्रधान के नेतृत्व में स्टाफ बैठक लेकर यह नीति बनाई गई की नामांकन बढ़ाने के लिए घर-घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क कर विद्यालय में प्रवेश दिलवाने के लिए निवेदन करने की बजाय विद्यालय में शैक्षणिक वातावरण को आधुनिक बनाते हुए पूर्णत: छात्र हित में अनुकूलित किया जाए और बच्चों को अध्यापन कार्य प्रभावशाली तरीके से करवाते हुए भयमुक्त वातावरण प्रदान किया जाए। सभी अध्यापकगण ने विद्यालय विकास में पूर्ण योगदान दिया, इसके परिणामस्वरूप जो नामांकन सत्र- 2018-19 में 465 था जो क्रमश: 2019-20 में 551, 2020-21 में 615 और 2021-22 में 667 हो गया। इस सत्र में नामांकन का लक्ष्य 1000 रखा गया है। नामांकन वृद्धि में विषय-अध्यापकों द्वारा भी अतिरिक्त कक्षाएँ लगाकर कमजोर विद्यार्थियों को शिक्षण कार्य करवाया गया। इससे गाँव में एक अच्छा संदेश गया और अभिभावकगण स्वत: ही अपने बच्चों को इस विद्यालय में प्रवेश दिलाने लगे।

**आर्थिक जनसहयोग:-** जनवरी-2021 में तत्कालीन संस्थाप्रधान के नेतृत्व में ग्रामवासियों के सहयोग से 100 व्यक्तियों की बैठक में सर्वसम्मति से 20 सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया। ये 20 मुख्य व्यक्ति इस प्रकार के चुने गए जो संस्था के भौतिक विकास के लिए पूरी तरह से समय दे सकें। इसके बाद संस्थाप्रधान ने बढ़ते नामांकन को देखते हुए विद्यालय में 02 कक्षा-कक्षों के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने की अपील करते हुए मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना (40-60) के बारे में जानकारी दी। प्रथम प्रयास में 8,00000 (आठ लाख रुपये) जनसहयोग

Rajasthan Education Department

इकट्ठा करने का लक्ष्य ग्रामीणों के सामने रखा। 1,00000 (एक लाख रुपये) विद्यालय स्टाफ की तरफ से दिया गया। ग्रामवासी इस सहयोग से प्रभावित हुए और उसी दिन एक भामाशाह ने विद्यालय में आधुनिक पेयजल टंकी निर्माण के लिए 2,11000 (दो लाख ग्यारह हजार रुपये) देने की घोषणा की।

शीघ्र ही तीन बड़े भामाशाहों ने 11,00,000 (ग्यारह लाख रुपये) देने की घोषणा की। इसे देखकर समिति में एक नई ऊर्जा पैदा हुई और उसने लक्ष्य को आठ लाख से बढ़ाकर बीस लाख कर दिया। दो माह के अथक प्रयास से और पूरे ग्रामीण क्षेत्र में गर्मी के मौसम में घूम-घूम कर कुल राशि 46,70,000/- आर्थिक सहयोग के रूप में प्राप्त की गई। इस कार्य में ग्रामवासियों को पूर्ण विश्वास दिलाया गया कि सम्पूर्ण आर्थिक जनसहयोग का लेखा-जोखा वैधानिक, पारदर्शी और विद्यालय विकास के हित में होगा।

उल्लेखित राशि में से 33,00,000/- ऐसी है जो कि गरीब, मजदूर और सामान्य कर्मचारीगण ने दान की है। गत सत्र में विद्यालय स्टाफ ने भी 5,00,000/- ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से दान किए हैं, इससे ग्रामवासियों को भी प्रेरणा मिली और शेष राशि उन्होंने दान की। सम्पूर्ण शैक्षिक एवं मंत्रालयिक स्टाफ का पूर्ण सहयोग रहा है। विद्यालय के भौतिक एवं शैक्षणिक कार्यों में समस्त कार्मिकों की भूमिका सराहनीय एवं सम्मान योग्य है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सात्यूँ,
चूरू (राज.)

## हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह-नवम्बर 2022 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

| S. No. | Donar Name | School Name | Block Name | District | Amount |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | TARACHAND CHOUDHARY | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHACHIWAD BADA (213121) | FATEHPUR | SIKAR | 474000 |
| 2 | MOOL CHAND MEEL | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LALASI (213222) | LAXMANGARH | SIKAR | 321000 |
| 3 | CA VIVEK CHOUDHARY LALASI | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LALASI (213222) | LAXMANGARH | SIKAR | 109000 |
| 4 | MUKESH KUMAR | SHAHEED DEPUTY COMMANDANT VIJAYPAL SINGH GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GAGADWAS (215234) | RAJGARH | CHURU | 90000 |
| 5 | SOHAN RAM POTALIYA | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BIJARASAR (419937) | SARDARSHAHAR | CHURU | 85670 |
| 6 | REVANT RAM POTALIYA | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BIJARASAR (419937) | SARDARSHAHAR | CHURU | 85670 |
| 7 | SHREE GANPATI SHIKSHAN AWAM SEVA SANSTHAN BAJOR SIKAR | GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL AMBEDKAR NAGAR SIKAR (503116) | PIPRALI | SIKAR | 75000 |
| 8 | RAJU DAS SWAMI | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BIJARASAR (419937) | SARDARSHAHAR | CHURU | 72000 |
| 9 | GANPAT RAM | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NIMBI KHURD (219800) | DEEDWANA | NAGAUR | 57100 |
| 10 | KHINYA RAM JANDU | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHABARIYANA (213424) | JAYAL | NAGAUR | 51000 |
| 11 | MUKESH PURI GOSWAMI | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PUROHIT KA BAS (213407) | PIPRALI | SIKAR | 51000 |
| 12 | KALU RAM | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHUDDI (215224) | RAJGARH | CHURU | 51000 |
| 13 | INDU BALA SHARMA | SON DEVI BANGUR GOVT. GIRLS SENIOR SECONDARY SCHOOL DIDWANA (219829) | DEEDWANA | NAGAUR | 51000 |
| 14 | RAJENDER PRASAD | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHUDDI (215224) | RAJGARH | CHURU | 51000 |
| 15 | SAVITA PRADEEP KABRA | MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL REWASA (492164) | PALSANA | SIKAR | 50000 |
| 16 | JAGDEESH PRASAD MEENA | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SIRSALI (212753) | BAMANWAS | SAWAI MADHOPUR | 50000 |
| 17 | BASANTI LAL SHARMA | GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHOLI (214821) | SUWANA | BHILWARA | 50000 |
| 18 | RAM CHANDRA ARYA | MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL SANJAY COLONI KANOER (400886) | BHINDER | UDAIPUR | 50000 |

Rajasthan Education Department

## ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–नवम्बर 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

| S. NO. | DISTRICT | TRANSACTION | AMOUNT |
|---|---|---|---|
| 1 | SIKAR | 56 | 1245180 |
| 2 | CHURU | 96 | 998219 |
| 3 | BANSWARA | 83 | 293498 |
| 4 | NAGAUR | 31 | 273520 |
| 5 | UDAIPUR | 23 | 179161 |
| 6 | SAWAIMADHOPUR | 8 | 146200 |
| 7 | KOTA | 87 | 145360 |
| 8 | JHUNJHUNU | 26 | 78700 |
| 9 | BHILWARA | 13 | 62512 |
| 10 | BARMER | 77 | 50312 |
| 11 | CHITTAURGARH | 11 | 41401 |
| 12 | HANUMANGARH | 55 | 34621 |
| 13 | BUNDI | 30 | 31720 |
| 14 | JAIPUR | 16 | 25501 |
| 15 | BHARATPUR | 5 | 21231 |
| 16 | JODHPUR | 12 | 18111 |
| 17 | JALOR | 155 | 12672 |
| 18 | AJMER | 55 | 11302 |
| 19 | SIROHI | 1 | 10000 |
| 20 | TONK | 7 | 8011 |
| 21 | BIKANER | 15 | 5735 |
| 22 | BARAN | 3 | 4301 |
| 23 | DUNGARPUR | 3 | 4300 |
| 24 | JAISALMER | 28 | 3849 |
| 25 | GANGANAGAR | 8 | 3821 |
| 26 | RAJSAMAND | 19 | 3491 |
| 27 | PALI | 6 | 3430 |
| 28 | PRATAPGARH | 6 | 3150 |
| 29 | ALWAR | 16 | 1802 |
| 30 | DAUSA | 2 | 1500 |
| 31 | JHALAWAR | 2 | 1500 |
| 32 | DHAULPUR | 2 | 700 |
| 33 | KARAULI | 5 | 300 |
| | Total | 962 | 3725111 |

## ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थाओं/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Projects Submit किए गए। माह नवम्बर 2022 में अग्रांकित अनुसार **13 करोड़ 90 लाख से अधिक की लागत के कुल 47 Projects** स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई हैं–

| क्र. सं. | कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम | प्रोजेक्ट संख्या | कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण | अनुमानित लागत/व्यय (लाख में) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | श्री अरविंद कुमार अग्रवाल | 1220 | महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय प्रागपुरा, पावटा, जयपुर में मौजूदा आरओ प्लांट का संचालन और रखरखाव | 1.20 |
| 2 | चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल लिमिटेड | 1187, 1191, 1192, 1194 | कोटा, बारां जिले के 70 राजकीय विद्यालयों में विविध सुविधाओं के विकास कार्य | 103.64 |
| 3 | एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड | 1215, 1219 | महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय लेटकाबास, शाहपुरा, जयपुर में 30 स्टूल एवं टेबल सेट, महात्मा गाँधी राबाउप्रावि. धावली, शाहपुरा, जयपुर में 1 वाटरकुलर हेतु। | 0.95 |
| 4 | स्वधर्म फाउण्डेशन | 1216, 1217 | राउप्रा संस्कृत वि. प्रताप नगर सांगानेर जयपुर में कक्षा कक्ष, शौचालय, पीने का पानी, किचन शेड, फर्नीचर आदि एवं राउमावि. सुखपुरिया, सांगानेर सिटी, जयपुर में छात्र–छात्राओं के पीने का पानी की व्यवस्था एवं शौचालय–मूत्रालय के निर्माण हेतु | 101.25 |
| 5 | श्री पुखराज | 1214 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंडोलीनगर, जसवंतपुरा, जालोर में अतिरिक्त कक्षा–कक्ष का निर्माण कार्य | 21.10 |
| 6 | श्री शांतिदेवी सेवा समिति | 1213 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंडोलीनगर, जसवंतपुरा, जालोर में अतिरिक्त कक्षा–कक्ष का निर्माण कार्य | 21.10 |
| 7 | आर एन नोवल फाउण्डेशन | 1211 | राजकीय उच्च प्राथमिक गडारी, किशनगढ रेनवाल, जयपुर में पीने का पानी, किचन शेड, एचएम रूम, छात्र–छात्राओं का शौचालय, खेल मैदान का विकास, वर्षा जल संचयन, पुस्तकालय कक्ष, प्रमुख मरम्मत, बैडमिंटन कोर्ट, स्टाफ रूम, सीसीटीवी व अन्य सुरक्षा उपकरण का निर्माण कार्य | 64.93 |
| 8 | श्री आचार्य भिक्षु जन्म स्थली समिति | 1210 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कांटलिया, मारवाड जंक्शन, पाली में भवन का निर्माण कार्य | 250.00 |
| 9 | मोजेक इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड | 1207, 1208 | राबाउमावि. बालावास, बानसूर, अलवर में पेयजल, छात्र–छात्राओं का शौचालय, वर्षा जल संचयन, कमरों का नवीनीकरण एवं मरम्मत तथा राउप्रावि. सोटका, किशनगढ बास, अलवर में भवन, कक्षा कक्ष, शौचालय, पेयजल, चारदीवारी, खेल मैदान, कमरों का नवीनीकरण हेतु | 30.88 |
| 10 | श्री रावल सिंह | 1201 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बावरी कला, फलौदी, जोधपुर में में पीने के पानी की व्यवस्था का निर्माण कार्य | 5.00 |
| 11 | श्री शांतिलाल एचयूएफ | 1205 | महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय समदड़ी, स्टेशन, समदड़ी, बाड़मेर में कक्षा–कक्ष | 40.00 |

Rajasthan Education Department

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | (1-8), का निर्माण कार्य | |
| 12 | एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड | 1203, 1204 | राबाउमावि. प्रतापगढ़, थानागाजी, अलवर में कुर्सी व प्रिंटर हेतु तथा महात्मा गाँधी राजकीयविद्यालय कालावतियों का मोहल्ला, अमरसर, शाहरपुरा, जयपुर में कम्प्यूटर व प्रिंट हेतु | 0.87 |
| 13 | श्री रामरतन चौधरी | 1200 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गज्जु, मुण्डवा, नागौर में वर्षा जल संचयन हेतु टैंक का निर्माण कार्य | 2.20 |
| 14 | पॉवर ग्रिड आफ कॉपोरेशन | 1198 | बीकानेर जिले के 5 राजकीय विद्यालयों में अन्य कमरे, कंप्यूटर कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, फर्नीचर का निर्माण कार्य | 164.00 |
| 15 | श्रीमति यशोदा देवी | 1197 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मावल, आबू रोड, सिरोही अतिरिक्त कक्षा-कक्ष का निर्माण कार्य | 07.00 |
| 16 | श्री विक्रम सिंह चौधरी | 1193 | राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रणजीतपुरा, मुण्डवा, झुंझुनूं में प्लेटफार्म पर टीन शेड का निर्माण कार्य | 07.00 |
| 17 | श्री रूपा राम | 1180 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निम्बानियों की धाणी, बायतु, बाड़मेर में बिजली की व्यवस्था | 2.50 |
| 18 | श्री गुलाबचंद जगेतिया | 1171 | राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय रूपाहेली कलां, हरड़ा, भीलवाड़ा में भवन, कक्षा-कक्ष (1-8), छात्र-छात्राओं का शौचालय, बिजली की फिटिंग, पेयजल, एचएम कक्ष, रैंप, दिव्यांग शौचालय, पेयजल व्यवस्था, अन्य कमरे, कंप्यूटर कक्ष, पुस्तकालय कक्ष का निर्माण कार्य | 107.00 |
| 19 | श्री मनोज कुमार जैन | 1153 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मोरक गाँव, खैराबाद, कोटा में छात्रा शौचालय का निर्माण कार्य | 2.50 |
| 20 | श्री राम चौधरी | 1133 | राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बड़ी खाटू, जायल, नागौर में अतिरिक्त कक्षा-कक्ष का निर्माण कार्य | 5.02 |
| 21 | केवीएसएस खींवसर | 1132 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लालावास, खींवसर, नागौर में सीसीटीवी एवं अन्य सुरक्षा उपकरण की सुविधा हेतु | 1.52 |
| 22 | श्री मनोहर लाल मेवारा | 1095 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लीकी, आमेट, राजसमंद में पानी पीने की सुविधा | 2.91 |
| 23 | जेआरटीटी फाउण्डेशन | 1091 | महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, कलवार झोटवाड़ा, जयपुर में कक्षा-कक्ष, छात्रा-छात्राओं के शौचालय एवं पीने के पानी की सुविधा | 31.00 |
| 24 | एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड | 968, 969, 970, 972 | जयपुर जिले के 23 राजकीय विद्यालयों में स्टूल टेबल, कंप्यूटर, सेट और प्रिंटर व पेड़-पौधों, शौचालय-मूत्रालय निर्माण तथा राउमावि. ईसला, थानागाजी, अलवर वाटर कूलर हेतु। | 11.84 |
| 25 | जयपुर पिंक सिटी राउण्ड टेबल | 1014 | महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, गाँधीनगर 02, जयपुर वेस्ट, जयपुर में कक्षा-कक्ष का निर्माण कार्य | 38.00 |
| 26 | श्री नन्दा राम | 1009 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुकरोद, मकराना, नागौर मे कक्षा-कक्षों का जीर्णोद्धार का कार्य | 1.00 |
| 27 | श्री अर्जुन राम | 1008 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुकरोद, मकराना, नागौर मे विद्यालय के मुख्य द्वार का निर्माण कार्य | 4.50 |
| 28 | श्री तिला राम | 985 | राउमावि. पोसाना, सायला, जालोर में पीने के पानी सुविधा हेतु | 2.50 |
| 29 | श्री मोटाराम बुनकर | 981 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोमासर, खींवसर, नागौर में कक्षा-कक्षों का निर्माण कार्य | 6.00 |
| 30 | एसएम सहगल फाउण्डेशन | 960, 961, 962, 963, 971 | राउमावि बल्लाना; लिवारी, जतियाना, रूंध सिरावास, साहोड़ी, ब्लॉक उमरैन, जिला अलवर में शौचालय, पीने का पानी, चारदीवारी, फर्नीचर, मरम्मत व नवीनीकरण व रैम्प, बिजली फिटिंग, कम्प्यूटर लैब/उपकरण, सोलर पेनल आदि कार्यों हेतु | 96.01 |
| 31 | श्री छत्र शांति चेरिटैबल संस्थान दादा | 957 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दादल, सायला, जालोर में भवन, पानी पीने की सुविधा, क्लास रूम (1-8), छात्र-छात्राओं के शौचालय, बिजली की सुविधा / बिजली की फिटिंग, पीने का पानी, बाउंड्री वॉल, किचन शेड, एचएम रूम, रैंप, खेल के मैदान का विकास, वर्षा जल संचयन, अन्य कमरे, कंप्यूटर कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, विज्ञापन आदि का कार्य | 250.00 |
| 32 | श्री रतन लाल कंवर लाल पाटनी फाउंडेशन | 952 | महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, मानसरोवर, जयपुर वेस्ट, जयपुर के विद्यालय के मैदान में ब्लॉक फिटिंग का कार्य | 2.00 |
| 43 | श्री आत्माराम टाक | 948 | राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गज्जु, मुंडवा, नागौर में अन्य कक्षा-कक्ष का निर्माण कार्य | 11.00 |
| | | | **कुल राशि** | **1390.46** |



शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी, 2023 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

# बाल शिविरा : जनवरी, 2023

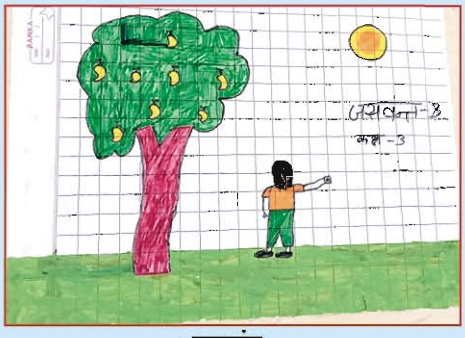

जसवंत,
राबाउप्रावि. सराणा, जालोर

सुमन प्रजापत,
राउमावि. कांसेड़ा, नागौर

सपना कुमावत
राउमावि. कांसेड़ा, नागौर

खुशबू कंवर, श्रीमती राधा राउप्रावि.
बींजवाड़िया, जोधपुर

कृष्णा कुमारी
राबाउप्रावि. सराणा, जालौर

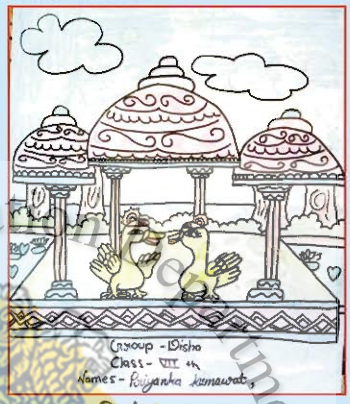


प्रियंका कुमावत
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

अर्णव ओझा

सरिता कुमावत
राउमावि. कांसेड़ा, नागौर

अंजली मेघवाल,
राउमावि. कांसेड़ा, नागौर

किरण कुमावत
राउमावि. कांसेड़ा, नागौर

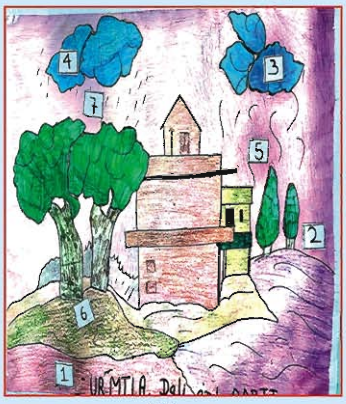


उर्मिला,
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
खारी चारणान, बीकानेर

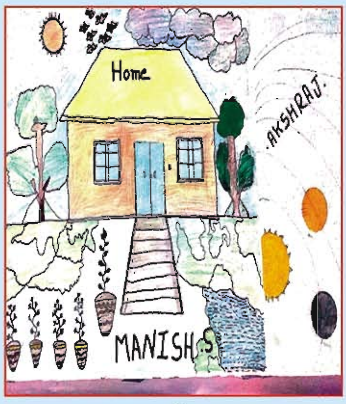


मनीष
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
खारी चारणान, बीकानेर

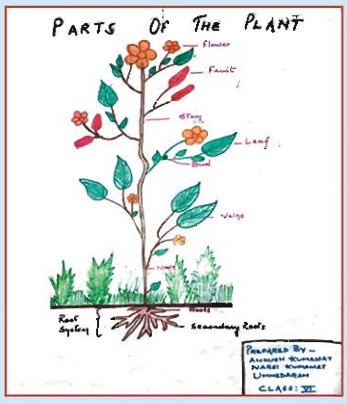


उम्मेदाराम,
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
खारी चारणान, बीकानेर

दिव्या कटारिया
श्रीमती राधा राउप्रावि.
बींजवाड़िया,जोधपुर

# राज्य स्तरीय कला उत्सव समारोह - 2022 की झलकियाँ

(आयोजन स्थल-राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय किसान कन्या, जोधपुर)

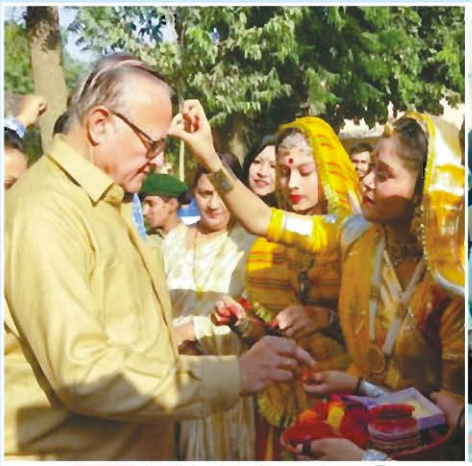

Rajasthan Education Department

## श्री गौरव अग्रवाल निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय खारी चारणान, बीकानेर का अवलोकन व संबलन

सत्यमेव जयते

# चित्र वीथिका : जनवरी, 2023

श्री गाँधी बाल निकेतन रतनगढ़ की इंटरेक्टिव बोर्ड परियोजना के उद्घाटन के अवसर पर निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री गौरव अग्रवाल, चूरू जिलाधीश श्री सिद्धार्थ सिहाग, उपखण्ड अधिकारी रतनगढ़ डॉ. अभिलाषा चौधरी एवं अन्य अधिकारीगण

राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय भीनासर, बीकानेर में आयोजित
66वीं राज्यस्तरीय वेट व पावर लिफ्टिंग स्कूली खेल-कूद प्रतियोगिता की झलकियाँ

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

# करणी रा.उ.मा.वि. देशनोक बीकानेर में आयोजित 55वीं राज्यस्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2022-23 की झलकियाँ























Rajasthan Education Department

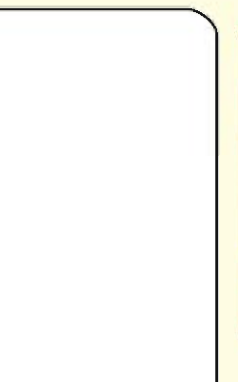

मुख्य सचिव महोदया द्वारा राउप्रावि सतभाई रींगस, सीकर में नो बैग डे के तहत आयोजित विद्यार्थियों की गतिविधियों का अवलोकन